अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	स्नातक स्तर	सीनियर सैकण्डरी स्तर	पृष्ठ संख्या
1.	स्थापत्य कला	✓	✓	1 – 39
2.	चित्रकला	✓	✓	40 – 48
3.	लोक संगीत	✓	✓	49 – 53
4.	वाद्य यंत्र	✗	✓	54 – 58
5.	लोक नृत्य एवं लोक नाटक	✓	✓	59 – 72
6.	प्रमुख धार्मिक पंथ-संत संप्रदाय	✓	✓	73 – 84
7.	लोक देवता	✓	✓	85 – 92
8.	आभूषण एवं वेशभूषा	✓	✓	93 – 99
9.	मेले एवं त्योहार	✓	✓	100 – 109
10.	रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ	✓	✓	110 –115
11.	भाषा, बोलियाँ एवं साहित्य	✓	✓	116 – 143
12.	कला और संस्कृति के क्षेत्र में प्रमुख व्यक्तित्व	✗	✓	144 – 149
13.	CET 10+2 एवं स्नातक स्तर विगत वर्षों के प्रश्न 2024			150 – 152
14.	CET 10+2 एवं स्नातक स्तर विगत वर्षों के प्रश्न 2023			153 - 157

❑ ❑ ❑ ❑

दुर्ग

◈ शुक्रनीति सार में राज्य के सात अंग माने गए है जिनमें से एक दुर्ग है।

राज्य के 7 अंग -

(1) राजा
(2) मंत्री/आमात्य
(3) गुप्तचर
(4) कोष
(5) राष्ट्र/प्रजा
(6) दुर्ग
(7) सेना

◈ **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।

◈ शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

◈ कौटिल्य ने दुर्गों की चार **(औदक, पार्वत, धान्वन तथा वन दुर्ग)** जबकि शुक्रनीति में दुर्गों की निम्नलिखित **नौ श्रेणियां** बताई गई हैं।

1. **औदक/जल दुर्ग**- वह दुर्ग जो विशाल जल राशि से गिरे हो।
जैसे- गागरोण दुर्ग (झालावाड़), भैसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) तथा शेरगढ़ (बारां)।
2. **धान्वन दुर्ग**- मरूस्थल या मरूभूमि में स्थित दुर्ग।
जैसे- सोनारगढ़ (जैसलमेर), जूनागढ़ (बीकानेर), भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़) तथा नागौर दुर्ग
3. **पारिख दुर्ग**- वह दुर्ग जिसके चारों तरफ गहरी खाई हो।
जैसे- लोहागढ़ (भरतपुर), जूनागढ़ (बीकानेर)
4. **पारिध दुर्ग**- वह दुर्ग जिसके चारों तरफ विशाल परकोटा बना हो।
जैसे- चित्तौड़गढ़, सोनारगढ़ तथा जालौर दुर्ग।
5. **वन दुर्ग**- सघन बीहड़ (कांटेदार झाड़ियों) में निर्मित दुर्ग।
जैसे- सिवाणा (बालोतरा), रणथंभौर (सवाई माधोपुर)
6. **ऐरण दुर्ग**- वह दुर्ग जहां तक पहुंचने का रास्ता कांटों, पत्थरों तथा खाइयों के कारण दुर्गम हो।
जैसे- जालौर दुर्ग, रणथंभौर दुर्ग तथा चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
7. **गिरि दुर्ग**- ऊँची पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में आते हैँ
जैसे- चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़ (राजसमंद), मेहरानगढ़ (जोधपुर), तारागढ़ (अजमेर), जालौर तथा सिवाणा दुर्ग (बालोतरा)
8. **सहाय दुर्ग**- जिसमें वीर तथा सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।
9. **सैन्य दुर्ग**- वह दुर्ग जहां युद्ध की योजना और रणनीति बनाने में निपुण सैनिक रहते हो। सभी दुर्गों में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

1. औदुक दुर्ग
2. पर्वत दुर्ग
3. धान्वन दुर्ग
4. वन दुर्ग

◈ **विशेष:**कुछ दुर्ग ऐसे भी है, जिन्हें दो या अधिक दुर्गों के प्रकार में शामिल किया जा सकता है, जैसे चित्तौड़गढ़ के दुर्ग को गिरि दुर्ग, पारिख दुर्ग एवं एरण दुर्ग की श्रेणी में रखा जाता है।

◈ राजस्थान के 6 प्रमुख दुर्गों को जून 2013 में कंबोडिया के नोमपेन्ह में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्कों की वर्ल्ड हेरिटेज साइट की सूची में शामिल किया गया –

1. आमेर दुर्ग
2. गागरोण दुर्ग
3. कुम्भलगढ़ दुर्ग
4. जैसलमेर दुर्ग
5. रणथम्भौर दुर्ग
6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।

किलों/दुर्गों से जुड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य –

◈ **चित्तौड़गढ़ (सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट):** यह भारत का सबसे बड़ा किला है, जहाँ आज भी बड़ी संख्या में लोग निवास करते हैं।

◈ **कुंभलगढ़ की विशाल दीवार:** इस किले की दीवार 36 किलोमीटर लंबी है, जिसे "भारत की महान दीवार" (Great Wall of India) कहा जाता है।

◈ **मेहरानगढ़ की विशालता:** जोधपुर का यह किला एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है और अपनी भव्य वास्तुकला व नक्काशीदार झरोखों के लिए प्रसिद्ध है।

◈ **जैसलमेर का सोनार किला:** पीले बलुआ पत्थरों से बना यह रेगिस्तानी किला सूर्य की रोशनी में सोने की तरह चमकता है।

◈ **गागरोन का जल दुर्ग:** झालावाड़ का यह किला बिना किसी नींव के सीधे चट्टान पर खड़ा है और चारों ओर से पानी से घिरा है।

◈ **लोहागढ़ (अजेय किला):** भरतपुर के इस मिट्टी के किले को अंग्रेज अधिकारी लॉर्ड लेक भी अपनी तोपों से कभी जीत नहीं पाए थे।

◈ **तारागढ़**: बूंदी के तारागढ़ किले में स्थित 'गर्भगुंजन' तोप अपनी भीषण गर्जना के लिए इतिहास में प्रसिद्ध थी।

◈ **रणथंभौर का त्रिनेत्र गणेश:** सवाई माधोपुर के इस दुर्ग में भारत का एकमात्र त्रिनेत्र (तीन आंखों वाले) गणेश जी का प्रसिद्ध मंदिर है।

◈ **स्थापत्य के जनक राणा कुंभा:** मेवाड़ के महाराजा कुंभा को राजस्थान में सर्वाधिक किलों (32 दुर्गों) के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।

◈ **मिट्टी का किला –** लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर) और भटनेर का किला (हनुमानगढ़) [ये दोनों मिट्टी से बने अभेद्य दुर्ग हैं] ।

◈ **अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग –** टॉडगढ़ दुर्ग (अजमेर) [इसे कर्नल जेम्स टॉड ने बनवाया था, इसे 'बरसावाड़ा/ 'बरसावाड़ा ' भी कहते हैं] ।

◈ **मुस्लिम/इस्लामिक पद्धति –** मैगज़ीन किला / अकबर का किला (अजमेर) [यह पूर्णतः मुस्लिम स्थापत्य शैली में बना राजस्थान का एकमात्र किला है] ।

सर्वाधिक आक्रमण झेले –

◈ **विदेशी आक्रमण:** भटनेर का किला (हनुमानगढ़) [इसने इतिहास में सबसे ज्यादा विदेशी हमले झेले हैं।

◈ **स्थानीय/आंतरिक आक्रमण:** तारागढ़ दुर्ग (अजमेर) [इसने सबसे ज्यादा स्थानीय आक्रमण झेले हैं।

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

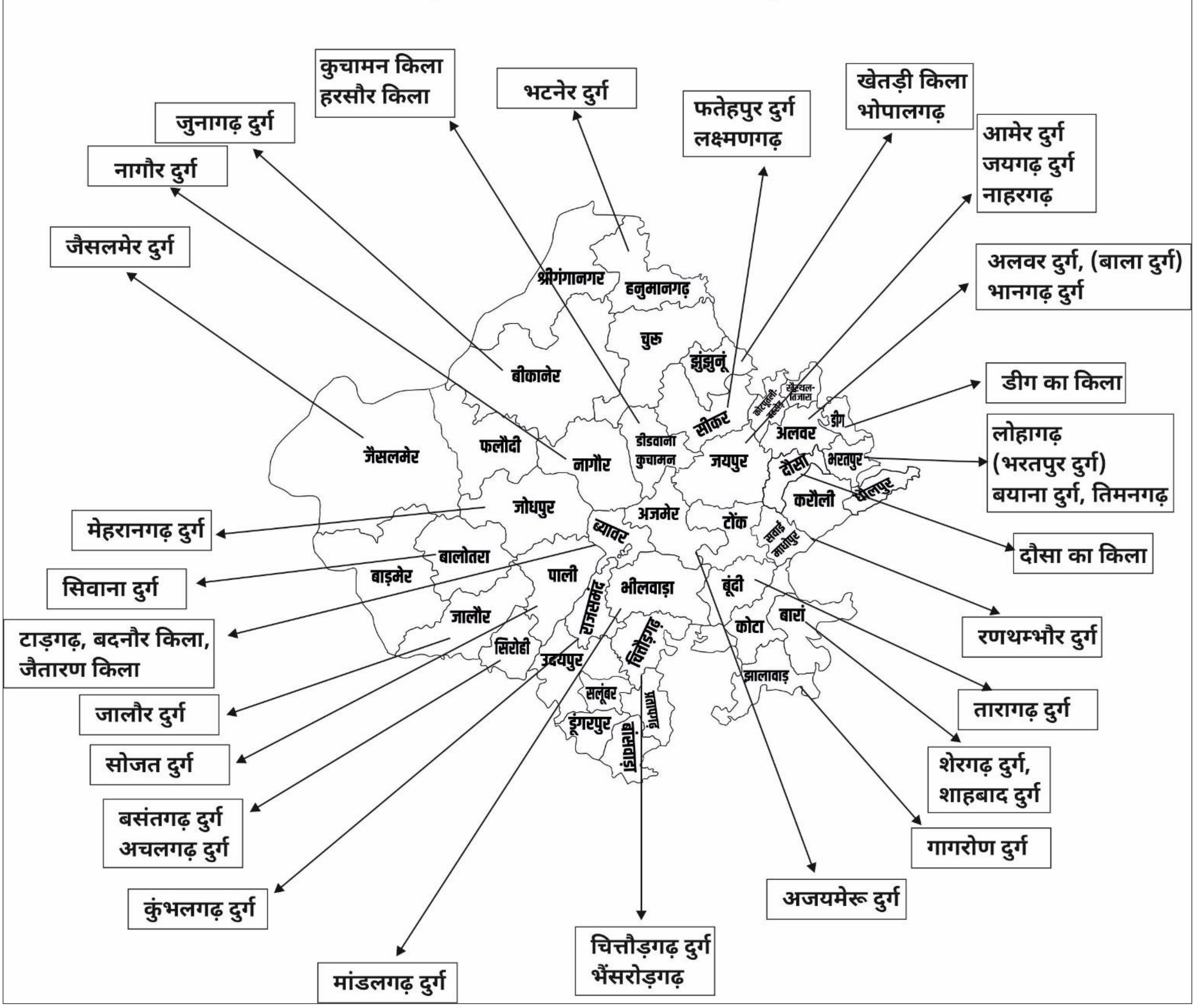

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- ◈ यह क़िला एक वर्ल्ड हैरिटेज साइट है।
- ◈ यह पीले पत्थर से बना होने के कारण, सोने जैसा चमकता है। इसीलिए इसे 'सोनार क़िला' या 'गोल्डन फोर्ट' कहते हैं।
- ◈ जैसलमेर दुर्ग को दिल्ली, आगरा इत्यादि दुर्गों से बेहतर कहा गया है और बीकानेर इत्यादि का तो कोई मुकाबला ही नहीं माना गया है।

गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो अधगढ़ बीकानेर।
भलो चिनायो भाटियाँ, सिरै तो जैसलमेर ।।

- ◈ लोद्रवा के शासक भोजदेव यवन आक्रमण में मारे गए और नगर नष्ट हो गया।
- ◈ रावल जैसलदेव ने लोद्रवा को असुरक्षित मानकर 12 जुलाई, 1155 को नए दुर्ग की नींव रखी।
- ◈ इस दुर्ग का निर्माण कार्य शालिवाहन द्वितीय ने पूरा करवाया।
- ◈ इसे सोनारगढ़, स्वर्णगिरी, त्रिकूटगढ़, उत्तर भड़ किवाड़, पश्चिमी सीमा का प्रहरी, राजस्थान का अंडमान और गलियों वाला दुर्ग कहते हैं।
- ◈ यह शेर के समान अंगड़ाई लेता दुर्ग और रेत के समन्दर में लंगर डाले जहाज के समान आकृति वाला किला है।
- ◈ यह धान्वन श्रेणी का दुर्ग धरातल से 76 मीटर ऊँची 'त्रिकूट पहाड़ी' पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- ◈ यह पीले पत्थरों से बिना चूने के जोड़ा गया है और इसकी छत लकड़ी की है जिस पर गोमूत्र का लेप किया जाता है।
- ◈ यह चित्तौड़गढ़ के बाद राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला और तीसरा प्राचीनतम दुर्ग है।
- ◈ इस सोनारगढ़ किले के पास ही ऐतिहासिक गढ़ीसर/घडसीसर झील स्थित है। इस किले के सामने प्रतिवर्ष फरवरी माह में राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा डेजर्ट फेस्टिवल (मरु महोत्सव) मनाया जाता है।
- ◈ इस उत्सव में ऊँट दौड़, ऊँट श्रृंगार, ऊँट सजावट और ऊँटनी का दूध निकालने जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं।
- ◈ पं. जवाहर लाल नेहरू ने इस किले को विश्व का आठवाँ आश्चर्य " कहा हैं।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- ◈ इस दुर्ग में सर्वाधिक 99 बुर्ज हैं।
- ◈ दुर्ग का प्रमुख लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर है, जहाँ स्थापित शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई थी।
- ◈ यहाँ स्थित जिनभद्र सूरी भंडार विशिष्ट संग्रहालय है, जिसमें दसवैकालिका सूत्रचूर्णी और औद्यनिर्युक्तिवृति जैसे प्राचीनतम चित्रित ग्रंथ सुरक्षित हैं।

- दुर्ग के भीतर जैसलू कुआं स्थित है, जिसके बारे में मान्यता है कि इसका निर्माण भगवान श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र से हुआ था।
- इस दुर्ग का दोहरा परकोटा बना हुआ है, जिसे स्थानीय भाषा में कमरकोट या पाड़ा कहा जाता है।
- किले का मुख्य प्रवेश द्वार अक्षयपोल (अखैपोल) है, जबकि सूरजपोल, गणेशपोल और हवापोल अन्य सुदृढ़ और विशाल द्वार हैं।
- यहाँ सर्वोत्तम विलास (शीश महल), रंगमहल, मोतीमहल, बादल महल, जवाहर विलास और गजविलास जैसे भव्य और नक्काशीदार महल दर्शनीय हैं।
- दुर्ग के भीतर बने पार्श्वनाथ, संभवनाथ और ऋषभदेव जैन मंदिर शिल्प और सौंदर्य में आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिरों के समकक्ष हैं।
- इन जैन मंदिरों में 12वीं शताब्दी में निर्मित आदिनाथ का मंदिर सबसे प्राचीन है, जबकि अन्य मंदिर 15वीं शताब्दी के हैं।
- यहाँ सूर्यमंदिर, रत्नेश्वर महादेव, खुशालराजराजेश्वरी, टीकमराय, घण्टियाली माता और कुलदेवी स्वांगिया माता के प्राचीन मंदिर भी स्थित हैं।

साका	वर्ष	शासक/ प्रमुख व्यक्ति	आक्रमणकारी	प्रमुख घटनाएँ
प्रथम साका	1311 ई. (कुछ इतिहासकारों के अनुसार 1312 ई.)	मूलराज द्वितीय	अलाउद्दीन खिलजी	मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ। इतिहासकार गोपीनाथ शर्मा के अनुसार यह साका 1312 ई. में हुआ था।
दूसरा साका	रावल दूदा के शासनकाल में	रावल दूदा, त्रिलोकसी	फिरोजशाह तुगलक	रावल दूदा, त्रिलोकसी एवं अन्य वीरों ने वीरगति प्राप्त की तथा महिलाओं ने जौहर किया।
तीसरा अर्द्धसाका	1550 ई.	राव लूणकरण	अमीर अली	वीरों ने केसरिया किया, किन्तु महिलाओं का जौहर नहीं हो पाया, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा जाता है।

विशेष: अबुल फजल ने इस दुर्ग की दुर्गमता पर लिखा है कि "घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण, शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"

- प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक सत्यजीत रे द्वारा इस दुर्ग पर 'सोनार किला' फिल्म बनाई गई।

वर्ष/तिथि	विवरण / ऐतिहासिक घटना
2009	इस दुर्ग पर 5 रुपये का विशेष डाक टिकट जारी किया गया।
1550 ई.	राजस्थान के इतिहास का एकमात्र अर्द्ध साका इसी दुर्ग में हुआ।
21जून, 2013	UNESCO द्वारा इस दुर्ग को विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- भूपत भाटी ने तीसरी सदी के अंतिम चरण में घग्घर नदी के तट पर इसका निर्माण करवाया।
- इस दुर्ग के वास्तुकार कैकेया थे और इसे 'उत्तरी सीमा का प्रहरी' कहा जाता है।
- यह धान्वन श्रेणी का दुर्ग पक्की ईंटों व चूने से निर्मित है, जिसका क्षेत्रफल 52 बीघा है।
- दुर्ग परिसर में कुल 52 बुर्ज और 52 कुंड बने हुए हैं।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का सबसे प्राचीन और सर्वाधिक विदेशी आक्रमण झेलने वाला किला है।
- इस पर पहला विदेशी आक्रमण 1003 ई. में महमूद गजनवी ने और अंतिम 1532-34 ई. में कामरान ने किया।
- तैमूर लंग ने 6 नवम्बर, 1398 को शासक दूलचन्द भाटी को हराकर इस दुर्ग पर विजय प्राप्त की।
- तैमूर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-तैमूरी' में इसे पूरे हिन्दुस्तान का सबसे मजबूत व सुरक्षित किला बताया।
- तैमूर के आक्रमण के समय यहाँ राजपूत रानियों के साथ-साथ मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया था।
- बीकानेर शासक सूरतसिंह ने **1805** ई. में मंगलवार के दिन भाटियों को हराकर इसका नाम हनुमानगढ़ रखा।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- दुर्ग के भीतर मामा भांजा की दरगाह, गोरखनाथ मंदिर और बलबन के किलेदार शेर खाँ की कब्र स्थित है
- इसके एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** रानियों/नारियों की आकृतियाँ व देवलियाँ बनी हैं।
- बीकानेर के राजा राय सिंह ने अपने विद्रोही बेटे दलपत सिंह को यहाँ गिरफ्तार किया।
- यहाँ माता भद्रकाली मंदिर स्थित हैं।
- यहां पर भगवान शिव और भगवान हनुमान को समर्पित मंदिर हैं। इसके ऊँचे दालान तथा दरबार तक घोड़ों के जाने के लिए संकड़े रास्ते बने हुए हैं।
- दूसरे प्रवेश द्वार पर फारसी लीपी के उत्कीर्ण लेख के अनुसार राव मनोहर कछवाहा ने शाही आज्ञा से वहाँ मनोहरपोल नामक दरवाजा बनवाया।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- इस दुर्ग का निर्माण 1589-94 ई. में बीकानेर महाराजा रायसिंह द्वारा अपने मंत्री कर्मचन्द्र की देखरेख में करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में 'बीका की टेकरी' (पुराने गढ़) के ऊपर बना है, जिसके कारण इसे जूनागढ़ कहा गया।
- यह चतुर्भुजाकार आकृति का दुर्ग 'धान्वन श्रेणी' के अंतर्गत आता है और सूरसागर झील के किनारे स्थित है।
- इसे जमीन का जेवर, लालगढ़, रातीघाटी का किला, चिंतामणी, तारामणी और रेगिस्तानी दुर्गों में श्रेष्ठ दुर्ग कहा जाता है
- यह मुगल और राजपूत स्थापत्य शैली में निर्मित राजस्थान का एकमात्र किला है जिसमें लिफ्ट लगी हुई है
- दुर्ग के बाहरी प्रवेश द्वार कर्णपोल व चाँदपोल हैं तथा भीतरी द्वारों में दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल और ध्रुवपोल हैं।
- इसके मुख्य द्वार सूरजपोल पर जैन मुनि जैइता द्वारा संस्कृत में रचित ऐतिहासिक 'रायसिंह प्रशस्ति' उत्कीर्ण है।
- सूरजपोल के पार्श्व में गणेशजी का मंदिर है और इसी द्वार पर मेवाड़ के वीर सेनापति जयमल व फत्ता की गजारूढ़ पाषाण मूर्तियाँ स्थित हैं।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- यह किला चारों ओर एक गहरी व चौड़ी खाई से घिरा हुआ है जिसके परकोटे में **37** विशाल बुर्जे बनी हैं।
- इसके दो प्रमुख बाहरी द्वार कर्णपोल (पूर्वी) व चाँदपोल (पश्चिमी) और **5** आंतरिक द्वार बने हुए हैं।
- दुर्ग के सूरजपोल दरवाजे पर इसके संस्थापक राजा रायसिंह की ऐतिहासिक प्रशस्ति उत्कीर्ण है।
- सूरजपोल के दोनों ओर चित्तौड़गढ़ के वीर सेनानायक जयमल मेड़तिया और फत्ता सिसोदिया की गजारूढ़ मूर्तियां हैं।
- यहाँ बीकानेर शासकों के राजतिलक का स्थान अनूप महल और सुंदर लकड़ी की छत वाला छत्र निवास महल स्थित है।
- दुर्ग के भीतर रतन, दलेल, रंग, कर्ण, लाल, गंगा, मोती, चंद्र, सरदार निवास और विक्रम विलास महल दर्शनीय हैं।
- जूनागढ़ दुर्ग परिसर के भीतर देश का प्रसिद्ध **33** करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर बना हुआ है।

- यहाँ शीशे की बारीक कढ़ाई वाला गज मन्दिर तथा रामसर व रानीसर नामक दो ऐतिहासिक कुएँ स्थित हैं।
- गंगाविलास महल - इसमें दीवारों पर भगवान कृष्ण के चित्र एवं रासलीला के चित्र दर्शनीय है।
- हर मन्दिर स्थित हैं।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- इस दुर्ग की स्थापना 1459 ई. में राव जोधा द्वारा जोधपुर की चिड़ियाटूंक पहाड़ी पर की गई थी।
- जोधपुर के क्षितिज पर शोभायमान 125 मीटर ऊँची सीधी पहाड़ी पर अभेद्य मेहरानगढ़ किला है।
- लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित इस दुर्ग को मयूरध्वजगढ़ और गढ़चिंतामणी के उपनामों से भी जाना जाता है।
- मेहरानगढ़ दुर्ग के भीतर बने भव्य महल राजपूत स्थापत्य कला के सर्वोत्कृष्ट और सुंदर उदाहरण हैं
- रूडयार्ड किपलिंग ने इस किले की भव्यता देखकर इसे "देवताओं, परियों और फरिश्तों द्वारा निर्मित" माना था।
- इस किले का निर्माण सूर्यवंशी राठौड़ों द्वारा किया गया इस कारण इसे 'मिहिरानगढ़' और मोर जैसी आकृति के कारण 'मयूरध्वजगढ़' कहा जाता है।
- लोक मान्यताओं के अनुसार मेहरानगढ़ किले की नींव रिद्धि बाई (देवी करणी माता) के हाथों से रखी गई थी।
- किले के निर्माण को निर्विघ्न पूरा करने के लिए 'राजाराम मेघवाल' नामक व्यक्ति की स्वेच्छा से जीवित बलि दी गई थी।
- यह विशाल दुर्ग जोधपुर की पहाड़ी पर पूरी तरह से लाल बलुआ पत्थरों का उपयोग करके बनाया गया है।
- दुर्ग के उत्तर-पूर्व में स्थित जयपोल का निर्माण 1808 ई. में महाराजा मानसिंह द्वारा करवाया गया था।
- इसके दक्षिण-पश्चिम में स्थित फतेहपोल का निर्माण 1707 ई. में महाराजा अजीतसिंह ने करवाया था।
- ध्रुव पोल, सूरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल इस विशाल दुर्ग के अन्य सुदृढ़ प्रवेश द्वार हैं।
- दुर्ग के मुख्य द्वारों में शामिल लोहापोल का निर्माण राव मालदेव ने 1548 ई. में शुरू करवाया और महाराजा विजयसिंह ने पूर्ण किया।
- इस ऐतिहासिक लोहापोल प्रवेश द्वार पर जौहर करने वाली राजपूत नारियों की 81 हथेलियों के निशान बने हुए हैं।

मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें –

तोपों के नाम	
किलकिला	नागपली
गजनी	धूड़धाणी
शम्भूबाण	रहस्यकला
गजक	मीरबक्श
कड़क बिजली	भवानी
नुसरत	जमजमा
गुब्बारा	बगसवाहन
बिच्छुबाण	धुड़धाणी

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- यह किला अपने उत्तम मेहराबदार झरोखों, नक्काशीदार पट्टिकाओं, सजावटयुक्त द्वारों और चित्रित दीवारों के लिए प्रसिद्ध है।
- दुर्ग के भीतर फतेह, फूल, श्रृंगार चंवरी, मोती, चौखेलाव, बिचला और तुलाती (तलहटी) जैसे भव्य महल स्थित हैं।
- महाराजा सूरसिंह द्वारा निर्मित मोतीमहल अपने सुनहरे अलंकरण तथा सजीव भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- मोतीमहल की छत और दीवारों पर सोने की पॉलिश का बारीक कार्य महाराजा तखतसिंह द्वारा करवाया गया था।
- महाराजा अभयसिंह द्वारा निर्मित फूलमहल पत्थर पर की गई अपनी बेहद बारीक खुदाई और कोराई के लिए जाना जाता है।
- महाराजा सरदार सिंह ने 1906 ई. में 'जसवंत थड़ा' बनवाया, जिसे मारवाड़ या राजस्थान का ताजमहल कहा जाता है।
- दुर्ग में राव जोधा द्वारा निर्मित राठौड़ों की आराध्य देवी चामुण्डा माता का ऐतिहासिक मंदिर स्थित है।
- बारूदखाने पर बिजली गिरने से खंडित हुए चामुण्डा मंदिर का जीर्णोद्धार महाराजा तखतसिंह ने करवाया था।
- वर्ष 2008 में चामुण्डा माता मंदिर में हुई दुखद भगदड़ की जाँच के लिए जसराज चोपड़ा अयोग का गठन किया गया था।
- दुर्ग परिसर में मुरली मनोहर मंदिर, आनंदघनजी मंदिर और राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर भी स्थित है।
- लोहा पोल द्वार के पास धन्ना और भींवा की ऐतिहासिक 10 खंभों वाली 'मामा-भांजा की छतरी' स्थित है।
- दुर्ग परिसर के भीतर प्रसिद्ध भूरे खाँ की मजार और वीर कीरत सिंह सोढ़ा की छतरी बनी हुई है।
- अफगान शासक शेरशाह सूरी ने 1544 ई. में किले पर अधिकार कर सूरी मस्जिद बनवाई, जिसे मालदेव ने 1545 ई. में पुनः जीता।
- महाराजा मानसिंह द्वारा स्थापित 'पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय' को वर्ष 1974 में एक समृद्ध संग्रहालय में बदल दिया गया।
- महाराजा तख्तसिंह द्वारा निर्मित 'शृंगार चौकी' पर राजाओं का राजतिलक होता था।
- दुर्ग में जलापूर्ति हेतु राणीसर (निर्माता: रानी जसमा हाड़ी) और पद्मसर (निर्माता: रानी पद्म कँवर) नामक दो तालाब स्थित हैं।
- इसके 6 द्वारों के नाम नागौरी, मेड़तिया, सोजती, सिवानची, जालौरी दरवाजा तथा चाँदपोल हैं।
- मेहरानगढ़ दुर्ग के भीतर स्थित भव्य संग्रहालय में मुगल सम्राट अकबर की तलवार सुरक्षित रखी हुई है।
- रूडयार्ड किपलिंग ने इसे "परियों व फरिश्तों द्वारा निर्मित" और जैकलीन कैनेडी ने "दुनिया का आठवाँ अजूबा" कहा था।
- यह सैलानियों के लिए आधुनिक 'ऑडियो गाइड टूर' की सुविधा प्रदान करने वाला राजस्थान का प्रथम दुर्ग है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- वीरविनोद ग्रंथ के अनुसार मौर्य राजा चित्रांगद ने इस दुर्ग का निर्माण करवाकर इसका नाम 'चित्रकोट' रखा था।
- गुहिल राजवंश के बप्पारावल ने 8वीं शताब्दी में अंतिम मौर्य राजा मानमोरी को हराकर इस दुर्ग पर अधिकार किया।
- दिल्ली से मालवा और गुजरात मार्ग पर स्थित होने के कारण प्राचीन व मध्यकाल में इसका विशेष सामरिक महत्त्व था।
- यह विशाल गिरि दुर्ग गंभीरी व बेड़च नदियों के संगम के निकट अरावली के 'मेसा पठार' पर स्थित है।
- इसे चित्रकोट, चित्रकूट, 'राजस्थान का गौरव' और 'किलों का सिरमौर' जैसे प्रसिद्ध उपनामों से जाना जाता है।
- स्थापत्य की दृष्टि से चित्तौड़गढ़ दुर्ग को गिरि दुर्ग, पारिख दुर्ग और एरण दुर्ग की श्रेणियों में रखा जाता है।
- महाराणा कुम्भा ने मेवाड़ में सर्वाधिक 32 दुर्गों का निर्माण करवाया और चित्तौड़गढ़ दुर्ग का जीर्णोद्धार भी कराया।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट (आवासीय किला) है, जिसके लिए प्रसिद्ध है- 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया'।
- वर्ष 1615 ई. की मेवाड़-मुगल संधि के बाद से लेकर 1947 ई. तक इस दुर्ग पर गुहिल-सिसोदिया वंश का अधिकार रहा।

- वर्ष 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय यहाँ प्रथम साका हुआ, जिसमें रानी पद्मिनी ने जौहर और राणा रतन सिंह ने केसरिया किया।
- इस ऐतिहासिक युद्ध में वीर सेनापति गोरा और बादल वीरगति को प्राप्त हुए, जिसका वर्णन अमीर खुसरो की कृति 'तारीख-ए-अलाई' में है।
- खिलजी ने दुर्ग अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौंपकर इसका नाम 'खिजराबाद' रखा और बाद में मालदेव सोनगरा को यहाँ का हाकिम बनाया।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- अबुल फजल ने इस दुर्ग की विशालता और महत्ता को देखते हुए कहा था कि "गढ़ तो चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया।"
- वीरविनोद के अनुसार महाराणा कुम्भा ने यहाँ विजयस्तम्भ, कुम्भश्याम मन्दिर, लक्ष्मीनाथ मन्दिर, रामकुण्ड और दुर्ग का परकोटा बनवाया।
- कुम्भा ने पूर्व में स्थित विकट रास्ते को सुगम करने के लिए कुकड़ेश्वर कुण्ड का जीर्णोद्धार कराया और चार नए दरवाजे बनवाए।
- इतिहासकार जी.एच. ओझा के अनुसार पूर्व में किले पर जाने हेतु रथमार्ग नहीं था, जिसे कुम्भा ने बनवाकर सात प्रवेश द्वार स्थापित किए।
- दुर्ग के 7 प्रवेश द्वार क्रमश: पाडन पोल, भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोड़ला पोल, लक्ष्मण पोल और रामपोल हैं।
- पहले मुख्य द्वार 'पाडन पोल' के पास प्रतापगढ़ के रावत बाघसिंह का स्मारक है, जो दूसरे साके में बहादुरशाह के विरुद्ध लड़ते हुए शहीद हुए।
- दूसरे द्वार 'भैरवपोल' के पास देसूरी के वीर भैरव सिंह सोलंकी का स्मारक है और तीसरे द्वार 'हनुमानपोल' पर हनुमान जी की प्रतिमा है।
- भैरवपोल और हनुमानपोल के मध्य अकबर की सेना से लोहा लेने वाले वीर जयमल मेड़तिया (6 खंभे) और कल्ला जी राठौड़ (4 खंभे) की छतरियाँ हैं।
- अंतिम व सातवें मुख्य द्वार 'रामपोल' के सामने तीसरे साके के यशस्वी नायक फत्ता (पत्ता) सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।
- दुर्ग की पूर्व दिशा में स्थित 'सूरजपोल' इसका प्राचीन प्रवेश द्वार है तथा उत्तर दिशा में बनी लघु खिड़की 'लाखोटा की बारी' कहलाती है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग में तीन साके हुए –

साका	चित्तौड़ शासक	आक्रांता	विशेष
प्रथम (1303)	रावल रतनसिंह	अलाउद्दीन खिलजी	रानी पद्मिनी का जौहर
दूसरा (1535)	विक्रमादित्य	बहादुरशाह (गुजरात)	कर्मावती का जौहर
तीसरा (1568)	उदयसिंह	अकबर	फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- चित्तौड़ दुर्ग का सबसे बड़ा आकर्षण राणा रतन सिंह की रानी पद्मिनी के महल हैं जो एक जलाशय पर स्थित हैं।
- पद्मिनी के महलों से दक्षिण-पूर्व में दो गुम्बजदार भवन हैं जो गोरा-बादल के महल कहलाते हैं।
- किले के भीतर अन्य प्रमुख भवनों में नौ कोठा मकान या नवलखा भण्डार एक लघु दुर्ग के रूप में है जो बनवीर ने भीतरी किला बनवाने के उद्देश्य से बनवाया था। इसी कारण इसे बनवीर की दीवार भी कहते है।

किले के प्रमुख मंदिर –

- बनवीर ने अपने तुलादान के धन से 'तुलजा भवानी मंदिर' का निर्माण करवाया था, जो छत्रपति शिवाजी महाराज की कुलदेवी हैं।
- 'समीधेश्वर मंदिर' (त्रिभुवननारायण मंदिर) का निर्माण परमार राजा भोज ने नागर शैली में गोमुख कुंड के किनारे करवाया था।
- महाराणा मोकल ने 1428 ई. में इस शिव मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, जिसके बाद से इसे 'मोकल जी का मंदिर' कहा जाता है।
- 'कुम्भ श्याम मंदिर' प्रतिहारकालीन शैली में निर्मित है, जिसका महाराणा कुम्भा ने 1449 ई. में जीर्णोद्धार करवाकर वराह मूर्ति स्थापित की।
- महाराणा सांगा ने कुंभश्याम मंदिर परिसर में 'मीरा बाई मन्दिर' बनवाया, जिसके सामने संत रैदास की 4 खम्भों की छतरी स्थित है।
- 'श्रृंगार चंवरी' मूलतः शांतिनाथ जैन मंदिर है जिसे कुम्भा के कोषाध्यक्ष बेलका ने बनवाया था, जहाँ कुम्भा की पुत्री रमाबाई का विवाह हुआ था।
- ग्यारहवीं सदी में निर्मित 'सतबीस देवरी' एक भव्य जैन मंदिर है, जिसमें जैन तीर्थंकरों की कुल 27 छोटी देवरियां (प्रतिकृतियां) बनी हैं।
- दुर्ग में स्थित 'नीलकंठ महादेव मंदिर' के बारे में किवदंती है कि इस मूर्ति को पांडव भीम अपनी बाजुओं में बांधकर रखते थे।
- यहाँ महाराणा हम्मीर द्वारा निर्मित अन्नपूर्णा (बिरवड़ी माता) मंदिर, बाण माता मंदिर, सोमदेव मंदिर और रतनेश्वर महादेव मंदिर भी स्थित हैं।

कीर्तिस्तम्भ/जैन प्रशस्ति–

- किले की पूर्वी प्राचीर के निकट एक सात मंजिला जैन कीर्ति स्तम्भ है ऊँचाई 75 फीट, सीढ़ियाँ 54, जो आदिनाथ का स्मारक बताया जाता है। इसका निर्माण बघेरवाल जैन जीजा एवं इसके पुत्र पुण्यसिंह के द्वारा 12वीं शताब्दी के आसपास करवाया गया।

विजय स्तम्भ–

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के भीतर स्थित विजय स्तम्भ को 'विष्णु स्तंभ' और 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' के उपनामों से जाना जाता है।
- महाराणा कुंभा ने 1437 ई. के सारंगपुर युद्ध में महमूद खिलजी प्रथम को हराने की खुशी में इसका निर्माण 1440 से 1448 ई. के मध्य करवाया।
- यह 9 मंजिला इमारत 30 फीट चौड़ी और 122 फीट ऊँची है, जिसमें ऊपर तक पहुँचने के लिए कुल 157 सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।
- इसकी तीसरी मंजिल पर अरबी भाषा में 9 बार 'अल्लाह' शब्द अंकित है और सातवीं मंजिल पर स्वास्तिक का पवित्र चिह्न बना हुआ है।
- इसकी पांचवीं मंजिल पर वास्तुकारों जैता, नापा, पोमा, पुंजा, भूमि, चूथि व बलराज के नाम उत्कीर्ण है।
- इसकी विभिन्न मंजिलों पर हिंदू देवी-देवताओं व दशावतारों की मूर्तियाँ हैं, जबकि आठवीं मंजिल पर कोई भी मूर्ति स्थापित नहीं है।
- इसकी नौवीं मंजिल पर हम्मीर से लेकर मोकल तक का इतिहास शिलाओं पर अंकित है, जिसे 'कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति' कहा जाता है।
- इतिहासकार सी.वी. वैद्य ने इसे 'विष्णु स्तंभ', उपेंद्रनाथ डे ने 'विष्णु ध्वज' और गोपीनाथ शर्मा ने 'लोक जीवन का रंगमंच' कहा है।
- आर.पी. व्यास ने इसे 'हिंदू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि' कहा और फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना इंग्लैंड के 'टार्जन टावर' से की।
- इस स्तम्भ को बनाने की मुख्य प्रेरणा बयाना (भरतपुर) के प्राचीन विष्णु स्तंभ से मिली थी और उस समय इसके निर्माण में 90 लाख रुपये खर्च हुए थे।
- महाराणा स्वरूप सिंह के शासनकाल में आकाशीय बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हुई इस इमारत का पुनरुद्धार (जीर्णोद्धार) करवाया गया था।

विजय स्तम्भ प्रतीक चिह्न के रूप मे –

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तम्भ राजस्थान पुलिस का आधिकारिक प्रतीक चिह्न है।
- यह प्रसिद्ध विजय स्तम्भ राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रतीक चिह्न के रूप में भी प्रयुक्त होता है।
- स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर के क्रांतिकारी संगठन 'अभिनव भारत' का प्रतीक चिह्न भी यही विजय स्तम्भ था।

डाक टिकट जारी–

- यह राजस्थान की पहली ऐसी ऐतिहासिक इमारत है जिस पर 15 अगस्त, 1949 को 1 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया था।

- **दुर्ग में जलापूर्ति के स्रोत -** रत्नेश्वर तालाब, कुम्भसागर, गोमुख झरना, हाथीकुण्ड, भीमलत तालाब, झालीबाव तालाब।
- किले के उत्तरी हिस्से में घी-तेल की बावड़ी, खातण की बावड़ी, रत्नेश्वर तालाब (रतनतिसंह द्वारा निर्मित), कातन बावड़ी, जेठा महाजन बावड़ी, कुम्भ सागर तालाब, मध्य भाग में गौमुख नामक झरना (कुण्ड), हाथीकुण्ड, जयमल और पत्ता की हवेलियों के पास भीमलत नामक बड़ा तालाब, पांडनपोल दरवाजे के बाहर महाराणा उदयसिंह की झाली रानी द्वारा निर्मित झालीबाव, राजटीला नामक स्थान पर पहाड़ी के छोर पर बना चित्रांगद मौर्य तालाब मुख्य है।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित फतह प्रकाश महल को म्युजियम के रूप में विकसित किया गया है जिसमें अनेक कलात्मक देव प्रतिमायें, अलंकृत पाषाण स्तम्भ तथा और बहुत सारी पुरा सामग्री संगृहीत है।
- **जौहर मेला -** चित्तौड़गढ़ दुर्ग में चैत्र कृष्ण एकादशी को आयोजित होता है।
- 21 जून 2013 को इस दुर्ग को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।

विशेष: 2018 में इस किले पर 12 रुपये का डाक टिकट जारी हुआ है।

अन्य दर्शनीय स्थल -

- **फतह प्रकाश महल** - इसका निर्माण फतेहसिंह ने करवाया।
- **लाखोटा की बारी**: चित्तौड़ दुर्ग की उत्तरी खिड़की।
- नौगजा पीर की दरगाह, **64** योगिनी मंदिर
- नवलखा बुर्ज (बनवीर द्वारा निर्मित लघु दुर्ग)।

कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद)

- महाराणा कुंभा ने मौर्य शासक सम्प्रति के प्राचीन दुर्ग के अवशेषों पर **1448** ई. में इस दुर्ग की नींव रखी थी।
- यह प्रसिद्ध दुर्ग वास्तुकार मंडन की देख-रेख में वर्ष **1458** ई. में पूरी तरह बनकर तैयार हुआ।
- कुंभलगढ़ दुर्ग राजस्थान के राजसमंद जिले के सादड़ी गाँव के पास अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित है।
- इस ऐतिहासिक किले को इतिहास में 'कुम्भलमेर' या 'कुम्भरमेरु' के प्रसिद्ध उपनामों से भी जाना जाता है।
- बीहड़ वनों से घिरा यह सुरक्षित दुर्ग संकटकाल में मेवाड़ राजपरिवार का प्रमुख आश्रय स्थल रहा है।
- कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में इस दुर्ग की समीपवर्ती पर्वत चोटियों के नाम श्वेत, नील, हेमकूट, निषाद, हिमवत और गन्धमादन मिलते हैं।
- वर्ष **1578** ई. में मुगल सेनानायक शाहबाज खाँ ने इस दुर्ग पर कुछ समय के लिए अधिकार कर लिया था।
- महाराणा प्रताप ने इसे मुगलों से पुनः जीत लिया, जिसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह मेवाड़ शासकों के पास ही रहा।
- वर्ष **1800** से **1900** ई. के मध्य (**19**वीं शताब्दी में) मारवाड़ सीमा पर स्थित इस किले का नवीनीकरण महाराणा फतेह सिंह द्वारा करवाया गया।
- यह दुर्ग महाराणा प्रताप के जन्म (बादल महल), उदयसिंह के राज्याभिषेक और महाराणा कुम्भा की हत्या का ऐतिहासिक साक्षी है।
- पन्नाधाय ने इसी दुर्ग में अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर मेवाड़ के भावी महाराणा उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की थी।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी सुदृढ़ प्राचीरों, बुर्जों और कंगूरों के कारण इसकी तुलना यूरोप के 'एस्ट्रकन वास्तु' से की है।
- अबुल फजल ने इसकी ऊँचाई पर लिखा कि "यह दुर्ग इतनी बुलन्दी पर बना है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।"
- वर्ष **1576** ई. के प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध से पूर्व महाराणा प्रताप ने इसी किले में रहकर अपनी सैन्य तैयारियाँ की थीं
- यह दुर्ग अरावली पर्वत की **13** ऊँची चोटियों से घिरा हुआ है और मुख्य रूप से 'गंधमादन' नामक चोटी पर बना है।
- कुम्भलगढ़ दुर्ग की सुरक्षा प्राचीर (दीवार) की कुल लंबाई **36** किलोमीटर और इसका व्यास **30** किलोमीटर है।
- इस दुर्ग की दीवार इतनी चौड़ी है कि इस पर एक साथ चार घोड़े दौड़ सकते हैं, इसी कारण इसे 'भारत की महान दीवार' कहा जाता है।
- इसे मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी, मारवाड़ की छाती पर उठी तलवार, मेवाड़ का मेरुदंड और अजयगढ़ भी कहा जाता है।
- इस प्रसिद्ध किले को 'मेवाड़ की आँख' (या तीसरी आँख) और 'सर्वाधिक 360 मंदिरों वाला किला' के उपनामों से भी जाना जाता है।
- वीर विनोद के अनुसार इसकी चोटी समुद्रतल से 3568 फीट और नीचे की नाल से 700 फीट ऊंची है।
- **प्रवेश द्वार -** ओरठ पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल और गणेश पोल। **(9 द्वार)**

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- इस दुर्ग में झालीबाव बावड़ी, बादशाह बावड़ी, मामादेव तालाब, हाथियों का बाड़ा और झाली रानी का मालिया (महल) निर्मित हैं।
- यहाँ 108 अग्नि वेदिकाओं वाला वेदी मंदिर, बावन देवरी, पीतलिया शाह जैन मंदिर, गोलराव मंदिर और सूर्य मंदिर स्थित हैं।
- दुर्ग में कुंवर पृथ्वीराज की 12 खम्भों की 'उड़ना राजकुमार की छतरी' है, जिसके चारों ओर 17 सतियों का स्तंभ बना है।
- कुम्भलगढ़ के भीतर स्थित लघु दुर्ग 'कटारगढ़' के बादल महल की जूनी कचहरी में 9 मई, 1540 को महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था।
- भैरवपोल, नींबूपोल, चौगानपोल, पागड़ापोल और गणेशपोल इस प्रसिद्ध कटारगढ़ लघु दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार हैं।
- इस किले का पूर्वी द्वार 'दाणीबट्टा' मेवाड़-मारवाड़ को जोड़ता है और पश्चिमी द्वार 'तीडाबारी' मारवाड़ की तरफ खुलता है।
- मामादेव कुण्ड के पास 1468 ई. में महाराणा कुंभा के पुत्र उदा (उदयकरण) ने अपने पिता कुंभा की हत्या कर दी थी।
- कुण्ड के पास स्थित कुम्भास्वामी विष्णु मन्दिर को ही वर्तमान में स्थानीय तौर पर "मामादेव मंदिर" कहा जाता है।
- इस मंदिर के बाहर कुम्भा द्वारा पाषाण शिलाओं पर उत्कीर्ण करवाई गई ऐतिहासिक प्रशस्ति अब उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- दुर्ग परिसर में विशाल शिवलिंग वाला प्रसिद्ध नीलकंठ महादेव का प्राचीन मंदिर और यज्ञ की एक प्राचीन वेदी स्थित है।
- इसी किले में महाराणा उदयसिंह का राज्याभिषेक हुआ था और महाराणा प्रताप ने यहीं से हल्दीघाटी युद्ध की सैन्य तैयारियाँ की थीं।
- अबुल फजल ने लिखा कि "यह दुर्ग इतनी बुलन्दी पर बना है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।"

जालोर दुर्ग (सुवर्णगिरि दुर्ग)

- यह दुर्ग जालौर जिले में सूकड़ी नदी के दाहिने तट पर ऐतिहासिक सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस प्राचीन दुर्ग का मूल निर्माण परमार राजाओं द्वारा करवाया गया माना जाता है।
- इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार गुर्जर-प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने 8वीं सदी में इसका निर्माण करवाया था।
- प्राचीन साहित्य और शिलालेखों में इस क्षेत्र को जाबालिपुर और जालहुर आदि नामों से अभिहित किया गया है।
- सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित होने के कारण इसका नाम सोनलगढ़, सुवर्णगिरी और सोनगढ़ पड़ा।
- 'ताज-उल-मासिर' के लेखक हसन निजामी ने लिखा है कि 'यह ऐसा किला है जिसका दरवाजा कोई आक्रमणकारी नहीं खोल सका।'
- वर्ष 1311 ई. में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने सेनापति कमालुद्दीन के नेतृत्व में इस दुर्ग पर आक्रमण किया था।
- शासक कान्हड़देव और राजकुमार वीरमदेव ने विश्वासघाती दहिया बीका के कारण हुए इस युद्ध में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की।

जालौर दुर्ग का प्रसिद्ध साका-

- 1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने सेनापति कमालुद्दीन के नेतृत्व में आक्रमण किया। कान्हड़देव ने राजकुमार वीरमदेव व विश्वस्त योद्धाओं के साथ खिलजी की सेना से युद्ध किया व वीरगति को प्राप्त हो गए।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- दुर्ग परिसर के भीतर जलापूर्ति हेतु झालर बावड़ी, सोहन बावड़ी और पापड़ बावड़ी स्थित हैं।
- यहाँ जोगमाया माता, चामुंडा माता, आशापुरा माता के मंदिर और जालंधरनाथ की तपोस्थली स्वर्णगिरि जैन मंदिर दर्शनीय हैं।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग के ठीक सामने नटनी की छतरी और भीतर वीरमदेव की चौकी बनी हुई है।
- दुर्ग के मुख्य महलों में मानसिंह महल, रानी महल और नाथावत महल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- यहाँ स्थित संत मलिक शाह की दरगाह और परमारकालीन कीर्ति स्तम्भ स्थापत्य कला के सुंदर उदाहरण हैं।
- किले में बनी तोपखाना मस्जिद (अलाई मस्जिद) पूर्व में परमार राजा भोज द्वारा निर्मित एक संस्कृत पाठशाला थी।
- इस दुर्ग को मारवाड़ के शासकों की संकटकालीन शरणस्थली 'सिवाणा दुर्ग की कुंजी' कहा जाता है।
- मारवाड़ के प्रतापी शासक राव मालदेव ने भी अपने सैन्य अभियानों के दौरान इस किले को जीता था।
- जालौर दुर्ग से संबंधित एक बेहद प्रसिद्ध राजस्थानी कहावत "राई का भाव तो राते ही गया" प्रचलित है।
- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मथुरादास माथुर, गणेशीलाल व्यास, फतहराज़ जोशी और तुलसीदास राठी को यहाँ कैद रखा गया था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1311-12 ई. में कान्हड़देव को हराकर इसका नाम बदलकर 'जलालाबाद' कर दिया था।

रणथम्भौर दुर्ग

- 8 वीं शताब्दी में चौहान राजाओं द्वारा इस किले का निर्माण करवाया गया।
- हम्मीर रासों के अनुसार पहले इस किले को 'रणस्तम्भपुर' कहा जाता था।
- नाथावतों के इतिहास के अनुसार यह किला शिवलिंग पर रखे बीलपत्र के समान दिखाई देता है।
- यह एरण दुर्ग का उदाहरण है।
- यह किला अण्डाकार आकृति की पहाड़ी पर स्थित है।
- अबुल फजल के अनुसार 'अन्य सभी किले नंगे है जबकि यह किला बख्तरबंद है।'
- इसे चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई, हठीला किला, जल जौहर का गवाह दुर्ग, दुर्गाधिराज और हम्मीर की आन-बान का प्रतीक कहते हैं।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग का प्राचीन नाम रन्त:पुर था, जिसका शाब्दिक अर्थ 'रण की घाटी' (रण पहाड़ी की घाटी) होता है।
- स्थापत्य और सुरक्षा की दृष्टि से रणथम्भौर का दुर्ग गिरि दुर्ग, एरण दुर्ग एवं वन दुर्ग तीनों श्रेणियों में आता है।
- इसके प्रमुख प्रवेश द्वारों में नौलखा दरवाजा, हाथी पोल, गणेश पोल, सूरज पोल और त्रिपोलिया दरवाजा शामिल हैं।
- दुर्ग के मुख्य त्रिपोलिया दरवाजा को पूर्व में मुस्लिम शासकों द्वारा 'अंधेरी दरवाजा' नाम दिया गया था।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- इस दुर्ग में पीर सदरुद्दीन की प्रसिद्ध दरगाह स्थित है, जिसका निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने करवाया था।
- यहाँ राजस्थान का सबसे बड़ा गणेश मंदिर स्थित है, जिसे 'रणत भंवर' या 'त्रिनेत्र गणेश मंदिर' के नाम से जाना जाता है।
- हम्मीरदेव चौहान ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासन की याद में यहाँ 32 खम्भों की 'न्याय की छतरी' बनवाई थी।
- दुर्ग परिसर के भीतर एक अन्य ऐतिहासिक स्मारक 'अधूरा स्वप्न की छतरी' (अधूरा स्वप्न छतरी) भी स्थित है।
- यहाँ सुपारी महल, जौरा-भौरा महल, हम्मीर महल, जोगी महल, हम्मीर कचहरी और गुप्त गंगा जैसे दर्शनीय स्थल हैं।
- सुपारी महल राजस्थान की एकमात्र ऐसी इमारत है जिसके भीतर मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर तीनों एक साथ बने हैं।
- दुर्ग परिसर में जलापूर्ति के मुख्य स्रोतों के रूप में रनिहाड़ तालाब, पद्मला तालाब और मलिक तालाब स्थित हैं।

रणथम्भौर दुर्ग का साका-

- इस दुर्ग पर 11 जुलाई, 1301 को अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया। हम्मीर विश्वासघात के परिणामस्वरूप लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उनकी पत्नी रंगदेवी ने जौहर किया, यह राजस्थान का एकमात्र जल जौहर था।
- बाद में यह दुर्ग मेवाड़ के राणा साँगा के अधीन रहा। बाबर के विरुद्ध खानवा के युद्ध में लड़ते हुए घायल हो जाने पर राणा साँगा को रणथम्भौर लाया गया था।
- राणा सांगा ने यह किला अपनी **हाड़ी रानी कर्मावती** और उसके पुत्रों युवराज विक्रमादित्य और उदयसिंह को प्रदान किया था।
- मुगलकाल में रणथम्भौर दुर्ग का शाही कारागार के रूप में भी उपयोग किया गया।
- **जलालुद्दीन खिलजी** ने कहा कि मैं ऐसे 10 दुर्गों को मुसलमान के बाल के बराबर नहीं समझता।

आमेर दुर्ग

- कछवाहों की पुरानी राजधानी आमेर दुर्ग जयपुर के उत्तर में एक पर्वतीय ढलान पर अवस्थित है।
- महाराजा मानसिंह के शासनकाल से ही आमेर दुर्ग की स्थापत्य कला में विशेष उन्नति हुई थी।
- इस दुर्ग की स्थापत्य कला में हिन्दू एवं मुगल शैली का एक बेहद सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।
- मुगल सम्राट बहादुरशाह प्रथम ने 1707 ई. में इस पर अधिकार कर इसका नाम 'मोमिनाबाद' रख दिया था।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- दुर्ग का प्रथम प्रवेशद्वार 'जयपोल' है, जिसके भीतर बना विशाल प्रांगण 'जलेब चौक' कहलाता है।
- जलेब चौक के भीतर पूर्व और पश्चिम में दो छोटे दरवाजे बने हैं जो सूरजपोल और चाँदपोल कहलाते हैं।
- जलेब चौक से मुख्य महलों में प्रवेश करने के लिए 'सिंहपोल' नामक सुदृढ़ प्रवेशद्वार बना हुआ है।
- सिंहपोल के पार्श्व में शिलादेवी का मंदिर है, जिसमें महिषमर्दिनी की अत्यंत कलात्मक प्रतिमा स्थापित है।
- आमेर दुर्ग में शीशमहल, दीवाने आम, दीवाने खास, दिलखुश महल, सुहाग मंदिर, यश महल, बुखारा गार्डन और दिलाराम का बाग दर्शनीय हैं।
- राजा मानसिंह की पत्नी कनकावती ने अपने दिवंगत पुत्र की याद में 'जगत शिरोमणि मंदिर' बनवाया, जहाँ चित्तौड़ से लाई गई कृष्ण की काले पत्थर की मूर्ति है।
- सिंहपोल के पास स्थित प्रसिद्ध शीलामाता मंदिर में महिषमर्दिनी की कलात्मक प्रतिमा स्थापित है, जिसे राजा मानसिंह प्रथम बंगाल से जीतकर लाए थे।
- मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा निर्मित 'दीवान-ए-खास' में विशिष्ट सामंतों से मुलाकात होती थी, जबकि 'दीवान-ए-आम' में आम दरबार का आयोजन होता था।

- दुर्ग में स्थित 'सुख मंदिर' (या सुख महल) ग्रीष्मकाल के दौरान आमेर के राजाओं का मुख्य निवास स्थान हुआ करता था।
- इस ऐतिहासिक आमेर दुर्ग के ठीक नीचे की तलहटी में सुंदर मावठा झील और प्रसिद्ध केसर क्यारी स्थित है।
- फर्ग्युसन ने आमेर दुर्ग के इसी 'गणेश पोल' को वास्तुकला की दृष्टि से दुनिया का सर्वोत्तम और सबसे खूबसूरत दरवाजा कहा था।
- आमेर का यह प्रसिद्ध किला राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जिसके परिसर के भीतर ऐतिहासिक 'मीणा बाजार' स्थित है।
- विशप हैबर ने आमेर के महलों की तुलना करते हुए कहा था कि "मैंने जो कुछ क्रेमलिन में देखा और अलंभरा के बारे में सुना, ये महल उनसे कहीं बढ़कर हैं।"

डाक टिकट जारी–
- आंतरिक भाग में जाने हेतु सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित 'गणेश पोल' प्रवेश द्वार पर 1 जनवरी, 2017 को 25 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

मावठा जलाशय:
- इस किले के किनारे दादूदयाल ने रज्जब जी को उपदेश दिया।
- दीवान-ए-खास तथा गणेशपोल की छत्तों पर बने भव्य भवनों को यश मंदिर (जस मंदिर) व सुहाग मंदिर कहते है।

जयगढ़ (जयपुर)

- **उपनाम-** शाही निवास, रहस्यमयी दुर्ग, संकटमोचक दुर्ग, आमेर की तरफ झांकता किला, विचित्र रहस्यात्मक मण्डित किला, जादुई दुर्ग, कच्छवाहों का संकटमोचक दुर्ग, सर्वाधिक गुप्त सुरंगों वाला किला, जीतगढ़, विजय का किला।
- जगदीश सिंह गहलोत, डॉ. गोपीनाथ शर्मा और कुंवर देवीसिंह मण्डावा के अनुसार इसका निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह ने करवाया था।
- मिर्जा राजा जयसिंह के नाम पर ही इस प्रसिद्ध किले का नाम 'जयगढ़ दुर्ग' पड़ा।
- इस दुर्ग के निर्माण से पूर्व इस स्थान को 'चिल्ह (ईगल) का टोला' नाम से जाना जाता था।
- मध्यकालीन भारत में आमेर के इस जयगढ़ दुर्ग में तोप ढालने का एक विशाल और आधुनिक कारखाना स्थित था।
- इस किले में सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित 'जयबाण' तोप स्थित है, जिसे एशिया की सबसे बड़ी तोप माना जाता है।
- जयगढ़ दुर्ग में कई गुप्त सुरंगें होने के कारण इसे राजस्थान का 'रहस्यमय दुर्ग' भी कहा जाता है।
- यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा सुदृढ़ दुर्ग है जिस पर इतिहास में कभी भी कोई बाहरी आक्रमण नहीं हुआ।
- भारत में आपातकाल के दौरान प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के आदेश पर इस दुर्ग में गुप्त खजाने हेतु व्यापक खुदाई की गई थी।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-
- इस दुर्ग के तीन प्रमुख प्रवेश द्वार डूंगर दरवाजा, अवनी दरवाजा और भैरू दरवाजा (दुर्ग दरवाजा) हैं।
- दुर्ग के भीतर 'विजयगढ़ी' नामक एक लघु अंतः दुर्ग बना है, जो सशस्त्र किलेबंदी से पूरी तरह सुरक्षित है।
- सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजय सिंह को यहाँ कैद रखा था, जिनके नाम पर इसे विजयगढ़ी कहा जाता है।
- विजयगढ़ी के ठीक पार्श्व में एक 7 मंजिला ऊँचा प्रकाश स्तम्भ बना हुआ है, जिसे 'दीया बुर्ज' कहते हैं।
- यहाँ सुभट निवास (दीवान-ए-आम), खिलबत निवास (दीवान-ए-खास), जलेब चौक, लक्ष्मी निवास और ललित मंदिर स्थित हैं।
- दुर्ग परिसर में विलास मंदिर, सूर्य मंदिर, आराम मंदिर, राणावतजी का चौक, राम हरिहर और काल भैरव के प्राचीन मंदिर हैं।
- राजाओं और शाही परिवार के मनोरंजन हेतु इस ऐतिहासिक दुर्ग के भीतर एक विशेष कठपुतली घर भी बना हुआ है।
- जयगढ़ दुर्ग अपनी बेहतरीन जल संचयन प्रणाली और पानी के विशाल भूमिगत टांकों (कुंडों) के लिए प्रसिद्ध है।

नाहरगढ़ दुर्ग (जयपुर)

- महाराजा सवाई जयसिंह के शासनकाल के दौरान वर्ष 1734 ई. में इस किले का निर्माण करवाया गया था।
- यह किला जयपुर शहर के पहरेदार के रूप में दिखाई देता है, जिसे 'नाहरगढ़' यानी 'शेर का किला' कहा जाता है।
- उपनाम - जयपुर का मुकुट, मीठड़ी दुर्ग, सुदर्शनगढ़, जनाना क्वार्टर, महलों वाला दुर्ग, जयपुर की तरफ झांकता किला, जयपुर का मुकुट, आदि।
- इस किले में निर्मित भव्य 'माधवेन्द्र भवन' का उपयोग ग्रीष्मकाल में महाराजा के निवास के रूप में किया जाता था।
- वर्तमान में पर्यटकों के आकर्षण हेतु नाहरगढ़ महल परिसर के भीतर एक आधुनिक 'स्कल्पचर आर्ट गैलरी' भी बनाई गई है
- दुर्ग का नामकरण - नाहरसिंह भोमिया के नाम पर।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-
- इस दुर्ग में माधवेन्द्र भवन है, जिसका निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया।
- इस दुर्ग में नाहर सिंह भोमिया की छतरी स्थित है।
- इस दुर्ग में एक समान नौ महल है, जो विक्टोरिया शैली में निर्मित है, जिनका निर्माण महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने करवाया। (सुख प्रकाश, खुश प्रकाश, बसन्त प्रकाश, ललित प्रकाश, जवाहर प्रकाश, आनंद प्रकाश, चांद प्रकाश, लक्ष्मी प्रकाश)
- ये महल एक छोटी सुरंग द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं। (विक्टोरिया शैली में निर्मित) किले के अन्य प्रमुख भवनों में हवा मन्दिर, महाराजा माधोसिंह का अतिथिगृह, सिलहखाना आदि उल्लेखनीय हैं।
- 1857 ई. की क्रांति के समय सवाई रामसिंह द्वितीय ने अंग्रेजों को इसी किले में शरण दी थी।
- दुर्ग के भीतर प्रसिद्ध नाहरगढ़ की बावड़ी निर्मित है।
- दुर्ग के समीप नाहरगढ़ जैविक उद्यान एवं नीचे की तरफ गैटोर की छतरियाँ बनी हुई है।
- नाहरगढ़ दुर्ग में भगवान भी कृष्ण का सुदर्शन चक्र लिए मंदिर स्थित है।
- सवाई जगतसिंह की प्रेमिका रसकपूर कुछ समय तक इसी किले में कैद करके रखी गई थी।

तारागढ़ (अजमेर)

- यह ऐतिहासिक किला अजमेर की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है, जिसका निर्माण राजा अजयपाल चौहान द्वारा करवाया गया था।
- उपनाम- राजपुताना की कुंजी, अरावली का अरमान, राजस्थान का हृदय, गढ़ बीठली, राजस्थान का जिब्राल्टर।
- किले का मुख्य प्रवेश द्वार भव्य है, जिसके दोनों तरफ मजबूत विशाल रक्षक चौकियाँ और दो विशालकाय पत्थर के हाथी बने हैं।
- यह किला राजपूताना वास्तुशिल्प का बेमिसाल उदाहरण है, जो अजमेर आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षण है।
- यह प्रसिद्ध दुर्ग सूफी संत 'हजरत मीरां सैयद हुसैन खंगसवार' (मीरां साहब) की पवित्र दरगाह के लिए भी विख्यात है।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-
- इस दुर्ग के प्रमुख द्वारों में विजयपोल, लक्ष्मीपोल, फुटा दरवाजा, भवानीपोल, हाथीपोल, अरकोट दरवाजा तथा बड़ा दरवाजा शामिल हैं।

- तारागढ़ की प्राचीर में कुल 14 विशाल बुर्ज हैं, जिनमें घूंघट, नक्कारची, श्रृंगार चंवरी, इमली, फूटी, बांदरा और फतेह बुर्ज प्रमुख हैं।
- इनके अलावा प्राचीर में जानू नायक, पीपली, इब्राहीम शहीद, दोराई, गूगड़ी, खिड़की, सैय्यद और हुसैन बुर्ज भी बने हुए हैं।
- दुर्ग परिसर में जलापूर्ति के प्रमुख स्रोतों के रूप में नाना साहब का झालरा, गोल झालरा, इब्राहीम झालरा और बड़ा झालरा स्थित हैं।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग के भीतर मुस्लिम सूफी संत मीरां साहब (सैयद मीरन शाह) की पवित्र और प्रसिद्ध दरगाह बनी हुई है।
- तारागढ़ की पहाड़ी के ठीक नीचे 'शीशाखान' नामक एक अत्यंत प्राचीन और ऐतिहासिक गुफा स्थित है।
- यह गुफा फाईसागर के पास चामुण्डा माता मंदिर तक जाती है, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय देवी दर्शन हेतु जाते थे।
- इस प्राकृतिक गुफा की अनूठी विशेषता यह है कि यह ग्रीष्म ऋतु में बिल्कुल ठंडी और शीत ऋतु में गर्म रहती है।
- लॉर्ड विलियम बैंटिक ने इस दुर्ग को देखकर कहा "ओह! दूसरा जिब्राल्टर।"

मैग्जीन दुर्ग (अकबर का किला) अजमेर

- **निर्माण-** अकबर ने 1571-72 ई. में अजमेर नगर के मध्य अकबर के किला का निर्माण करवाया, जिसे मैगजीन दुर्ग भी कहते हैं।
- **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती** की दरगाह परिसर में बना है।
- मैग्जीन दुर्ग के प्रवेश द्वार को **जहाँगीरी पोल** के नाम से जानते हैं।
- ***अन्य नाम*** - अकबर का किला/अकबर का दौलतखाना/अकबर का शस्त्रागार/अजमेर का किला।
- यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है, जो पूर्णतया मुस्लिम/इस्लामिक स्थापत्य शैली में निर्मित है।
- इस दुर्ग की **नींव संत दादूदयाल** ने रखी।
- 1576 ई. में **हल्दीघाटी युद्ध की योजना** इस दुर्ग में बनी थी।
- 10 जनवरी, 1616 ई. को इंग्लैंड के सम्राट **जैम्स प्रथम** के राजदूत **सर टॉमस** रो ने इस दुर्ग में जहांगीर से मुलाकात की थी।
- जहाँगीर ने सर टॉमस रो को भारत में व्यापार करने की अनुमति इस दुर्ग में दी।
- **वायसराय लॉर्ड कर्जन** द्वारा वर्ष 1905 में इस दुर्ग का जीर्णोद्धार करवाया। मैग्जीन दुर्ग राजस्थान का एकमात्र दुर्ग जो पूर्ण रूप से **मुग़ल शैली में निर्मित** है। वर्ष 1908 में **राजपुताना संग्रहालय** की स्थापना इसी दुर्ग में हुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष हीरानंद ओझा बने।
- **1801 ई.** में अंग्रेजों ने इस किले पर अधिकार कर इसे अपना **शस्त्रागार** (मैग्जीन) बना लिया।
- यह दुर्ग 1857 की क्रांति के समय अंग्रेजों का मुख्य केंद्र था।
- अकबर के पुत्र दनियाल तथा शाहजहाँ के पुत्र शहजादा शुजा का जन्म इसी किले में हुआ।

टॉडगढ़ (ब्यावर)

- **निर्माण-** ब्यावर जिले में स्थित यह दुर्ग **कर्नल जेम्स टॉड** द्वारा निर्मित है, जिन्हें राजस्थान के इतिहास का जनक और घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जानते हैं।
- इस दुर्ग को बरसावाड़ा/बोरास्वाड़ा के नाम से भी जाना जाता है।
- गोपालसिंह खरवा और विजयसिंह पथिक को इसी दुर्ग में कैद रखा गया था।

गागरोण दुर्ग (झालावाड़)

- दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (झालावाड़) का यह अत्यंत प्राचीन किला कालीसिंध और आहू नदियों के संगम (सामेलजी) पर स्थित है।
- यह परमार शासकों द्वारा 12वीं सदी में निर्मित एक सुदृढ़ 'जल दुर्ग' या 'औदक दुर्ग' की श्रेणी का सबसे बेहतरीन उदाहरण है।
- इसका मूल निर्माण डोड परमार शासक बीजलदेव सिंह द्वारा करवाए जाने के कारण इसे 'डोडगढ़' या 'धूलरगढ़' भी कहा जाता है।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग के अन्य प्रसिद्ध उपनामों में शाहगढ़, गीधकराई (गीधकगढ़) और इसका प्राचीन नाम 'गर्गराटपुर' शामिल हैं।
- खींची चौहान राजवंश के संस्थापक देवनसिंह (धारू) ने 1195 ई. के पास डोड शासक बीजलदेव को हराकर इस पर अधिकार किया था।
- देवनसिंह खींची के वंशज देवीसिंह खींची ने आगे चलकर इस धूलरगढ़ का नाम बदलकर आधुनिक 'गागरोण' रखा था।
- इस दुर्ग की एक अनूठी विशेषता यह है कि यहाँ इंसानों की तरह बोलने वाले दुर्लभ 'हीरामन तोते' (गागरोणी तोते) पाए जाते हैं।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- गागरोण दुर्ग का तिहरा परकोटा 'जालिमकोट' कहलाता है, जिसका निर्माण कोटा के प्रसिद्ध सेनापति झाला जालिम सिंह द्वारा करवाया गया था।
- दुर्ग परिसर के भीतर महान भक्ति संत पीपा की पवित्र छतरी और साधना गुफा स्थित है।
- यहाँ के भव्य 'बुलन्द दरवाजा' का निर्माण मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा विजय के उपलक्ष्य में करवाया गया था।
- दुर्ग में स्थित 'मधुसूदन मंदिर' का निर्माण कोटा के राव दुर्जनशाल द्वारा भगवान विष्णु के सम्मान में करवाया गया था।
- यहाँ ऐतिहासिक जौहर कुण्ड और रहस्यमयी 'अंधेरी बावड़ी' स्थित है, जो प्राचीन काल में जल संचयन का मुख्य साधन थीं।
- दुर्ग के भीतर सूफी संत हमीदुद्दीन चिश्ती (मिट्ठे साहब) की प्रसिद्ध दरगाह स्थित है, जो सांप्रदायिक सौहार्द का प्रमुख केंद्र है।
- **ढेंकुली:** यह प्राचीन काल में दुर्ग की रक्षा हेतु शत्रुओं पर भारी पत्थर वर्षा करने वाला एक प्रमुख सैनिक यंत्र था।
- **अरार्दा:** दुर्ग सुरक्षा में प्रयुक्त होने वाला यह एक ऐसा विशेष यंत्र था जिससे शत्रुओं पर ज्वलनशील पदार्थ फेंके जाते थे।
- **गीधकराई:** यह गागरोण दुर्ग का सबसे ऊँचा भाग है, जहाँ से राजनीतिक अपराधियों या कैदियों को नीचे फेंककर मृत्युदण्ड दिया जाता था।
- **कोटा राज्य की टकसाल:** गागरोण दुर्ग परिसर के भीतर पूर्व में कोटा रियासत के सिक्कों की ढलाई हेतु एक राजकीय टकसाल भी स्थित थी।

गागरोण दुर्ग का इतिहास :

- वर्ष **1303** ई. में गागरोण के खींची शासक जैतसी ने दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण को पूरी तरह विफल कर दिया था।
- वर्ष **1532** ई. में गुजरात के बहादुरशाह, **1542** ई. में शेरशाह सूरी और **1562** ई. में मुगल सम्राट अकबर ने इस दुर्ग पर अधिकार किया था।
- अकबर ने बीकानेर के प्रसिद्ध कवि पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल / डिंगल का हैरोस) को गागरोण दुर्ग जागीर के रूप में प्रदान किया था।
- पृथ्वीराज राठौड़ ने गागरोण दुर्ग में रहते हुए ही **1580** ई. के आसपास अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेलि क्रिसन रुक्मणी री' की रचना की थी।
- इस ऐतिहासिक 'वेलि क्रिसन रुक्मणी री' ग्रंथ की साहित्यिक शैली डिंगल तथा मुख्य भाषा उत्तरी मारवाड़ी है।

दुर्ग में हुए दो प्रमुख साके

साका	वर्ष	विवरण
प्रथम साका	1423 ई.	होशंगशाह ने गागरोन पर आक्रमण किया, अचलदास खींची ने केसरिया किया, महिलाओं ने जौहर किया **जानकारी** - अचलदास खींची री वचनिका (चंपू शैली) **लेखक** - शिवदास गाडण **भाषा** - डिंगल
द्वितीय साका	1444 ई.	महमूद खिलजी-प्रथम का आक्रमण, पाल्हणदास के नेतृत्व में केसरिया, महिलाओं ने जौहर किया **नोट** – महमूद खिलजी–I ने यहाँ पर एक कोट (किले) का निर्माण करवाकर गागरोन दुर्ग का नाम बदलकर **'मुस्तफाबाद'** कर दिया।

- यह राज्य का एकमात्र दुर्ग है, जो बिना नींव के एक चट्टान पर सीधा खड़ा है।

दुर्गों की पहचान

दुर्ग	पहचान
लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर)	मिट्टी से निर्मित दुर्ग सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग
भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ)	सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग सबसे प्राचीन
सोनारगढ़ दुर्ग (जैसलमेर)	सर्वाधिक बुर्जों वाला किला
तारागढ़ दुर्ग (अजमेर)	सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण झेलने वाला दुर्ग
मोहनगढ़ दुर्ग (जैसलमेर)	राजस्थान का नवीनतम (अंतिम) दुर्ग
मण्डोर दुर्ग (जोधपुर)	बौद्ध शैली में निर्मित किला
फतेहपुर दुर्ग (सीकर)	पठानशैली में निर्मित किला
अकबर दुर्ग (अजमेर)	मुस्लिम शैली से निर्मित किला

लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर)

- इस प्रसिद्ध दुर्ग का निर्माण भरतपुर के महाराजा सूरजमल द्वारा वर्ष 1733 ई. में करवाया गया था।
- चारों ओर गहरी और चौड़ी खाई से घिरे होने के कारण यह दुर्ग मुख्य रूप से 'पारिख दुर्ग' की श्रेणी में आता है।
- अपने अदम्य साहस और कभी न जीते जाने के इतिहास के कारण इसे 'लोहागढ़' और 'अजयगढ़' कहा जाता है।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग को 'खेमकरण जाट की कुटिया' और 'मिट्टी का किला / दुर्ग' के नाम से भी जाना जाता है।
- भौगोलिक स्थिति के कारण इसे 'राजस्थान का सिंहद्वार' और 'पूर्वी सीमांत का प्रहरी' (पूर्वी सीमा का रक्षक) कहा जाता है।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- भरतपुर के इस दुर्ग के भीतर महाराजा सूरजमल की रानी के नाम पर बना प्रसिद्ध 'किशोरी महल' स्थित है।
- दुर्ग परिसर के मुख्य स्थापत्य में 'लक्ष्मी महल' अपनी सुंदरता और भव्यता के लिए जाना जाता है।
- यहाँ शाही परिवार से संबंधित ऐतिहासिक 'दादी माँ का महल' और 'महल खास' भी दर्शनीय स्थल हैं।
- प्रशासनिक और राजकीय उपयोग हेतु यहाँ 'कोठी खास' और 'वजीर की कोठी' नामक महत्वपूर्ण इमारतें बनी हुई हैं।
- दुर्ग के भीतर 'राजेश्वरी माता का मंदिर' स्थित है, जो भरतपुर के सिनसिनवार जाट राजवंश की कुलदेवी हैं।
- यहाँ के 'गंगा माता मंदिर' का निर्माण कार्य 1845 ई. में महाराजा बलवन्त सिंह द्वारा प्रारंभ करवाया गया था।
- इस भव्य गंगा माता मंदिर के निर्माण को आगे चलकर महाराजा बृजेन्द्र सिंह ने पूर्ण करवाया था।
- इस संपूर्ण मंदिर को पूरी तरह से बनकर तैयार होने में लगभग 90 वर्ष का लंबा समय लगा था।
- दुर्ग परिसर के अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों में प्रसिद्ध 'लक्ष्मण मंदिर' और 'बिहारी जी का मंदिर' स्थित हैं।
- इन प्रमुख हिंदू मंदिरों के साथ-साथ इस ऐतिहासिक दुर्ग परिसर के भीतर एक 'जामा मस्जिद' भी बनी हुई है।
- इस दुर्ग के परकोटे में कुल 8 विशाल बुर्जें और 40 अर्धचन्द्राकार बुर्जें बनी हुई हैं।
- महाराजा जवाहर सिंह ने 1765 ई. में अपनी ऐतिहासिक दिल्ली विजय की याद में 'जवाहर बुर्ज' का निर्माण करवाया था।
- इस प्रसिद्ध जवाहर बुर्ज के ऊपर ही भरतपुर रियासत के जाट शासकों का राजकीय राजतिलक किया जाता था।
- महाराजा रणजीत सिंह ने 1806 ई. में ब्रिटिश सेना (अंग्रेजों) पर अपनी जीत के उपलक्ष्य में 'फतेह बुर्ज' बनवाया था।
- अंग्रेज अधिकारी लॉर्ड लेक ने जनवरी 1805 से अप्रैल 1805 ई. के मध्य इस दुर्ग पर 5 बार असफल आक्रमण किए थे।
- ब्रिटिश सेना की इस करारी हार के संबंध में लोक में प्रसिद्ध उक्ति "गोरा हट जा रे राज भरतपुर को" प्रचलित है।
- लोहागढ़ दुर्ग की सुरक्षा व्यवस्था हेतु इसके चारों ओर विशेष रूप से 2 प्राचीरें (दीवारें) बनी हुई हैं।
- इसकी पहली 'बाहरी प्राचीर' पूरी तरह से मिट्टी की मोटी परतों से निर्मित की गई है।
- मिट्टी की बनी होने के कारण दुश्मनों के तोप के गोले धँस जाते थे और इसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा पाते थे।
- इसकी दूसरी 'भीतरी प्राचीर' का निर्माण मजबूती प्रदान करने के लिए ईंट और पत्थरों से किया गया है।
- जनवरी 1826 ई. में ब्रिटिश सेनापति लॉर्ड कोम्बरमेयर ने आक्रमण कर भरतपुर दुर्ग पर अधिकार कर लिया था।
- लोहागढ़ दुर्ग की अचूक सुरक्षा के लिए इसके चारों तरफ गहरी 'सुजानगंगा खाई' (नहर) बनी हुई है।
- इस सुजानगंगा नहर में जल की आपूर्ति ऐतिहासिक 'मोती झील' से नहर के माध्यम से की जाती थी।
- मोती झील को विशेष भौगोलिक महत्ता के कारण 'भरतपुर की जीवन रेखा' कहा जाता है।
- इस जीवन रेखा रूपी मोती झील का निर्माण मुख्य रूप से बाणगंगा और रूपारेल नदियों के जल पर किया गया है।
- लोहागढ़ दुर्ग का मुख्य उत्तरी द्वार प्रसिद्ध 'अष्टधातु दरवाजा' कहलाता है।
- महाराजा जवाहर सिंह 1765 ई. में इसे दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से उखाड़कर लाए थे।
- इस सुदृढ़ और सुरक्षित दुर्ग का दक्षिणी द्वार 'लोहिया दरवाजा' कहलाता है।
- इस ऐतिहासिक लोहागढ़ दुर्ग में प्रवेश हेतु कुल 10 प्रवेश द्वार बने हुए हैं।
- इन सभी प्रवेश द्वारों में यहाँ का 'सूरजपोल' सबसे प्रमुख और विशाल द्वार है।

बयाना दुर्ग (भरतपुर)

- यह दुर्ग भरतपुर के बयाना में दमदमा या मानी पहाड़ी पर स्थित है।
- स्थापत्य और भौगोलिक दृष्टि से यह पहाड़ी, पर्वतीय या गिरि दुर्ग की श्रेणी में आता है।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग का निर्माण शासक विजयपाल द्वारा वर्ष 1040 ई. में करवाया गया था।
- इसके प्रसिद्ध उपनामों में 'विजयमंदिर किला' और 'बादशाह का किला' शामिल हैं।
- इसके प्राचीन नामों में शोणितपुर, श्रीप्रस्थ, श्रीपथ, संतपुर और रामगढ़ उल्लेखनीय हैं।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- इस दुर्ग परिसर के भीतर ऐतिहासिक अकबरी छतरी और जहाँगीरी दरवाजा स्थित हैं।
- यहाँ मध्यकालीन वास्तुकला के उदाहरण सादुल्ला सराय, लोदी मीनार और दाउद खाँ की मीनार बने हुए हैं।
- दुर्ग के मुख्य दर्शनीय स्थलों में एक सुंदर बारहदरी (बारह दरवाजों वाला मंडप) भी शामिल है।
- यहाँ प्रसिद्ध ऊषा मंदिर स्थित है, जिसका निर्माण राजा लक्ष्मणसेन की रानी चित्रलेखा द्वारा 956 ई. में करवाया गया था।
- वर्ष 1224 ई. में दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश ने इस प्राचीन ऊषा मंदिर को तोड़कर 'ऊषा मस्जिद' में बदल दिया था।
- 18वीं शताब्दी में भरतपुर के जाट शासकों ने इस ऊषा मस्जिद को पुनः 'ऊषा मंदिर' के मूल रूप में परिवर्तित कर दिया।
- बयाना दुर्ग में स्थित 'भीम लाट' को राजस्थान का प्रथम विजय स्तंभ माना जाता है।
- इसका निर्माण गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के शासनकाल में 363 ई. में वरीक विष्णुवर्धन ने करवाया था।
- गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने वर्ष 360 ई. में बयाना क्षेत्र पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया था।

- बयाना के पास स्थित 'नगला' नामक स्थान से समुद्रगुप्त के काल के सोने के प्रचुर सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- मध्यकाल (इतिहास) में बयाना का यह संपूर्ण क्षेत्र विशेष रूप से उच्च गुणवत्ता वाली नील की खेती के लिए प्रसिद्ध था।
- डच यात्री फ्रेंकोइस पेल्सार्ट ने 1618 ई. में बयाना की यात्रा कर यहाँ होने वाली नील की खेती का प्रमुखता से उल्लेख किया है।

तारागढ़ दुर्ग (बूँदी)

- बम्बावदे के हाड़ा शासक देवासिंह (राव देवा) ने बून्दू घाटी के अधिपति जैता मीणा को पराजित कर बूँदी में अपनी राजधानी स्थापित की थी।
- **निर्माण -** राव बरसिंह द्वारा **1354** ई. में।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **नामकरण-** धरती से आकाश के तारे के समान दिखलाई पड़ने के कारण तारागढ़।
- **प्रवेश द्वार -** हाथी पोल, गणेश पोल, हजारी पोल, पाटन पोल, भैरव पोल एवं शकल बारी दरवाजा।
- '**गर्भ गुंजन**' तोप इसी दुर्ग में रखी हुई है।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने बूँदी के राजमहलों को राजस्थान के सभी राजप्रासादों में सर्वश्रेष्ठ बताया है।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- **प्रमुख महल -** छत्र-महल, अनिरुद्ध महल, रतन-महल, बादल-महल, फूल महल।
- बूंदी के राजमहलों के भीतर अनेक दुर्लभ एवं जीवन्त भित्तिचित्रों के रूप में कला का एक अनमोल खजाना विद्यमान है।
- अन्य भवनों में दीवान-ए-आम, सिलहखाना, नौबतखाना, दूधा महल, अश्वशाला आदि हैं।
- मेवाड़ महाराणा राणा लाखा ने इस दुर्ग को जीतने की प्रतिज्ञा पूर्ण न करने पर मिट्टी का नकली दुर्ग बनाकर उसे ध्वस्त करके अपनी कसम पूरी की।
- यहाँ स्थित **84** खम्भों की छतरी, शिकार बुर्ज, फूलसागर, जैतसागर और नवलसागर सरोवर बूँदी के वैभव को दर्शाते हैं।
- महाराव उम्मेदसिंह के काल में निर्मित **चित्रशाला** (**रंगविलास**) बूँदी चित्रशैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- बूंदी के दुर्ग में स्थित रंगमहल (राव शुत्रशाल द्वारा निर्मित) रतन दौलत दरी खाना (बूंदी के शासकों का राजतिलक स्थल), जीवरक्खा महल आदि दर्शनीय स्थल है।
- सिटी पैलेस के बाहर दो विशालकाय पाषाण मूर्तियां लगी है -

(1) **शिवप्रसाद हाथी –** शाहजहां ने यह हाथी छत्रशाल (राजा शत्रुशाल) को भेंट किया था।

(2) **हंजा/हूंजा घोड़ा –** यह राव उम्मेद सिंह का घोड़ा था।

- इस तारागढ़ (बूंदी को) तिलीस्मी किला (गुप्त सुरंगों की अधिकता के कारण), महलों का परिसर और **हाड़ौती का प्राचीन** दुर्ग कहते है।

सिवाणा दुर्ग

- इस दुर्ग का निर्माण 954 ई. (10वीं सदी) में परमार शासक वीर नारायण पंवार द्वारा हल्देश्वर पहाड़ी पर करवाया गया था।
- सुरक्षा और बनावट की दृष्टि से यह किला मुख्य रूप से गिरि दुर्ग, सहाय दुर्ग और कूमट दुर्ग की श्रेणियों में आता है।
- यहाँ कूमट नामक झाड़ी अधिक संख्या में पाई जाती है, जिसके कारण इस किले को 'कूमट दुर्ग' या 'कुमठ दुर्ग' भी कहते हैं।
- इस ऐतिहासिक दुर्ग का प्रारंभिक नाम 'कुम्थाना' था और इसे 'कुम्भाणा दुर्ग' के नाम से भी जाना जाता है।
- अपनी अभेद्य सुरक्षा के कारण यह दुर्ग मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ राजाओं की संकटकालीन राजधानी या मुख्य शरणस्थली रहा है।
- वीर और अदम्य इतिहास के कारण इसे 'अणखलौ सिवाणौ' और सामरिक महत्व के कारण 'जालौर दुर्ग की कुंजी' कहा जाता है।

दुर्ग में हुए दो प्रमुख साके

साका	विवरण
प्रथम साका (1308 ई.)	अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण, रक्षक सातलदेव सोनगरा; दुर्ग का नाम खैराबाद रखा; बाद में जैतमाल वंश का अधिकार; अमीर खुसरो ने वीरता की प्रशंसा की
द्वितीय साका	अकबर का आक्रमण (मोटा राजा उदयसिंह के नेतृत्व में); वीर कल्ला रायमलोत वीरगति को प्राप्त; हाड़ी रानी व स्त्रियों ने जौहर किया

- राव मालदेव ने गिरी सुमेल के युद्ध (जनवरी 1544 ई.) के बाद शेरशाह की सेना के द्वारा पीछा किये जाने पर सिवाणा के किले में आश्रय लिया था।
- इसके बाद उनके पुत्र चन्द्रसेन ने सिवाणा के किले को केन्द्र बनाकर मुगल बादशाह अकबर की सेनाओं का लम्बे अरसे तक प्रतिरोध किया।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- दुर्ग में कल्ला रायमलोत का थड़ा, महाराजा अजीतसिंह का दरवाजा, हलदेश्वर महादेव का मंदिर आदि दर्शनीय हैं।
- यह दुर्ग मारवाड़ के शासकों की संकटकाल में शरणस्थली के रूप में प्रसिद्ध है।
- 'शेर-ए-राजस्थान' नाम से विख्यात जयनारायण व्यास को इसी दुर्ग में बंदी बनाकर रखा गया।

नागौर दुर्ग

- इस प्राचीन किले को इतिहास में 'अहिच्छत्रपुर दुर्ग' और 'नागदुर्ग' के प्रसिद्ध उपनामों से जाना जाता है।
- प्राचीन शिलालेखों और साहित्यिक ग्रन्थों में इस ऐतिहासिक क्षेत्र के नागउर, नागपुर और नागाणा नाम भी मिलते हैं।
- इस दुर्ग का निर्माण विक्रम संवत **1211** में चौहान शासक सोमेश्वर के सामन्त कैमास द्वारा करवाया गया था।
- बनावट की दृष्टि से यह किला मुख्य रूप से 'धान्वन दुर्ग' (मरुस्थली किला) और 'स्थल दुर्ग' की श्रेणी में आता है।
- यह ऐतिहासिक दुर्ग दिल्ली दरबार को चुनौती देने वाले वीर शिरोमणि अमरसिंह राठौड़ के शौर्य एवं स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध है।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- दुर्ग में प्रवेश हेतु क्रमशः सिराई पोल, बिचली पोल, कचहरी पोल, सूरज पोल, धूपी पोल व राज पोल नामक **6** दरवाजे बने हैं।
- इसके परकोटे में सुरक्षा हेतु कुल **28** गोल बुर्जे बनी हैं और किले के भीतर सुंदर भित्तिचित्रों वाले बादल महल व शीश महल स्थित हैं।
- मुगल सम्राट अकबर ने **1570** ई. के नागौर दरबार के दौरान यहाँ जलापूर्ति हेतु प्रसिद्ध 'शुक्र तालाब' का निर्माण करवाया था।
- अकबर ने यहाँ एक सुंदर फव्वारा और 'अकबरी मस्जिद' बनवाई थी, तथा दुर्ग के पास वीर अमरसिंह राठौड़ की ऐतिहासिक छतरी स्थित है।
- दुर्ग के अन्य मुख्य दर्शनीय स्थलों में तारकीन की दरगाह, ज्ञानी तालाब, वंशीवाला मंदिर, वरमाया मंदिर और प्राचीन अन्न गोदाम शामिल हैं।
- इस दुर्ग की अनूठी विशेषता यह है कि बाहर से दागे गए तोपों के गोले महलों को बिना क्षति पहुँचाए ऊपर से सीधे निकल जाते थे।

शाहबाद का किला (बारां)

- इसका निर्माण चौहान राजा मुकुट मणिदेव ने 1521 ई. में करवाया।
- यह किला शाहबाद कस्बे के पास एक भामती नामक पहाड़ी पर कुनु नदी के किनारे बना है।
- **बाला किला -** शाहबाद किले के अंदर बना एक चतुष्कोणीय महल है।
- **कहावत -** ब्राह्मणों ने इस किले को लड्डूओं के बदले खो दिया था।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

- **बादल महल -** इसका निर्माण चौहान राजा इंद्रमन ने करवाया था

- **अलल पंख -** बादल महल के दरवाजों पर बनी प्रतिमाएँ अलल पंख कहलाती हैं। इसमें एक विशाल पक्षी को अपने पैरों में हाथियों को लेकर उड़ता दिखाया गया है। वर्तमान में ये प्रतिमाएँ जिला कलेक्टर कार्यालय में लगा रखी हैं।
- नवलबाण तोप, कुण्डाखोह झरना स्थित है।
- **जामा मस्जिद –** इसे औरंगजेब के आदेश पर उसके फौजदार शेर अफगान ने दिल्ली की जामा मस्जिद की तर्ज पर इसे बनवाया था। यह राजस्थान की सबसे बड़ी मस्जिद है।
- औरंगजेब दक्षिण भारत के अभियान के दौरान यहीं विश्राम करता था।
- शेरशाह सूरी कालिंजर अभियान के दौरान इस पर अधिकार करके यहाँ रूका। अपने पुत्र सलीम के नाम पर इसका नाम '**सलीमाबाद**' रखा और जब यह मुगलों के अधिकार में आया तब इसका नाम शाहबाद हो गया।
- **शा**हबाद नगर शाहजहाँ द्वारा 1642 ई. में बसाया गया था।
- भीतर 8 खंभों की थानेदार नाथ सिंह की छतरी है।

बाड़मेर क़िला

- इस दुर्ग का निर्माण **1552** ई. में यहाँ के तत्कालीन शासक रावत भीमा द्वारा करवाया गया था।
- रावत भीमा ने पुराने शहर (जूना गाँव) को वर्तमान बाड़मेर के स्थान पर स्थानांतरित कर यहाँ इस किले को बनवाया।
- शहर के बिल्कुल शीर्ष भाग पर स्थित होने के कारण इस सुदृढ़ किले को 'बाड़मेर गढ़' के रूप में भी जाना जाता है।
- इस ऐतिहासिक किले का मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर दिशा में है**,** जबकि सुरक्षा बुर्ज पूर्वी और पश्चिमी दिशाओं में बने हैं।
- चारों ओर से प्राचीन मंदिरों तथा पहाड़ियों से घिरा होने के कारण यह किला पूर्ण रूप से सुरक्षित और अभेद्य है।

गुगोर क़िला(बारां)

- यह ऐतिहासिक किला बारां जिला मुख्यालय से लगभग **65** किलोमीटर और छबड़ा शहर से सिर्फ **8** किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
- यह किला गूगोर गाँव में एक ऊँची पहाड़ी पर गर्व से खड़ा है**,** जो अपनी सुदृढ़ भौगोलिक स्थिति के लिए जाना जाता है।
- यह दुर्ग बारहमासी पार्वती नदी के पवित्र तट पर स्थित है**,** जो इसे प्राकृतिक रूप से बेहद सुंदर और सुरक्षित बनाता है।

खंडार किला (सवाई माधोपुर)

- सवाई माधोपुर जिला मुख्यालय से लगभग **45** किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'खंडार किला' पर्यटकों के लिए एक बेहद भव्य स्थल है।
- इस वैभवशाली और अजेय किले के बारे में यह प्रसिद्ध लोक मान्यता है कि यहाँ के राजाओं ने कभी भी हार का सामना नहीं किया।
- मेवाड़ के प्रतापी सिसोदिया राजवंश के राजाओं ने लंबे समय तक इस सुरक्षित दुर्ग में रहकर कुशलतापूर्वक राज किया था।
- सिसोदिया शासकों के पश्चात इस सामरिक रूप से महत्वपूर्ण और सुदृढ़ किले पर अंततः मुगलों ने विजय प्राप्त कर अधिकार कर लिया था।

खींवसर क़िला (नागौर)

- नागौर किले का मूल निर्माण दूसरी शताब्दी में नाग वंश के शासकों द्वारा करवाया गया था।
- यह प्राचीन किला थार रेगिस्तान के पूर्वी किनारे पर स्थित है और इसका लगभग **500** वर्षों का एक समृद्ध लिखित इतिहास है।
- मुगल इतिहास में विशेष स्थान रखने वाले इस सुदृढ़ दुर्ग परिसर के भीतर कभी मुगल सम्राट औरंगजेब ने भी निवास किया था।
- इस दुर्ग को वर्तमान में आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कर पर्यटकों हेतु एक शानदार हेरिटेज होटल के रूप में बदल दिया गया है।

शेरगढ़ (बारां)

- इस दुर्ग का निर्माण **नागवंशीय शासकों** ने करवाया। उस समय इसका नाम **कोशवर्धन** था, परन्तु बाद में शेरशाह सूरी के नाम पर शेरगढ़ रखा गया। इस दुर्ग में **रावल महल** स्थित है।
- **झालाओं की हवेली–** निर्माण कोटा के दीवान जालिम सिंह झाला ने (उम्मेद सिंह का दीवान) ने करवाया।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण आकर्षण–** टोंक के नवाब की हवेली, अमीर खाँ
- पिण्डारी टोक के महल, पाटन वालों की हवेली, प्राचीन बावड़ी, सोमनाथ मंदिर, तेलीयों का मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर
- एकमात्र दुर्ग जिसमें बौद्ध विहार एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिलते हैं।
- मुगल सम्राट फर्रूखसियर ने इसे कोटा महाराव भीमसिंह प्रथम (1707-1720 ई.) को पुरूस्कार स्वरूप प्रदान किया था। भीमसिंह ने इसका नाम बदलकर **"बरसाना"** रखा।

अन्य प्रमुख दुर्ग

दौसा का किला

- **निर्माण-** दौसा जिले में देवगिरि पहाड़ी पर गुर्जर-प्रतिहारों **(**बड़गुर्जरों**)** द्वारा निर्मित।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग। **आकार -** छाजले के समान।
- इस दुर्ग को **11**वीं सदी में कच्छवाहों ने बड़गुजरों से छीन लिया था। **प्रवेश द्वार** - हाथी पोल एवं मोरी दरवाजा।
- इस दुर्ग में प्रसिद्ध '**राजाजी का कुआँ**' तथा **बैजनाथ महादेव मंदिर** स्थित है। इस दुर्ग में '**14** राजाओं की साल' है।
- दादूपंथी नागा संप्रदाय के प्रवर्तक **सन्त सुन्दरदास जी** का जन्म स्थान माना जाता है।

डीग का किला

- **निर्माण -** बदन सिंह ने।
- दुर्ग के भीतर **सुरजमहल** स्थित है।
- इस दुर्ग के किनारे **जल महल** स्थित है।
- राजस्थान में जलमहलों की नगरी - डीग।
- इस दुर्ग में लाखा तोप स्थित है।

बाला किला (अलवर)

- **निर्माण –** अलघुराय द्वारा 1049 ई. में एक छोटी गढ़ी का निर्माण करवाया था।
- **उपनाम -** 52 दुर्गों का लाड़ला, आँख वाला किला व कुंवारा किला।
- कहा जाता है कि अलघराय के पुत्र सागर से निकुम्भ क्षत्रियों ने यह गढ़ी छीन ली थी, फिर विस्तार से इस दुर्ग का निर्माण करवाया।
- निकुम्भों से भी बाद में अलावत खान ने इस दुर्ग को छीन लिया और उसने यहाँ विशाल द्वार और परकोटा बनवाया।
- हसन खाँ मेवाती का भी इस पर अधिकार रहा है।
- बाबर-इब्राहिम लोदी युद्ध में अलावत खान के मरने के बाद यह दुर्ग बाबर के अधिकार में आ गया। खानवा विजय के बाद बाबर इस किले में कुछ समय के लिए रूका था। बाबर ने बाद में अपने सामन्त 'चैन सुल्तान' को यह दुर्ग सौंप दिया। उसने इस पर एक बुर्ज भी बनवायी जिसे आज भी 'काबुल खुर्द' के नाम से जाना जाता है।
- अकबर ने अपने पुत्र सलीम को तीन वर्ष तक यहीं नजरबंद रखा। (सलीम महल में)
- अलवर के शासक प्रतापसिंह ने अलवर राज्य की स्थापना के समय इस पर अधिकार कर लिया और सीताराम का मंदिर बनवाया।
- दुर्ग के संग्रहालय में मुगल शासकों की तलवारें, हैदर अली की तलवार आदि प्रदर्शित है।
- इसमें बने सलीम सागर कुंड व सुरजकुण्ड किले के प्रमुख जलस्रोत हैं।
- बाला किला में **सलीम महल, हैंगिंग महल व झूला महल** स्थित है।

भानगढ़ किला (अलवर)

- **निर्माण -** माधोसिंह ने 1631 ई. में करवाया।
- इस दुर्ग में **मेंहदी महल** स्थित है।
- यह दुर्ग सरिस्का से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
- यह दुर्ग सरिस्का अभयारण्य की सीमा के पास पहाड़ी पर स्थित है। वर्तमान समय में यह किला खंडर **आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया** द्वारा संरक्षित है।

कुचामन का किला

- इसे **'जागीरी किलों का सिरमौर'** कहा जाता है।
- इसका निर्माण **गौड राजपूतों द्वारा** करवाया गया।
- कुचामन के किले को **अणखला किला** भी कहते हैं क्योंकि इस किले का शत्रु सेना के सामने पतन नहीं हुआ।

मांडलगढ़ दुर्ग (भीलवाड़ा)

- यह गिरि दुर्ग भीलवाड़ा जिले में बनास, बेड़च व मेनाल नदियों की त्रिवेणी पर बीजासन पहाड़ी स्थित है।
- इस दुर्ग का निर्माण **मंडिया भील** द्वारा करवाया गया। इसका पुनर्निर्माण महाराणा कुंभा द्वारा करवाया गया।
- शृंगी ऋषि शिलालेख के अनुसार मंडलाकृति (कटोरेनुमा) होने के कारण इसका नाम मांडलगढ़ पड़ा।
- यह स्थान सिद्ध योगियों का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है, यहाँ स्थित उंडेश्वर मंदिर में मच्छेन्द्रनाथ योगी रहा करते थे।
- **प्रमुख स्थल -** चारभुजानाथ मंदिर व ऋषभदेव जैन मंदिर, सागर ओर सागरी नामक दो पानी के तालाब, जालेश्वर तालाब व देवसागर "तालाब, मदीना मस्जिद बनी है।
- यह दुर्ग **जल और औदक दुर्ग** श्रेणी का है।
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले मानसिंह प्रथम ने 2 माह तक इसी किले में रहकर शाही सेना को युद्ध के लिए तैयार किया था।

अचलगढ़ दुर्ग (सिरोही)

- **निर्माण-** परमार शासकों द्वारा **9**वीं सदी में आबू (सिरोही) में निर्मित, इस दुर्ग का पुनर्निर्माण 1452 ई. में मेवाड़ के **महाराणा कुंभा** ने करवाया।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **प्रवेश द्वार -** हनुमान पोल, गणेश पोल, चम्पा पोल, भैरव पोल।
- **प्रमुख दर्शनीय स्थल-** अचलेश्वर महादेव मंदिर, मन्दाकिनी कुण्ड, सावन-भादो झील, ओखा रानी का महल आदि।
- मन्दाकिनी कुण्ड के किनारे सिरोही के महाराव मानसिंह की स्मारक छतरी है।
- **भंवराथल-** यहाँ आक्रमणकारी महमूद बेगड़ा एवं उसके सैनिकों पर मधुमक्खियों ने आक्रमण कर दिया था।
- इस दुर्ग के पास ही **भर्तृहरि की गुफा** हैं।

नवलखा दुर्ग (झालावाड़)

- नवलखा दुर्ग का निर्माण 1860 ई. में झाला पृथ्वीसिंह द्वारा करवाया गया।
- एकमात्र दुर्ग जिसका निर्माण कार्य अभी तक जारी है।

भैंसरोडगढ़ दुर्ग ,चित्तौड़गढ़

- कर्नल टॉड के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण **भैंसाशाह** नामक व्यापारी तथा **रोड़ा चारण** ने पर्वतीय लुटेरों से अपने व्यापारिक काफिले की रक्षार्थ करवाया था ताकि वर्षा काल में यह दुर्ग उनका आश्रय स्थल बन सके।
- **कर्नल टॉड का कथन -** यदि मुझे राजपूताना में एक जागीर की पेशकश की जाए तो मैं **भैंसरोडगढ़** चुनूँगा।
- अरावली पर्वतमाला की विशाल घाटी में यह दुर्ग स्थित है जो **चम्बल व बामनी नदियों** के संगम स्थल पर स्थित तीनों ओर से प्रभूत जल राशि से घिरा है।
- इसे **'राजस्थान का वेल्लोर'** कहा जाता है।

चूरू का किला

- **निर्माण-** 1739 ई. में ठाकुर कुशालसिंह द्वारा
- इस दुर्ग में गोपीनाथ मंदिर दर्शनीय है।
- अपनी आजादी व अस्मिता के लिए इस दुर्ग में ठाकुर शिवसिंह ने 1814 में गोले-बारुद खत्म होने पर दुश्मनों पर चाँदी के गोले दागे।

शेरगढ़ दुर्ग (धौलपुर)

- **निर्माण-** इसका निर्माण चंबल नदी के किनारे मालदेव ने करवाया। प्राचीन मान्यता के अनुसार 11 वीं शताब्दी में धौलपुर नगर की स्थापना करने वाले धोरापाल/धौलनदेव नामक व्यक्ति ने इसका जीर्णोद्धार कराया और इसी के नाम से इसे धौलपुर दुर्ग या धौलदेहरागढ़ कहा जाता है।
- इसे **दक्खिन का द्वारगढ़** कहते हैं।
- राजस्थान का एकमात्र किला जो राजस्थान उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है।
- **श्रेणी -** गिरि दुर्ग
- यह साम्प्रदायिक सद्भाव का जीता जागता नमूना है जिसमें एक तरफ सद्दीक खाँ का मकबरा तथा दूसरी तरफ हनुमानजी का मन्दिर है।
- शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित सैय्यद की मजार इसी दुर्ग में है।
- अष्टधातु से निर्मित विशाल '**हुनहुंकार**' तोप इसी दुर्ग में है, जिसका निर्माण महाराजा कीरत सिंह जी द्वारा करवाया गया, जो वर्तमान में इंदिरा पार्क में रखी हुई है।
- 1540 ईस्वी में शेरशाह सूरी ने इस दुर्ग की मरम्मत करवाई और इसी के नाम से शेरगढ़ दुर्ग नाम रखा।

खण्डार का किला

- **निर्माण:** रणथम्भौर के चौहान वंशीय शासकों द्वारा **8**वीं **- 9**वीं सदी में सवाईमाधोपुर से लगभग **40** किमी. पूर्व में निर्मित।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग। **आकृति -** त्रिभुजाकार।
- यहाँ अष्टधातु निर्मित '**शारदा तोप**' अपनी मारक क्षमता हेतु प्रसिद्ध है।
- **प्रमुख जलाशय -** सता कुण्ड, लक्ष्मण कुण्ड, बाण कुण्ड, झिरी कुण्ड आदि।

तिमनगढ़ (त्रिभुवनगढ़)

- **निर्माण-** तहणपाल अथवा त्रिभुवनपाल द्वारा **11**वीं सदी में करौली में निर्मित गिरि दुर्ग। मुस्लिम आधिपत्य के बाद इस दुर्ग का नाम इस्लामाबाद कर दिया गया था।
- इसके दो प्रवेश द्वार जगनपोल व सूर्यपोल हैं।
- यह किला त्रिभुवनगिरी पहाड़ी पर बना है।
- **दर्शनीय स्थल-** खास महल, ननद-भोजाई का कुआँ, राजगिरी, दुर्गाध्यक्ष के महल।

कोटा दुर्ग

- **निर्माण -** इसका निर्माण बूँदी के राव देवीसिंह हाड़ा के पुत्र जैत्रसिंह द्वारा कोटिया भील को हराकर करवाया था।
- **प्रवेश द्वार -** पाटन पोल, कैथूनी पोल, सूरज पोल, हाथी पोल एवं किशोरपुरा दरवाजा।
- **महल -** जैतसिंह महल, कँवरपदा महल, केसर महल, अर्जुन महल, चन्द्र महल, हवा महल।
- **कर्नल टॉड के अनुसार -** "आगरा के किले को छोड़कर किसी भी किले का परकोटा इतना बड़ा नहीं है जितना कोटा गढ़ का है।"

सज्जनगढ़ दुर्ग

- **निर्माण-** उदयपुर की बांसदरा पहाड़ियों पर महाराणा सज्जनसिंह द्वारा। **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **उपनाम -** इसे 'मानसून महल', वाणी विलास पैलेस, उदयपुर का हवा महल, मेवाड़ का मुकुटमणी दुर्ग आदि के नाम से भी जाना जाता है।
- इस दुर्ग में महाराणा सज्जनसिंह द्वारा **1881** ई. में वाणी विलास पैलेस एवं गुलाबबाड़ी का निर्माण करवाया गया था।

ऊँटाला का किला वल्लभनगर (उदयपुर)

- यह किला 1600 ईस्वी में मेवाड़ महाराणा अमर सिंह प्रथम के समय सेना में हरावल नेतृत्व के लिए जेत्र सिंह चुंडावत (कृष्ण दास चुंडावत का पुत्र) और बल्लू शक्तावत (शक्ति सिंह का पुत्र) के बीच हुए ऐतिहासिक घटनाक्रम के लिए जाना जाता है।

किला	परिवर्तित नाम	परिवर्तन करने वाला शासक
चित्तौड़गढ़	खिज्राबाद	अलाउद्दीन खिलजी
सिवाणा	खैराबाद	अलाउद्दीन खिलजी
जालौर	जलालाबाद	अलाउद्दीन खिलजी
आमेर	मोमिनाबाद	बहादुरशाह प्रथम
गागरोण	मुस्तफाबाद	महमूद खिलजी

किलों की विशेष पहचान

क्र.सं.	पहचान	दुर्ग
1.	तोपें ढालने का कारखाना (संयंत्र), खजाने की खोज के लिए सर्वाधिक चर्चित किला	जयगढ़ (जयपुर)
2.	चित्रशाला के लिए विख्यात	तारागढ़ (बूँदी)
3.	नौ एक जैसे महल (एक मंजिला और दो मंजिला)	नाहरगढ़ (जयपुर)
4.	अंग्रेजों से टक्कर लेने वाला किला	लोहागढ़ (भरतपुर)
5.	राजस्थान में जल दुर्ग का उत्कृष्ट उदाहरण	गागरोण का किला (झालावाड़)
6.	वन दुर्ग का श्रेष्ठ उदाहरण	कांकवाड़ी का किला एवं रणथम्भौर दुर्ग
7.	भूतिया किला	भानगढ़ (अलवर)
9.	रानी के नाम पर प्रसिद्ध किला	तारागढ़ (अजमेर)
10.	स्थापत्य की दृष्टि से सबसे सुदृढ़ किला, मेवाड़ के राजाओं का विपत्तिकाल में आश्रयस्थल	कुंभलगढ़ (राजसमंद)
11.	मारवाड़ के राजाओं का संकटकाल में शरणस्थल	सिवाणा का किला
12.	इतिहास के तीन साकों के लिए प्रसिद्ध	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
13.	धान्वन दुर्ग	नागौर, जूनागढ़, जैसलमेर
14.	किले के भीतर एक लघु किला	कटारगढ़ (कुंभलगढ़), विजयगढ़ी (जयगढ़)

अन्य दुर्ग

दुर्ग	क्षेत्र/जिला	विवरण
बसन्तगढ़ दुर्ग	सिरोही	सिरोही जिले में मेवाड़ महाराणा कुम्भा ने । इस दुर्ग में सूर्य मन्दिर एवं दत्तात्रेय का मंदिर स्थित है।
ऊंटगिरी किला	कल्याणपुर (करौली)	निर्माण - लोधी राजपूतों द्वारा।, मुख्य प्रवेश द्वार - इमली पोल।, अन्य नाम - उदित नगर दुर्ग।
सोजत दुर्ग	पाली	राव जोधा के पुत्र नीम्बा द्वारा नानी सीरड़ी नामक डूंगरी पर 15वीं सदी में मेवाड़-मारवाड़ सीमा पर निर्मित गिरि दुर्ग। जोधपुर शासक राव मालदेव ने इस दुर्ग के चारों ओर विशाल एवं सुदृढ़ परकोटे का निर्माण करवाया।
माधोराजपुरा दुर्ग	जयपुर	जयपुर में स्थित इस स्थल दुर्ग का निर्माण सवाई माधोसिंह प्रथम ने मराठा विजय के उपलक्ष्य में।
चौमू का किला	जयपुर	जयपुर के चौमू कस्बे में ठाकुर कर्णसिंह द्वारा (बेणीदास नामक साधु के आशीर्वाद से) निर्मित अन्य नाम - रघुनाथगढ़, धाराधारगढ़, सामन्ती दुर्ग।
भूमगढ़/असीरगढ़ दुर्ग	टोंक	टोंक में 17वीं सदी में ब्राह्मण भोला द्वारा निर्मित। उपनाम :- दक्खन की चाबी।
फतेहपुर दुर्ग	सीकर	श्रेणी- धान्वन व भूमि दुर्ग।, निर्माण - फतह खाँ कायमखानी द्वारा। इस दुर्ग के भीतर 'तेलिन का महल' बड़ा प्रसिद्ध है
कोटकास्ता का किला	जालोर	इसे 'नाथों का दुर्ग' भी कहा जाता है।
गुमट का दुर्ग		यह दुर्ग बाड़ी (धौलपुर) में स्थित है।
मनोहरथाना दुर्ग	झालावाड़	यह झालावाड़ में स्थित जल दुर्ग है।, निर्माता - महाराव भीमसिंह (कोटा)
सोढ़लगढ़ दुर्ग	सूरतगढ़	एक धान्वन दुर्ग है। निर्माण: बीकानेर नरेश सूरतसिंह द्वारा 1799 ई. में।
किलोणगढ़ दुर्ग	बाड़मेर	1552 ई. में राव भीमोजी द्वारा निर्मित गिरि दुर्ग है।
खींवसर दुर्ग	नागौर	इस किले में औरंगजेब रुका था।
तिजारा दुर्ग	खैरथल -तिजारा	इस किले में गदन शाह की दरगाह स्थित है।
मेड़ता का किला	नागौर	प्रारम्भिक निर्माता गुर्जर प्रतिहार, बाद में राव जोधा के पुत्र दूदा द्वारा पुनः निर्माण। 1562 में अकबर के सेनापति सरफुद्दीन ने इसे जयमल राठौड़ से जीत लिया था।
पोकरण का किला (बालागढ़)	जैसलमेर	निर्माता – मालदेव
शाहबाद दुर्ग	बारां	मुकुट मणिदेव चौहान
कोटड़ा दुर्ग	शिव	परमार शासकों द्वारा निर्मित (यह स्थान प्रसिद्ध जैन नगर था। इस दुर्ग में सरगला कुंआ स्थित है।)
हापा कोट	चौहटन	हापा चौहान (हापा चौहान, जालौर के चौहान शासक कान्हड़देव के भाई का पुत्र था।)
नीमराणा दुर्ग	अलवर	पृथ्वीराज चौहान के वंशज द्वारा (इसे पंचमहल के नाम से जाना जाता है।)
कांकणबाड़ी दुर्ग	अलवर	इसका निर्माण जयसिंह ने करवाया। (औरंगजब द्वारा अपने भाई दारा शिकोह को यहाँ कैद किया गया। यह किला सरिस्का वन्यजीव अभ्यारण्य में स्थित है।)

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग : एक दृष्टि में		
दुर्ग	**निर्माता**	**उपनाम**
जैसलमेर	राव जैसल	सोनारगढ़, त्रिकुटगढ़ गौरहरागढ़
जोधपुर	राव जोधा	मेहरानगढ़, मयूरध्वजगढ़, गढ़चिंतामणि
जालोर	प्रतिहार शासक	सुवर्णगिरि, सोनलगढ़, जाबालिपुर, कनकाचल
भरतपुर	सूरजमल	लोहागढ़, मिट्टी का किला, अजय दुर्ग
हनुमानगढ़	भाटी राजा भूपत	भटनेर दुर्ग, उत्तरी सीमा का प्रहरी
भैंसरोडगढ़	भैंसाशाह व्यापारी व रोडा चारण	राजस्थान का वेल्लोर
चूरू	ठाकुर कुशालसिंह	चाँदी के गोले दागने वाला किला
अजमेर	अजयपाल	अजयमेरु, गढ़बीठली, तारागढ़, राजस्थान का जिब्राल्टर
चित्तौड़गढ़	मौर्य राजा चित्रांग (चित्रांगद)	चित्रकूट किला, गढ़ों का सिरमौर
कुम्भलगढ़ (राजसमन्द)	महाराणा कुम्भा	मेवाड़ की आँख, कुंभलमेरु, कुंभलमेर, माहोर
मैग्जीन (अजमेर)	अकबर	अकबर का किला, अकबर का दौलतखाना
गागरोण (झालावाड़)	डोड परमार राजाओं द्वारा निर्मित	धूलरगढ़, डोडगढ़
शेरगढ़ (धौलपुर)	मालदेव	दक्खिन का द्वार गढ़
जयगढ़ (जयपुर)	सवाई जयसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह	चिल्ह का टीला
नाहरगढ़ (जयपुर)	सवाई जयसिंह II	सुदर्शनगढ़

नदियों के तट पर स्थित दुर्ग		
दुर्ग	**जिला**	**नदी**
गागरोण का दुर्ग	झालावाड़	कालीसिंध व आहू नदियों के संगम पर स्थित
चित्तौड़गढ़	चित्तौड़गढ़	गंभीरी व बेड़च नदियों के संगम पर स्थित
सुवर्णगिरि	जालोर	सूकड़ी
कोटा दुर्ग	कोटा	चम्बल

राजस्थान के दुर्गों पर आक्रमण				
क्र.सं.	**दुर्ग**	**समय**	**आक्रमणकारी**	**तत्कालीन शासक**
1.	भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)	1001 ई.	(i) महमूद गजनवी	-
		1398 ई.	(ii) तैमूर	-
		1570 ई.	(iii) अकबर	-
2.	रणथम्भौर दुर्ग (सवाईमाधोपुर)	1301 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	राणा हम्मीर देव चौहान
3.	गागरोण दुर्ग (झालावाड़)	1423 ई.	(i) होशंग शाह (मांडू सुल्तान)	अचलदास खींची
		1444 ई.	(ii) महमूद खिलजी	पाल्हणसी
4.	चित्तौड़गढ़ दुर्ग	1303 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	रावल रतनसिंह
		1534 ई.	(ii) बहादुरशाह	विक्रमादित्य
		1567-68 ई.	(iii) अकबर	उदयसिंह
5.	जैसलमेर दुर्ग	1311-12 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	रावल मूलराज
		1351-1388 ई. के मध्य	(ii) फिरोज तुगलक	रावल दूदा
		1550 ई.	(iii) अमीर अली (कंधार)	लूणकरण
6.	सुवर्णगिरि दुर्ग (जालोर)	1311	(i) अलाउद्दीन खिलजी	कान्हड़देव
7.	सिवाणा दुर्ग	1308 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	सातलदेव
8.	शेरगढ़ दुर्ग (धौलपुर)	1500 ई.	(i) बहलोल लोदी	-

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान के दुर्गों की श्रेणियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

कथन I: शुक्रनीति के अनुसार, वह दुर्ग जो विशाल जल राशि से घिरा हो उसे 'औदक दुर्ग' कहते हैं, जैसे गागरोण और भैंसरोड़गढ़।

कथन II: मरूस्थल में स्थित दुर्गों को 'धान्वन दुर्ग' कहा जाता है, जिसका प्रमुख उदाहरण जैसलमेर का सोनारगढ़ दुर्ग है।

कथन III: 'पारिख दुर्ग' वे होते हैं जिनके चारों ओर एक विशाल परकोटा (दीवार) बना होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल I और II (b) केवल II और III

(c) केवल I और III (d) I, II और III सभी **[a]**

2. सूची-I (दुर्ग) को सूची-II (प्रवेश द्वार) से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (दुर्ग)	सूची-II (प्रवेश द्वार)
(A) चित्तौड़गढ़ दुर्ग	(i) लोहा पोल
(B) रणथंभौर दुर्ग	(ii) सूरज पोल
(C) मेहरानगढ़ दुर्ग	(iii) पाडन पोल (राम पोल)
(D) आमेर दुर्ग	(iv) नौलखा दरवाजा

कूट:-

(a) A-iii, B-iv, C-i, D-ii (b) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(c) A-iv, B-iii, C-ii, D-i (d) A-iii, B-ii, C-iv, D-i **[a]**

3. जैसा कि राजस्थान के प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित है राजस्थान का वह किला जहाँ युद्ध की योजना और रणनीति बनाने में निपुण सैनिक रहते थे उसे कहा जाता था- (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें:)

(a) सैन्य दुर्ग (b) पारिख दुर्ग
(c) पारिध दुर्ग (d) सहाय दुर्ग **[a]**

4. गागरोण दुर्ग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: यह दुर्ग कालीसिंध और आहू नदी के संगम पर स्थित एक 'जल दुर्ग' (औदक दुर्ग) है, जिसका निर्माण 11वीं सदी में परमार शासकों द्वारा करवाया गया था।
कथन II: इस दुर्ग का प्राचीन नाम 'गर्गराटपुर' था और इसे डोडगढ़ या धुलरगढ़ के नाम से भी जाना जाता है।
कथन III: यहाँ सूफी संत 'मिट्ठे साहब' की दरगाह, औरंगजेब द्वारा निर्मित बुलंद दरवाजा और संत पीपा की छतरी स्थित है।
कथन IV: दुर्ग में स्थित विशाल परकोटे का निर्माण कोटा के शासक दुर्जनशाल द्वारा करवाया गया था, जिसे 'जालिमकोट' कहा जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल I, II और III (b) केवल II, III और IV
(c) केवल I और III (d) I, II, III और IV सभी **[a]**

5. निम्नलिखित को सही सुमेलित कीजिए-

	दुर्ग		पहाड़ी जिस पर स्थित है
A	**बयाना दुर्ग**	**1.**	**दमदमा पहाड़ी**
B	**अजयमेरू दुर्ग**	**2.**	**स्वर्णगिरि पहाड़ी**
C	**जालोर दुर्ग**	**3.**	**नानी सीरड़ी पहाड़ी**
D	**सोजत दुर्ग**	**4.**	**बीठली पहाड़ी**

कूट:-

(a) A-1 B-2 C-3 D-4 (b) A-1 B-4 C-2 D-3
(c) A-3 B-1 C-4 D-2 (d) A-2 B-1 C-3 D-4 **[b]**

6. किले-निर्माता सुमेलित कीजिए-

A. बयाना का किला **1. महाराजा सवाई जयसिंह**
B. आमेर का किला **2. अजयराज चौहान**
C. तारागढ़ का किला **3. राजा मानसिंह**
D. नाहरगढ़ का किला **4. राजा विजय पाल**

(a) A-4, B-2, C-3, D-1 (b) A-2, B-4, C-1, D-3
(c) A-4, B-3, C-2, D-1 (d) A-4, B-3, C-1, D-2 **[c]**

7. भटनेर दुर्ग के ऐतिहासिक महत्त्व के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: यह राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग है जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए हैं।
कथन II: 1398 ई. में तैमूर लंग के आक्रमण के समय यहाँ मुस्लिम महिलाओं द्वारा जौहर करने के प्रमाण मिलते हैं।
कथन III: तैमूर के आक्रमण के समय भटनेर का शासक शेर खाँ था, जिसकी कब्र इसी दुर्ग में स्थित है।
कथन IV: इस दुर्ग के एक प्रवेश द्वार पर एक राजा के साथ 6 नारियों की आकृतियाँ बनी हुई हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल I, II और IV (b) केवल II, III और IV
(c) केवल I और III (d) I, II, III और IV सभी **[a]**

8. भैसरोड़गढ़ दुर्ग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: यह दुर्ग चंबल और बामनी नदियों के संगम पर स्थित है, जिसे 'राजस्थान का वैल्लोर' भी कहा जाता है।
कथन II: इस दुर्ग का निर्माण मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा करवाया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?

(a) कथन I और II दोनों सत्य हैं।
(b) केवल कथन I सत्य है।
(c) केवल कथन II सत्य है।
(d) कथन I और II दोनों असत्य हैं। **[b]**

9. अजमेर के तारागढ़ दुर्ग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: इस दुर्ग का निर्माण 1113 ई. में अजयराज ने बीठली पहाड़ी पर करवाया था, जिस कारण इसे 'गढ़ बीठली' भी कहते हैं।
कथन II: बिशप हैबर ने इस दुर्ग की विशालता को देखकर इसे 'राजस्थान का हृदय' कहा था।
कथन III: पृथ्वीराज सिसोदिया ने इसका जीर्णोद्धार करवाकर अपनी पत्नी के नाम पर इसका नाम 'तारागढ़' रखा।
कथन IV: लॉर्ड विलियम बैंटिक ने इस दुर्ग को देखकर "ओह! दूसरा जिब्राल्टर" के शब्द कहे थे।
कथन V: विजय पोल, लक्ष्मी पोल और भवानी पोल इस दुर्ग के प्रमुख प्रवेश द्वार हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल I, II और III
(b) केवल II, IV और V
(c) केवल I, III, IV और V
(d) उपरोक्त सभी कथन सही हैं **[c]**

♦♦♦♦

- **शैलाश्रयों की खोज:** वी. एस. वाकणकार ने 1953 में कोटा की चम्बल घाटी व दर्रा, झालावाड़ की कालीसिंध घाटी, माउंट आबू और ईडर में प्राचीन चित्रित शैलों की खोज की।
- **प्राचीनतम चित्रित ग्रंथ:** राजस्थान के सबसे प्राचीन उपलब्ध चित्रित ग्रंथ 'ओध नियुक्ति वृत्ति' तथा 'दस वैकालिका सूत्र चूर्णि' (1060 ई.) जैसलमेर भंडार में सुरक्षित मिले हैं।
- **आरंभिक चित्र ग्रंथ:** चावण्ड रागमाला, चोर पंचाशिका, गीत गोविन्द, मृगावती, लौरचन्द्रा, नायक-नायिका भेद और रसिक प्रिया राजस्थान के शुरुआती चित्रित ग्रंथ हैं।
- **शुरुआती चित्र शैली:** कला इतिहासकारों ने चौर पंचाशिका और चावण्ड रागमाला को राजस्थानी चित्रकला शैली के शुरुआती चित्र माना है, जिनका समय लगभग 16वीं शताब्दी के बाद का है।
- **जन्म व स्वर्णकाल:** विशुद्ध राजस्थानी चित्रशैली का जन्म 1500 ई. के आसपास माना जाता है, जबकि 17वीं शताब्दी का युग इस चित्रशैली का स्वर्णकाल कहलाता है।
- **जन्मभूमि व प्रभाव:** राजस्थानी चित्रकला की मूल जन्मभूमि मेवाड़ है और यह शैली मुख्य रूप से अजंता चित्रशैली तथा मुगल दरबारी कला से प्रभावित है।
- **विषयवस्तु:** राजस्थानी चित्रों की मुख्य विषयवस्तु और प्रेरणा स्रोत मुख्य रूप से धार्मिक कथाओं, आख्यानों और पौराणिक प्रसंगों पर आधारित रहे हैं।
- **वसली का प्रयोग:** प्रारंभ में राजस्थानी चित्रशैली में चित्र बनाने के लिए आधार के रूप में 'वसली' का प्रयोग होता था, जो कि एक विशेष हस्तनिर्मित मोटा कागज होता था।
- **नाम का अंकन:** राजस्थानी शैली में चित्रकार आमतौर पर चित्र के नीचे अपना नाम नहीं लिखते थे, हालांकि बीकानेर चित्रशैली इस परंपरा का एक प्रमुख अपवाद है।
- **नारी जीवन का अंकन:** राजस्थानी चित्रों में जहाँ भी राजपूत नारी के जीवन का अंकन हुआ है, वहाँ भारतीय हिन्दू नारी का आदर्श और गरिमामयी जीवन झलकता है।
- **डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का कथन:** डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल राजस्थानी चित्रकला की अनूठी विशेषता बतलाते हुए लिखते हैं कि राजस्थानी चित्रशैली स्त्रियों की सुंदरता की खान है।
- **प्रथम वैज्ञानिक विभाजन:** राजस्थानी चित्रकला का सबसे पहला व्यवस्थित और वैज्ञानिक विभाजन आनन्द कुमार स्वामी ने वर्ष 1916 ई. में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'राजपूत पेंटिंग्स' में प्रस्तुत किया था।

राजस्थानी चित्रकला का नामकरण

विद्वान	नामकरण
कुमार स्वामी, हैवेल, ओ. सी. गांगुली	राजपूत चित्रकला
डब्ल्यू. एच. ब्राउन	राजपूत कला
एन. सी. मेहता	हिन्दू चित्रशैली
रायकृष्णदास	राजस्थानी चित्रकला

राजस्थान की विभिन्न चित्रशैलियों से जुड़े विद्वान

विद्वान	नामकरण
डॉ. मोतीचन्द्र, श्रीधर अंधारे, आर. के. वशिष्ठ	मेवाड़
श्रीधर अंधारे	देवगढ़
एरिक डिकिन्सन, फैयाज अली	किशनगढ़
प्रमोदचन्द्र, डब्ल्यू. जी. आर्चर, महाराजा ब्रजेन्द्रसिंह	बूंदी-कोटा

राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण

मुख्य शैली (स्कूल)	उपशैलियाँ एवं ठिकाणा कला
1. मेवाड़ शैली	चावंड शैली, उदयपुर शैली, नाथद्वारा शैली, देवगढ़ उपशैली, सावर उपशैली, शाहपुरा उपशैली तथा बनेड़ा, बागौर, बेगू, केलवा आदि ठिकाणों की कला।
2. मारवाड़ शैली	जोधपुर शैली, बीकानेर शैली, किशनगढ़ शैली, अजमेर शैली, नागौर शैली, सिरोही शैली, जैसलमेर शैली तथा घाणेराव, रियाँ, भिणाय, जूनियाँ आदि ठिकाणा कला।
3. हाड़ौती शैली	बूंदी शैली, कोटा शैली, झालावाड़ उपशैली।
4. ढूंढ़ाड़ शैली	आमेर शैली, जयपुर शैली, शेखावाटी शैली, अलवर शैली, उणियारा उपशैली तथा झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकाणा कला।

मेवाड़ स्कूल : उदयपुर चित्रशैली

- मेवाड़ शैली राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभिक, मौलिक रूप और इसकी 'मूल शैली' है।
- प्रथम चित्रित ग्रंथ 'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि' (1260 ई.) महारावल तेजसिंह के काल में बना।
- दूसरा मुख्य ग्रंथ 'सुपासनाह चरियम' (1423 ई.) महाराणा मोकल के समय हीरानन्द ने चित्रित किया।
- इस शैली में 'आसिफ खाँ रो बेटो' लेख युक्त फरूखफाल का चित्र मिलता है।
- विल्हण द्वारा रचित 'चौर-पंचाशिका' के 50 छंद कला इतिहास की महत्वपूर्ण धरोहर हैं।
- डगलस बेरेट व वैसिल ग्रे ने चौर-पंचाशिका शैली का उद्गम स्थल मेवाड़ माना है।
- चौर-पंचाशिका व कुलहदार समूह का प्रभाव भागवत, गीतगोविंद और राग-रागिनी चित्रों पर दिखता है।
- मध्यकाल में मेवाड़ भूखंड हिंदू चित्रशैली का प्रमुख केंद्र था, जहाँ चौर-पंचाशिका समूह के चित्र बने।
- महाराणा कुंभा का काल कलाओं का स्वर्णिम युग था, जिनके सूत्रधार मंडन ने स्थापत्य कला को बढ़ाया।
- कुंभा के समय पं. भीकमचंद कृत सचित्र ग्रंथ 'रसिकाष्टक' (सं. 1492) में ऋतुओं-पशुओं के 6 चित्र हैं।
- महाराणा उदयसिंह के काल में चित्रकार नानाराम ने भागवत पुराण के 'पारिजात अवतरण' (1540 ई.) को बनाया।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम का शासनकाल मेवाड़ लघु चित्रशैली का वास्तविक 'स्वर्णकाल' माना जाता है।
- स्वर्णकाल में रसिकप्रिया, गीत गोविन्द, भागवत पुराण और रामायण जैसे पौराणिक विषयों पर लघु चित्र बने।
- जगतसिंह प्रथम के समय 'साहबदीन' और 'मनोहर' मेवाड़ शैली के दो सबसे प्रमुख चित्रकार थे।
- साहिबदीन ने रागमाला (1628 ई.), मारू रागनी, रसिकप्रिया, भागवत पुराण (1648 ई.) व रामायण युद्ध कांड (1652 ई.) बनाए।
- मनोहर ने रामायण के बालकांड (1649 ई.) के प्रसंगों का सजीव चित्रांकन किया।

- जगतसिंह प्रथम ने राजमहल में 'चितेरों की ओवरी' (तस्वीरां रो कारखानों) कला विद्यालय बनाया, जिसका मुख्य चित्रकार 'दरोगा' कहलाता था।
- महाराणा राजसिंह के काल में साहिबदीन ने 'शुकर क्षेत्र महात्म्य' (1655 ई.) व 'भ्रमरगीतसार' (1659 ई.) चित्रित किए।
- महाराणा जयसिंह के समय सूरसागर पर आधारित 122 लघुचित्र बने, जिनमें सूरदासजी की विभिन्न मुद्राएँ अंकित हैं।
- महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के समय गीत गोविन्द, मुल्ला दो प्याजा के लतीफे व 'कलीला-दमना' आधारित चित्र प्रमुख हैं।
- 18वीं सदी के मध्य से राजा-रानियों के पोर्ट्रेट (वैयक्तिक चित्र) और दरबारी जीवन के समूह चित्रों का निर्माण बढ़ा।
- इस उत्तरकाल के मुख्य चित्रकारों में जीवा, अमरा, नंगा, शिवदयाल, शाहजी मियां, रघुनाथ, शिवा और भोपा हैं।

चावण्ड उपशैली

- महाराणा प्रताप के समय चावण्ड में 'ढोलामारु' (1592 ई.) के चित्रांकन से इस उपशैली का प्रारंभ हुआ, जो नई दिल्ली संग्रहालय में सुरक्षित है।
- महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय इसका सर्वाधिक विकास हुआ तथा इसी काल में शैली पर मुगल कला का प्रभाव पड़ा।
- इस शैली का प्रमुख ग्रंथ 'रागमाला' (1605 ई.) है, जिसे प्रसिद्ध चित्रकार निसारदीन (नसीरुद्दीन) ने चित्रित किया था।
- इस चित्रशैली के निर्माण में चटकीले लाल और पीले रंगों का सबसे अधिक प्रयोग किया गया है।
- पुरुष आकृति गठीली मूँछों, भरे चेहरे, बड़े नयन, ठिगने कद और उदयपुरी पगड़ी व लंबे साफे से युक्त है।
- नारी आकृति सरल भाव, मीनाकृत आँखें, सीधी लंबी नाक, ठिगने कद और ठेठ राजस्थानी आभूषण-पोशाक से सुसज्जित है।
- प्रमुख विशेषताओं में कदंब वृक्ष की प्रधानता, अटपटी पगड़ी, बादलों से युक्त नीला आसमान और पोथी ग्रंथ शामिल हैं।
- शिकार के दृश्यों में त्रि-आयामी (3D) प्रभाव तथा कोयल, सारस व मछलियों से युक्त भरपूर प्रकृति चित्रण है।
- यह चित्रशैली अपने प्रारंभिक दौर में गुर्जर और जैन अपभ्रंश शैली से गहराई से प्रभावित रही है।

प्रमुख विशेषताएँ :-

- **रंग:** लाल और पीले रंगों का सर्वाधिक प्रयोग।
- **पुरुष आकृति:** गठीली मूँछें, भरा चेहरा, बड़े नयन, छोटा कद और उदयपुरी पगड़ी।
- **नारी आकृति:** मीनाकृत आँखें, सीधी लंबी नाक, ठिगना कद और राजस्थानी वेशभूषा-आभूषण।
- **वृक्ष व पक्षी:** कदंब के वृक्ष, कोयल, सारस और मछलियों का भरपूर प्रकृति चित्रण।
- **अन्य विशेषताएँ:** अटपटी पगड़ी, नीला आसमान, पोथी ग्रंथ और शिकार के दृश्यों में त्रि-आयामी (3D) प्रभाव।
- **प्रभाव:** गुर्जर एवं जैन (अपभ्रंश) शैली का स्पष्ट प्रभाव।
- **चित्रकार:** मनोहर, साहिबद्दीन, नसीरुद्दीन, नुरुद्दीन, जगन्नाथ, कृपाराम, शिवदयाल और शाहनीमियां।

नाथद्वारा उपशैली

- **केंद्र:** नाथद्वारा में पुष्टिमार्गीय संप्रदाय की भारत में प्रमुख पीठ स्थित है।
- **विषयवस्तु व स्वर्णकाल:** श्रीकृष्ण लीला (रासलीला) मुख्य विषयवस्तु है तथा महाराणा राजसिंह का काल इसका स्वर्णकाल है।
- **रंग:** हरा व पीला रंग तथा पृष्ठभूमि में नींबूआ (लाइट येलो) रंग।
- **पिछवाई:** श्रीनाथजी के पीछे बड़े कपड़े के पर्दे पर बने चित्र 'पिछवाई' कहलाते हैं (मुख्य विशेषता) ।
- **प्रभाव व वृक्ष:** यह उदयपुर और ब्रजशैली का समन्वित रूप है, जिसमें केले के वृक्ष की प्रधानता है।
- **पुरुष चित्रकार:** बाबा रामचन्द्र, नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग, चम्पालाल, घासीराम, तुलसीराम, उदयराम, देवकृष्ण, हरदेव, हिरालाल, विठ्ठल और भगवान।
- **महिला चित्रकार:** कमला एवं इलायची के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

देवगढ़ उपशैली

- **उद्गम:** महाराणा जयसिंह के काल में रावत द्वारिकादास चूड़ावत द्वारा 1680 ई. में देवगढ़ ठिकाना स्थापित करने पर इस शैली का जन्म हुआ।
- **श्रेय व सामंत:** यहाँ के सामंत 'सोलहवें उमराव' कहलाते थे तथा इस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. श्रीधर अंधारे को है।
- **प्रमुख स्थल व रंग:** इसके भित्तिचित्र 'अजारा की ओवरी' एवं 'मोती महल' में दर्शनीय हैं और इसका प्रधान रंग पीला है।
- **विषयवस्तु:** इसमें सामंती ठाठ-बाट, शिकार (सूअर, शेर, पक्षी), हाथियों की लड़ाई, राज-दरबार, शिकार के बाद गोठ और कृष्ण लीला के चित्र प्रमुख हैं।
- **समन्वय:** देवगढ़ शैली मुख्य रूप से मारवाड़, जयपुर और मेवाड़ चित्रशैली का एक सुंदर समन्वित रूप है।
- **प्रमुख चित्रकार:** बगता, कँवला प्रथम, कँवला द्वितीय, हरचंद, नंगा, चोखा और बैजनाथ इस शैली के मुख्य कलाकार हैं।

शाहपुरा उपशैली

- **फड़ चित्रण का विकास:** शाहपुरा शैली में मुख्य रूप से प्रसिद्ध 'फड़ चित्रण' की लोक चित्र शैली का उद्भव व विकास हुआ।
- **प्रमुख कलाकार:** यहाँ के मंदिरों व भवनों में भित्ति चित्र और फड़ चित्रण परंपरा को समृद्ध करने में श्री लाल जोशी व दुर्गालाल जोशी का मुख्य योगदान रहा है।
- **राष्ट्रीय सम्मान:** फड़ पेंटिंग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रसिद्ध कलाकार श्री लाल जोशी को भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

मारवाड़ स्कूल

जोधपुर चित्रशैली

- **यक्ष शैली:** तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने सातवीं सदी में मारू देश के चित्रकार 'श्रृंगधर' का उल्लेख किया, जिसने पश्चिमी भारत में यक्ष शैली को जन्म दिया।
- **प्राचीनतम चित्र:** मारवाड़ चित्रशैली का प्रारंभिक रूप प्रतिहारकालीन ग्रंथ 'ओध नियुक्ति वृत्ति' (1060 ई.) के चित्रों में देखने को मिलता है।
- **मालदेव का काल:** मारवाड़ में कला-संस्कृति को नवीन दिशा देने का श्रेय राव मालदेव को है, जिनके समय से पूर्व जोधपुर शैली पर पश्चिमी भारतीय व मेवाड़ स्कूल का प्रभाव था।
- **उत्तराध्ययन सूत्र व भित्तिचित्र:** वर्ष 1591 ई. का जैन कला से संबंधित 'उत्तराध्ययन सूत्र' ग्रंथ और चोखेलाव महल के धुंधले भित्तिचित्र तत्कालीन चित्रण को समझने के मुख्य स्रोत हैं।
- **सूरसिंह का काल:** महाराजा सूरसिंह (1595-1625 ई.) के समय प्रसिद्ध ऐतिहासिक सचित्र ग्रंथों 'ढोला-मारू' और पुस्तक प्रकाश (जोधपुर) के 'भागवत' का निर्माण हुआ।
- **भागवत ग्रंथ (1610 ई.):** वर्ष 1610 में लिखित व चित्रित भागवत ग्रंथ मेवाड़ और मारवाड़ दोनों शैलियों की अनूठी विशेषताओं से युक्त है।

- **मुगल कला का प्रभाव:** मोटा राजा उदयसिंह के समय (1581 ई.) जोधपुर का मुगलों से संपर्क होने के कारण चित्रों की वेशभूषा और स्थापत्य पर मुगलई प्रभाव बढ़ा।
- **रागमाला चित्रावली (1623 ई.):** चित्रकार वीरजी ने पाली के वीर विठ्ठलदास चंपावत के लिए प्रसिद्ध रागमाला चित्रावली बनाई, जो राग-रागिनियों की सचित्र व्याख्या है।
- **प्रतिनिधि कला उदाहरण:** इस प्रारंभिक काल की मारवाड़ी चित्रशैली के सबसे बेहतरीन उदाहरण 'चौखेलाव महल' के भित्तिचित्रों तथा 'उत्तराध्ययन सूत्र' से प्राप्त होते हैं।
- **जसवंत सिंह का स्वर्णकाल:** महाराजा जसवंत सिंह का काल इस शैली का स्वर्णकाल कहलाता है, जिसमें कृष्ण चरित्र की विविधता और मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।
- **अजीतसिंह का सामंती चित्रण:** महाराजा अजीतसिंह के समय मारवाड़ शैली के सबसे सुंदर चित्र बने, जिनमें तत्कालीन सामंती संस्कृति का जीवंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया।
- **अभयसिंह एवं चित्रकार डालचंद:** महाराजा अभयसिंह के काल में चित्रकार डालचंद को ख्याति मिली; उनका प्रसिद्ध चित्र 'महाराजा अभयसिंह नृत्य देखते हुए (1725 ई.)' मेहरानगढ़ संग्रहालय में सुरक्षित है।
- **राम-रावण युद्ध के चित्र:** चित्रकार डालचंद के समय ही जोधपुर के प्रसिद्ध चोखेलाव महल की दीवारों पर भव्य 'राम-रावण युद्ध' के ऐतिहासिक भित्तिचित्र बनाए गए।
- **मानसिंह एवं नाथ संप्रदाय प्रभाव:** महाराजा मानसिंह के काल (19वीं सदी का प्रारंभ) में नाथ संप्रदाय के प्रभाव के कारण नाथों और सिद्धों से संबंधित असंख्य चित्रों का निर्माण हुआ।
- **प्रमुख चित्रकार:** मुख्य चित्रकारों में अमरदास भाटी, दाना भाटी, शंकरदास, माधोदास, रामसिंह भाटी और शिवदास इत्यादि के नाम प्रमुख हैं।
- **मतिराम का प्रभाव:** अलंकारवादी कवि मतिराम ने बूंदी नरेश भाव सिंह के आश्रय में 'ललितललाम' और 'रसराज' ग्रंथों की रचना कर चित्रकला को गहरा प्रभावित किया।
- **रसराज आधारित चित्र:** महाराजा मानसिंह के काल में मतिराम के 'रसराज' पर आधारित 63 श्वेत-श्याम चित्र महामंदिर (नाथ संप्रदाय मठ) से मिले, जो अब जयपुर संग्रहालय व निजी संग्रहों में हैं।
- **प्रमुख सचित्र ग्रंथ:** इस दौर में शिवपुराण, शिवरहस्य, नाथ चरित्र, दुर्गा सप्तशती, सिद्ध सिद्धांत पद्धति, सूरजप्रकाश, कामसूत्र और बेलि क्रिसन रुकमणी री जैसे ग्रंथों का चित्रण हुआ।
- **तख्तसिंह का काल:** महाराजा मानसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा तख्तसिंह के शासनकाल में 'शंकरदास' जोधपुर शैली के एक अत्यंत महत्वपूर्ण चित्रकार थे।

प्रमुख चित्रकार:

- इस शैली के मुख्य कलाकारों में शिवदास भाटी, नारायणदास, बिशनदास, किशनदास भाटी, रामू, नाथा, छज्जू, कालू, डालू और जीतमल प्रमुख हैं।

जोधपुर चित्रशैली (ग्रंथ, विशेषताएँ एवं प्रसिद्ध चित्र)

- **प्रमुख सचित्र ग्रंथ:** वीरजी द्वारा चित्रित 'रागमाला', पंचतंत्र, सूरसागर, रसिक प्रिया, बिलावल रागिनी और महाराजा सूरसिंह का ऐतिहासिक वैयक्तिक (व्यक्ति) चित्र।
- **प्रसिद्ध चित्र:** 'चौगान खिलाड़ी' (पलो खेलते हुए महिलाएँ) इस चित्रशैली का सबसे अनूठा और विश्वप्रसिद्ध चित्र है।
- **प्रधान विषय व रंग:** मारवाड़ शैली की मुख्य विषयवस्तु 'प्रेमाख्यान' (प्रेम कहानियाँ) रही है, जिसमें चमकीले पीले और लाख के लाल रंग की प्रधानता है।
- **लोकप्रिय प्रेमाख्यान:** इस शैली के प्रमुख प्रेम-प्रधान चित्रों में ढोला-मारु, मूमल-महेन्द्रा, रूपमती-बाजबहादुर और कल्याण-रागिनी के प्रसंग प्रमुख हैं।
- **प्राकृतिक अंकन:** चित्रों में अलंकृत प्रकृति, राजप्रासाद (महल), आकाश में कुंडलीकृत बड़े-बड़े काले मेघ (बादल) और चमकती हुई बिजली का सुंदर अंकन दर्शनीय है।
- **विशेषता (आँखें व पगड़ी):** बादाम के आकार जैसी सुंदर आँखें और सिर पर ऊँची जोधपुरी पाग (पगड़ी) इस शैली की अपनी सबसे खास पहचान है।
- **पुरुष व नारी आकृति:** पुरुष लंबे-चौड़े, गठीले बदन और गलमुच्छों वाले हैं; जबकि स्त्रियाँ ठेठ राजस्थानी लहँगा-ओढ़नी पहने और लाल कुंदन के आभूषणों से सजी दिखाई गई हैं।

बीकानेर चित्रशैली

- **प्रादुर्भाव:** मारवाड़ स्कूल के अंतर्गत बीकानेर चित्रशैली की शुरुआत 16वीं शताब्दी में हुई।
- **प्रारंभिक चित्र:** महाराजा रायसिंह के समय चित्रित 'भागवत पुराण' को इस शैली का पहला चित्र माना जाता है।
- **रायसिंह का काल:** संस्कृत विद्वान महाराजा रायसिंह ने बुरहानपुर का गवर्नर रहते हुए 'रागमाला चित्रावली' सहित कई कलाकृतियाँ संग्रहित कीं।
- **मुगल कलाकारों का आगमन:** रायसिंह मुगल कलाकारों से प्रभावित होकर उस्ता अली रजा एवं उस्ता हामिद रूकनुद्दीन को अपने साथ बीकानेर लाए।
- **उद्भव का श्रेय:** इस शैली के विकास का मुख्य श्रेय यहाँ के स्थानीय 'उस्ता' परिवारों और जैन उस्ताद कहलाने वाले 'मथेरण' कलाकारों को जाता है।
- **मथेरण परिवार:** यह परिवार पारंपरिक रूप से जैन धर्म से प्रेरित मिश्रित राजस्थानी लोक शैली के सुंदर चित्र बनाने में अत्यधिक कुशल था।
- **अनूप सिंह का काल:** महाराजा अनूप सिंह के समय से शैली का दूसरा महत्वपूर्ण मोड़ शुरू हुआ, जहाँ उस्ता परिवार लाहौर से बीकानेर दरबार में आया।
- **सबसे पुराना व्यक्ति चित्र:** बीकानेर शैली का सबसे प्राचीन उपलब्ध वैयक्तिक (व्यक्ति) चित्र वर्ष 1606 में नूर मोहम्मद (पुत्र शाह मोहम्मद) द्वारा बनाया गया था।
- **उस्ता कला का विकास:** मुगल कला में दक्ष उस्ता परिवार ने ऊँट की खाल पर सोने की नक्काशी व मुनव्वत का काम करके विश्वप्रसिद्ध 'उस्ता कला' को विकसित किया।
- **मुगल दरबार में सम्मान:** इन उस्ता कलाकारों की बेहतरीन चित्रकारी से प्रभावित होकर सम्राट अकबर ने स्वयं अपने शाही दरबार में इन्हें सम्मानजनक स्थान दिया था।
- **उस्ता आसिर खाँ:** महाराजा कर्णसिंह के समय प्रसिद्ध कलाकार उस्ता आसिर खाँ दिल्ली छोड़कर बीकानेर आए और यहाँ उत्कृष्ट चित्रों का निर्माण शुरू किया।
- **मुसब्बिर रूकनुद्दीन का योगदान:** महाराजा अनूपसिंह के दरबारी चित्रकार रूकनुद्दीन ने केशव की 'रसिकप्रिया' और 'बारहमासा' पर आधारित महत्वपूर्ण चित्रों का निर्माण किया।

- **पारिवारिक कला परंपरा:** रूकनुद्दीन के पुत्र साहबदीन ने भागवत पुराण के चित्र बनाए तथा उनके पोते कायम ने 18वीं सदी के आरंभ में बीकानेर शैली को आगे बढ़ाया।
- **मथेरण परिवार का योगदान:** अनूपसिंह के काल में मथेरण परिवार के मुन्नालाल, मुकुन्द और चन्दूलाल जैसे कलाकारों ने इस शैली के विकास में विशेष सहयोग दिया।
- **बीकानेर शैली का स्वर्णकाल:** उस्ता और मथेरण कलाकारों के मिले-जुले प्रयासों से महाराजा अनूपसिंह का शासनकाल बीकानेर चित्रशैली का 'स्वर्णकाल' (चरमोत्कर्ष युग) बना।
- **दरबारी कलाकार:** अनूपसिंह के समय रामलाल, अलीरजा और हसन जैसे प्रसिद्ध कलाकारों को राजकीय व दरबारी संरक्षण प्राप्त था।
- **मण्डी (कला केन्द्र):** महाराजा अनूपसिंह के शासनकाल में बीकानेर शैली के अंतर्गत कई आर्ट स्टूडियो स्थापित थे, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'मण्डी' कहा जाता था।

बीकानेर चित्रशैली (विशेषताएँ एवं चित्रकार)

- **नाम व तिथि:** चित्रों पर चित्रकार का नाम, उसके पिता का नाम और संवत (तिथि) लिखना इस शैली की मुख्य विशेषता है।
- **निजी पहचान:** बरसते बादलों में सारस के जोड़ों (सारस मिथुनों) का चित्रण बीकानेर शैली की अपनी पहचान है।
- **कलात्मक समन्वय:** इसमें मुगल और दक्कन (दक्षिण) शैली का सुंदर समन्वय है, जिसका श्रेष्ठ उदाहरण 'मेघदूत' चित्र है।
- **पोशाक व काया:** चित्रों में शाहजहाँ व औरंगजेब कालीन पगड़ियाँ, ऊँची मारवाड़ी पगड़ियाँ और दुबली-पतली (तन्वंगी) स्त्रियों का अंकन मिलता है।
- **प्रसिद्ध चित्र:** 'झूले पर कृष्ण और उदास मनोदशा में राधा' इस शैली का सबसे विख्यात चित्र है।
- **रंग व आभूषण:** मुख्य रूप से लाल, बैंगनी, जामुनी, सलेटी व बादामी रंगों का प्रयोग और मोतियों के आभूषणों का अधिक अंकन हुआ है।
- **विदेशी प्रभाव:** चीनी व ईरानी कला से प्रभावित मेघ-मण्डल (बादल), पहाड़, बालू के टीले और फूल-पत्तियों का सुंदर चित्रण है।
- **उस्ता चित्रकार:** अलीरजा, उस्ता आशीर खाँ, रूकनुद्दीन, हसन, साहबदीन, इब्राहिम, ईसा, नाथू और मुराद।
- **मथेरण चित्रकार:** मुन्नालाल, मुकुन्द, चन्दुलाल, जयकिशन, मेघराज और रामकिशन।

किशनगढ़ चित्रशैली (स्वर्णकाल, नागरीदास एवं निहालचन्द)

- **नानकराम चितेरा:** बहादुर सिंह के शासनकाल में चित्रकार नानकराम ने अनेक चित्रों का निर्माण किया।
- **रामनाथ व सवाईराम:** राजा बिड़दसिंह के समय रामनाथ तथा जोशी सवाईराम का कार्य उल्लेखनीय रहा।
- **लाड़लीदास:** राजा कल्याणसिंह के काल में चित्रकार लाड़लीदास ने शैली में विशेष योगदान दिया।
- **दीपावली चित्र:** निहालचन्द कृत इस चित्र में कृष्ण-राधिका सिंहासन पर हैं और गोपी नृत्य कर रही है।
- **भारत की मोनालिसा:** निहालचन्द रचित 'बणी-ठणी' चित्र को एरिक डिकिन्सन ने 'भारत की मोनालिसा' कहा।
- **डाक टिकट:** बणी-ठणी चित्र पर भारत सरकार ने वर्ष 1973 ई. में डाक टिकट जारी किया।
- **प्रकाश का श्रेय:** इस शैली को मुख्य रूप से एरिक डिकिन्सन व डॉ. फैयाज अली प्रकाश में लाए।
- **वल्लभ संप्रदाय:** इस संप्रदाय के प्रभाव के कारण यहाँ राधा-कृष्ण की प्रेम-लीलाओं का सर्वाधिक चित्रण हुआ।

प्रमुख विशेषताएँ -

- वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने के कारण अधिकतर किशनगढ़ के राजाओं के समय में राधा-कृष्ण की प्रेम-लिलाओं का चित्रण ही अधिक हुआ है।
- **बणी-ठणी:** राधा के रूप सौंदर्य का चित्रांकन इस शैली का मुख्य आकर्षण है; यहाँ राग-रागिनियों का चित्रण पूरी तरह अनुपलब्ध है।
- **नारी आकृति:** स्त्रियों को तन्वंगी (दुबली-पतली), नुकीली चिबुक, सुराहीदार गर्दन, पतली कमर, बेसरी आभूषण और लंबी कमल-सी आँखों युक्त चित्रित किया गया है।
- **पुरुषाकृति:** पुरुषों को लंबा इकहरा नील छवियुक्त शरीर, मोती जड़ित श्वेत या मूँगिया पगड़ी और खंजनाकृत आँखों के साथ दर्शाया गया है।
- **प्राकृतिक वातावरण:** बादलों का सिन्दूरी चित्रण, चाँदनी रात में राधा-कृष्ण की क्रीड़ाएँ, तैरती नौकाएँ, केले के गाछ (वृक्ष), उपवन और झील में तैरते बतख व हंस इसकी विशेषताएँ हैं।
- **प्रधान रंग:** इस चित्रशैली में मुख्य रूप से श्वेत (सफेद), गुलाबी और सिन्दूरी रंगों की प्रधानता रही है।
- **प्रमुख चित्रकार:** नानकराम, सीताराम, तुलसीदास, सूरध्वज, मोरध्वज निहालचंद, बदनसिंह, रामनाथ, लाड़लीदास, भवानीदास, अमरचन्द, सूरतराभ और कल्याणदास प्रमुख हैं।
- इस विश्वप्रसिद्ध चित्रशैली के मुख्य संरक्षक राजा सावंत सिंह (नागरीदास) की मृत्यु वृंदावन में हुई थी।

अजमेर शैली

- **विकास:** भिणाय, सावर और जूनियाँ जैसे ठिकाणों की चित्रण परंपरा का मुख्य योगदान रहा।
- **चित्रकार:** चाँद, तैय्यब, रामसिंह भाटी, जालजी, नारायण भाटी, माधोजी, अल्लाबक्स, उस्ना और महिला चित्रकार साहिबा।
- **मुख्य चित्र:** चित्रकार चाँद द्वारा 1698 ई. में बनाया गया 'राजा पाबूजी' का वैयक्तिक चित्र सबसे प्रसिद्ध है।
- **समन्वय:** यह राजस्थान की एकमात्र शैली है जिसमें हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई तीनों धर्मों को समान संरक्षण मिला।
- **पुरुष आकृति:** छल्लेदार मूँछें, गोल आँखें, लम्बी जुल्फें, जामा-पायजामा और मुगल व राठौड़ी पगड़ी।
- **नारी आकृति:** आकर्षक व कोमलांगी महिलाएँ, घने लम्बे बाल, पैनी अंगुलियाँ और मेहन्दी रचे हाथ।
- **महिला कलाकार:** उस्ना और साहिबा मुख्य महिला चित्रकार थीं; साहिबा ने लघु चित्रों को समृद्ध किया।

नागौर शैली

- **उद्भव व मुख्य चित्र:** 18वीं सदी के प्रारंभ में शुरुआत; 1720 ई. का 'ठाकुर इन्द्रसिंह' चित्र सबसे उत्कृष्ट है।
- **भित्तिचित्र स्थल:** इस शैली का श्रेष्ठ स्वरूप नागौर किले के 'बादल महल' और 'शीश महल' में मिलता है।
- **विषय व चित्रण:** संगीत सुनती नायिकाएँ, सुघड़ घोड़े, उड़ती परियाँ और मुगल शैली से प्रभावित जीवन अंकित है।
- **रंग व प्रभाव:** बुझे हुए रंगों का अधिक प्रयोग; इस पर मारवाड़, अजमेर, मुगल और दक्कन शैलियों का मिश्रित प्रभाव है।
- **मुख्य विशेषता:** नारी चित्रों में स्त्रियों का तैराकी मुद्रा (तैरती हुई) में अंकन और पारदर्शी वेशभूषा प्रमुख पहचान है।
- **प्रसिद्ध चित्रकार:** फतह मोहम्मद इस चित्रशैली का सबसे विख्यात और प्रमुख कलाकार है।

जैसलमेर शैली

- **प्रमुख चित्र:** 'मूमल' इस चित्रशैली का सर्वप्रमुख और ऐतिहासिक चित्र है।
- **स्थानीय प्रभाव:** यह पूर्णतः स्थानीय शैली है, जिस पर न तो मुगल शैली का प्रभाव पड़ा और न ही जोधपुर शैली का।
- **स्वर्णकाल:** महाराजा 'मूलराज द्वितीय' का शासनकाल जैसलमेर चित्रशैली का वास्तविक स्वर्णकाल माना जाता है।
- **कला के उदाहरण:** सोनार किला, चिंतामणि पार्श्वनाथ सहित विभिन्न जैन मंदिर और वैष्णव मंदिर यहाँ की कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

सिरोही शैली

- **क्षेत्र व रियासत:** राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र में 15वीं सदी तक यह देवड़ा राजपूतों की एक महत्वपूर्ण लघु रियासत रही।
- **संस्कृति व उद्भव:** गुजरात के निकट होने से जैन संस्कृति का केंद्र रही तथा इसके विकास में जैन शैली का मुख्य स्थान रहा।
- **चित्रकार व व्यवसाय:** सोमपुरा या गुरोसां जाति के चित्रकारों ने जैन साधुओं की देखरेख में पुस्तकें लिखने और चित्रित करने का कार्य किया।
- **प्राचीन चित्र:** सबसे पुराने चित्र 'चौबीस जिनों' (तीर्थंकरों) से संबंधित हैं, जिन्हें जैन परिवारों में 'दर्शन चौबीसी' कहा जाता है।
- **दुर्लभ चित्र स्थल:** सिरोही के आंचलिया आदेश्वर मंदिर और डॉ. सोहनलाल पटनी के निजी संग्रहालय में इसके दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं।
- **भित्तिचित्र विषय:** राजमहलों में सुनहरी काम के साथ कृष्ण लीला, शिव लीला, इंद्र सभा, सामंती वैभव और सम्राट अकबर का अंकन है।
- **छतरी व रंग:** महाराव बेरीसाल की छतरी में योद्धाओं व पशु-पक्षियों के धुंधले चित्र हैं, जिनमें कत्थई और आसमानी रंग मुख्य हैं।

सिरोही शैली (विशेषताएँ एवं अन्य तथ्य)

- **पुरुष आकृति:** गोल चेहरे, बैठी हुई ठुड्डी, कम नुकीली आँख-नाक, पतली मूँछें और कम लम्बी शारीरिक बनावट।
- **पुरुष पहनावा:** चित्रों में विशेष रूप से अंगरखा, जामा, एक लपेटे का कमरबंद और स्थानीय सिरोही की पगड़ी का अंकन।
- **नारी आकृति:** गोल व मांसल चेहरे, कम नुकीली नाक, मोटी आँखें, मांसल हाथ-पैर और पीपल के पत्ते जैसा पेट।
- **घाणेराव ठिकाना:** जोधपुर के दक्षिण में स्थित गोड़वाड़ प्रदेश में इस कला का विकास हुआ, जहाँ मारवाड़ शैली का प्रभाव रहा।
- **ठिकाणा चित्रकार:** घाणेराव ठिकाना कला को समृद्ध करने वाले मुख्य चित्रकारों में नारायण, छज्जू एवं कृपाराम प्रमुख हैं।

हाड़ौती स्कूल

बूंदी शैली

- **भावसिंह का काल:** राजा भावसिंह के आश्रय में कवि मतिराम ने 'ललित ललाम' और 'रसराज' की रचना कर कला को प्रभावित किया।
- **ललित ललाम:** इस ग्रंथ से राजा भावसिंह की वीरता, कला मर्मज्ञता और कला पोषण की जानकारी मिलती है।
- **मुगल प्रभाव:** राजा भावसिंह और उनके पुत्र अनिरुद्धसिंह के शासनकाल में बूंदी चित्रशैली पर मुगल कला का प्रभाव पड़ा।
- **प्रारंभिक चित्र:** शुरुआत में मेवाड़ का राजनीतिक प्रभाव रहा; 1625 ई. के चित्र 'रागमाला' और 'भैरवी रागिनी' इसके उदाहरण हैं।
- **प्रमुख चित्र:** इस प्रसिद्ध चित्रशैली के अंतर्गत 'राग दीपक' का अत्यंत महत्वपूर्ण व सुंदर चित्र निर्मित हुआ है।
- **मुख्य विशेषता:** हाड़ौती स्कूल की इस बूंदी शैली में पशु-पक्षियों के सजीव चित्रण की सबसे अधिक बहुलता मिलती है।

भित्ति चित्रण एवं चित्रशाला

- **भित्ति चित्र स्थल:** बूंदी के लगभग तीन दर्जन भवनों में भित्ति चित्र हैं, जिनमें महलों की प्रसिद्ध 'चित्रशाला' सर्वाधिक चर्चित है।
- **चित्रशाला (रंगशाला):** इसका मूल नाम रंगशाला था, जिसे दीवारों पर अत्यधिक चित्रों के कारण चित्रशाला या रंगशाला कहा जाता है।
- **छत्रमहल के चित्र:** राव राजा छत्रशाल द्वारा निर्मित छत्रमहल में राग-रागिनी व सामंती जीवन के सुंदर परंतु अब जीर्ण-शीर्ण चित्र हैं।
- **राव उम्मेदसिंह व बिशन सिंह:** चित्रों में राव उम्मेदसिंह को श्रीनाथजी की सेवा करते और राव बिशन सिंह को महफिल में नृत्य देखते दर्शाया गया है।
- एक चित्र में गद्दी पर बैठे बिशन सिंह के सामने सफेद दाढ़ी-बाल वाले वृद्ध राव उम्मेदसिंह विचार-विमर्श करते अंकित हैं।
- **ईरानी घोड़ा चित्र:** पैदल व घुड़सवारों के आगे हल्के नीले रंग के ईरानी घोड़े पर सवार राव बिशन सिंह का सुंदर चित्र दर्शनीय है।

बूंदी शैली (विशेषताएँ एवं विषय)

- **रंग:** हरा, श्वेत (सफेद), गुलाबी और लाल हिंगलू रंगों की मुख्य प्रधानता रही है।
- पशु-पक्षियों का सजीव चित्रांकन होने के कारण इसे 'पशु-पक्षियों की चित्रशैली' भी कहा जाता है।
- आकाश में काले मेघ, बिजली की कौंध, घनघोर वर्षा और हरे-भरे वृक्षों का सुंदर अंकन है।
- वृक्षों पर चहकती चिड़ियाँ और मग्न होकर नाचते हुए मोर इस शैली के सबसे प्रसिद्ध चित्र हैं।
- **नायक-नायिका चित्र:** हाथ में कलमनाल लिए, हुक्का पीती, पतंग उड़ाती, सुरापान करती और बाज-कबूतर से खेलती प्रभावशाली नायिकाएँ अंकित हैं।
- **पोशाक व लोककथाएँ:** वेशभूषा पर मुगल प्रभाव अधिक है तथा लोककथाओं के आधार पर घोड़े पर नदी पार करते नायक व ढोला-मारू का चित्रण है।
- **विशेषता:** दीवार के निचले भाग में कत्थई रंग का आराइश (प्लास्टर) और सफेद रंग से हाथी-घोड़ों का विस्तृत अंकन इसकी खास पहचान है।
- **पशुओं का अंकन:** बिगड़े हाथी को वश में करने की प्रक्रिया, हाथियों की लड़ाई और घोड़ों का ऊर्जापूर्ण अंकन यहाँ देखते ही बनता है।
- **प्रमुख विषय:** राग-रागिनी, नायिका भेद, ऋतु वर्णन, बारहमासा, कृष्णलीला, शिकार और उत्सव के चित्रों की मुख्य प्रधानता है।

कोटा शैली

- **स्वतंत्र अस्तित्व:** बूंदी शैली से अलग कोटा शैली को स्वतंत्रपहचान दिलाने का श्रेय महाराव रामसिंह को है।
- **वल्लभ संप्रदाय प्रभाव:** महारावल भीमसिंह ने कृष्ण भक्ति को महत्व दिया, जिससे शैली पर वल्लभ संप्रदाय का गहरा प्रभाव पड़ा।
- **बृजभूमि रूपांतरण:** भीमसिंह ने स्वयं का नाम कृष्णदास, कोटा का नाम नंदग्राम और शेरगढ़ का नाम बरसाना रख दिया।
- **भागवत ग्रंथ:** जालिम सिंह के काल में कन्हैयालाल ब्राह्मण द्वारा नंदग्राम में 4760 चित्रों वाला विशाल भागवत ग्रंथ तैयार किया गया।
- **ढोला मारू (1762 ई.):** जालिम सिंह के समय ही वर्ष 1762 में नंदगांव (कोटा) में प्रसिद्ध ढोला मारू ग्रंथ चित्रित हुआ।
- **रागमाला सेट (1768 ई.):** गुमान सिंह के समय चित्रकार डालू और लेखक रामकिशन द्वारा निर्मित यह कोटा शैली का सबसे बड़ा रागमाला सेट है।

- **चरमोत्कर्ष काल:** राव उम्मेद सिंह प्रथम के समय कोटा शैली अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जहाँ बड़ी-बड़ी वसलियों पर शिकार के समूह चित्र बनाए गए।
- **शिकार की प्रधानता:** उम्मेद सिंह के काल में घने जंगलों में हिंसक पशुओं के शिकार का चित्रण इस शैली की मुख्य पहचान बना।
- **अर्जुन महल के नारी चित्र:** यहाँ अंगड़ाई लेती, काँटा निकालती, शिशु को स्तनपान कराती और आलस्य में मदमाती नायिकाओं का सुंदर अंकन मिलता है।
- **महाराव रामसिंह द्वितीय का काल:** 1828 ई. में गद्दी पर बैठे रामसिंह के काल में हाथी-घोड़े की सवारी और शिकार के विशाल चित्र बने।
- **चमत्कारी व विस्मयकारी दृश्य:** रामसिंह के समय महल की छत पर घुड़सवारी, छतरी पर हाथी की सवारी और हाथी की सूँड पर नर्तकी के नृत्य जैसे अनूठे चित्र बने।
- **भित्तिचित्र विषय:** इस दौर में परंपरा के अनुसार शिकार के दृश्यों के साथ-साथ होली और दीपावली के राजसी जुलूसों के भव्य भित्तिचित्र भी बनाए गए।

ढूंढ़ाड़ स्कूल

आमेर/जयपुर शैली

- **विकास:** आमेर शैली का मुख्य विकास मिर्जा राजा जयसिंह के शासनकाल में हुआ।
- **मुख्य ग्रंथ (1639 ई.):** जयसिंह ने रानी चन्द्रावती हेतु 'रसिकप्रिया' व 'कृष्ण रुकमणि वेलि' ग्रंथ मुगल व लोकशैली के समन्वय से बनवाए।
- **गणेशपोल:** मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई. में आमेर दुर्ग में प्रसिद्ध गणेशपोल का निर्माण कराया, जो उत्कृष्ट भित्तिचित्रों से सुसज्जित है।
- **मुगल प्रभाव व रज्मनामा:** आमेर शैली पर मुगल कला का सर्वाधिक प्रभाव है; अकबर हेतु महाभारत का फारसी अनुवाद 'रज्मनामा' इसी शैली के कलाकारों ने तैयार किया था।
- **मुगल प्रभाव:** बैराठ के तथाकथित मुगल गार्डन और मौजमाबाद व भावपुरा के भित्ति चित्रों पर मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।
- **यशोधरा चरित्र:** आमेर शैली के प्रारंभिक चित्रित ग्रंथों में 'यशोधरा चरित्र' प्रमुख है, जिसमें 169 बड़े आकार के चित्र हैं।
- **क्रमिक विकास:** जयपुर की चित्रण परंपरा पूर्ववर्ती राजधानी आमेर की चित्रशैली के क्रमिक विकास का ही परिणाम है।
- **जयसिंह द्वितीय का काल:** जयपुर चित्रशैली का व्यवस्थित विकास महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के शासनकाल में शुरू हुआ।
- **सूरतखाना की स्थापना:** सवाई जयसिंह ने कला व राजचिन्हों के संचालन हेतु 'छत्तीस कारखानों' की स्थापना की, जिसमें चित्र निर्माण के लिए 'सूरतखाना' प्रसिद्ध था।
- **मुहम्मद शाह:** यह सवाई जयसिंह का प्रमुख दरबारी चित्रकार था, जिसने भगवान कृष्ण से संबंधित अनेक सुंदर चित्र बनाए।
- **ईश्वरीसिंह का काल:** सवाई जयसिंह के उत्तराधिकारी ईश्वरीसिंह के समय चित्र सृजन का मुख्य केंद्र (सूरतखाना) आमेर से बदलकर जयपुर स्थानांतरित हो गया।
- **साहिबराम व आदमकद चित्र:** ईश्वरीसिंह के दरबारी चित्रकार साहिबराम ने राजाओं के बड़े 'आदमकद चित्र' बनाकर चित्रकला में नई परंपरा शुरू की।
- **लाल चितेरा:** ईश्वरीसिंह और माधोसिंह के काल के इस प्रसिद्ध चित्रकार ने पशु-पक्षियों की लड़ाइयों और राजकीय खेलों के अनेक चित्र बनाए।
- **माधोसिंह कालीन भित्तिचित्र:** सवाई माधोसिंह के समय गलता के मंदिरों, सिसोदिया रानी के महल, चन्द्रमहल और पुण्डरीक की हवेली में सुंदर भित्ति चित्रण हुआ।
- **मणिकुट्टिम तकनीक:** माधोसिंह के काल में कलाकारों ने चित्रों में रंग भरने के बजाय मोती, लाख और लकड़ी की मणियाँ चिपकाकर अलंकारिक कला को बढ़ावा दिया।
- **पृथ्वीसिंह व हीरानंद-त्रिलोक:** महाराजा पृथ्वीसिंह के समय दरबारी चित्रकार हीरानंद और त्रिलोक ने राजा का भव्य आदमकद पोर्ट्रेट तैयार किया।
- **सवाई प्रतापसिंह का स्वर्णकाल:** महाराजा सवाई प्रतापसिंह का काल जयपुर शैली का 'स्वर्णकाल' माना जाता है, जिसे गुणीजनखाने के कलाकारों ने समृद्ध किया।
- **प्रतापसिंह के चित्रकार:** इस स्वर्णयुग के प्रमुख कलाकारों में रामसेवक, गोपाल, हुकमा, चिमनाराम, सालिगराम और लक्ष्मण के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

अलवर शैली

- **उद्गम व स्थापना:** ढूंढ़ाड़ स्कूल के अंतर्गत अलवर चित्रशैली वर्ष 1775 ईस्वी में जयपुर से स्वतंत्र होकर राव राजा प्रतापसिंह के शासनकाल में अस्तित्व में आई थी।
- **जयपुर से चित्रकारों का आगमन:** प्रतापसिंह के समय जयपुर से शिवकुमार और डालूराम नामक दो कुशल चित्रकार अलवर आए थे, जिनमें से शिवकुमार पुनः जयपुर लौट गए।
- **डालूराम की नियुक्ति:** चित्रकार डालूराम स्थाई रूप से अलवर में ही रुक गए और उन्हें वहाँ राजकीय कलाकार (राज्य चित्रकार) के पद पर सम्मानपूर्वक नियुक्त किया गया।
- **भित्तिचित्र व शीशमहल:** डालूराम भित्तिचित्र बनाने की कला में अत्यधिक दक्ष थे; उनके समय में उन्हीं की देखरेख में राजमहल के किले में 'शीशमहल' के सुंदर व कलात्मक भित्तिचित्र तैयार किए गए थे।
- **बख्तावर सिंह का काल:** राव राजा प्रतापसिंह के बाद गद्दी पर बैठे बख्तावर सिंह वीर व धार्मिक थे, जो 'चन्द्रसखी' एवं 'बख्तेश' नाम से काव्य (जैसे- दान लीला) रचते थे।
- **चित्रकला की नई नींव:** बख्तावर सिंह ने राजगढ़ के महलों में सुंदर 'शीशमहल' का निर्माण व चित्रण करवाकर अलवर में चित्रकला की नई नींव डाली।
- **धार्मिक चित्रण:** इनके काल में महाराज बख्तावर सिंह को स्वयं जंगलों में नाथों, जोगियों और फकीरों से धर्म चर्चा करते हुए अत्यधिक कलात्मकता से चित्रित किया गया है।
- **प्रमुख चित्रकार:** इस दौर में बलदेव, डालूराम, सालगा एवं सालिगराम अलवर रियासत के सबसे प्रमुख और विख्यात चित्रकार थे।
- बख्तावर सिंह के उपरांत अलवर की चित्रकला को नया रूप देने का मुख्य श्रेय महाराव विनय सिंह एवं तिजारा के राव बलवंत सिंह को जाता है।
- **शैली का स्वर्णकाल:** कलाप्रेमी महाराव विनय सिंह का शासनकाल ही अलवर चित्रशैली का वास्तविक और सर्वोत्कृष्ट 'स्वर्णकाल' माना जाता है।
- **गुलिस्तां ग्रंथ:** राजा विनयसिंह ने शेखशादी की प्रसिद्ध 'गुलिस्तां' पांडुलिपि को चित्रकार बलदेव व गुलामअली से विशेष रूप से चित्रित करवाया था।
- **बलवंत सिंह का काल:** इनके समय जमनादास, छोटेलाल, बक्साराम, नन्दराम व सालिगराम ने बड़े पैमाने पर पोथीचित्रों, लघुचित्रों एवं लिपटवाँ पटचित्रों का निर्माण किया।

- **दुर्गासप्तशती चित्र:** राजा बलवंत सिंह ने दुर्गासप्तशती ग्रंथ के चित्र बनाने के लिए विशेष रूप से छोटेलाल को जयपुर से तथा सालिगराम को अलवर से बुलवाया था।
- **कामशास्त्र व नफीरी वादन:** महाराजा शिवदानसिंह के समय कामशास्त्र पर आधारित चित्र अधिक बने, जिसमें 'नफीरी वादन' (शहनाई जैसा वाद्य) इस शैली का सबसे सुंदर उदाहरण है।
- **हाथीदाँत व पक्षी चित्रण:** महाराजा मंगलसिंह के काल में बुद्धाराम पशु-पक्षियों के चित्रण में सिद्धहस्त थे और मूलचंद हाथीदाँत की पट्टियों पर चित्र बनाने में अत्यधिक निपुण थे।

विशेषताएँ:

- **वेश्याओं के चित्र:** राजस्थान में केवल अलवर शैली में ही वेश्याओं (गणिकाओं) के चित्रों का निर्माण हुआ है।
- **हाथीदाँत व वसलियाँ:** हाथीदाँत की पट्टियों पर चित्रांकन और सुंदर बेल-बूटेदार वसलियाँ इस शैली की मुख्य विशेषता हैं।
- **मुख आकृति:** इस चित्रशैली में पुरुषों के मुख की आकृति को विशेष रूप से 'आम की शक्ल' में बनाया गया है।
- **कलात्मक समन्वय:** अलवर शैली मुख्य रूप से ईरानी, मुगल और जयपुर चित्रशैली का एक अत्यंत सुंदर व उचित समन्वय है।

उणियारा उपशैली

- **उद्भव व मिश्रण:** इस शैली को नरुका ठिकाना वंश ने विकसित किया, जो जयपुर और बूंदी चित्रशैली का एक सुंदर मिश्रण है।
- **प्रमुख कलाकार:** उणियारा शैली के श्रेष्ठ कलाकारों में धीमा, मीरबक्स, काशी, रामलखन और भीम प्रमुख हैं।

शेखावाटी उपशैली

- **प्रभाव व भित्तिचित्र:** इस पर जयपुर शैली के भित्ति चित्रांकन का सर्वाधिक प्रभाव है, जो नवलगढ़, रामगढ़, फतेहपुर, मण्डावा और बिसाऊ की हवेलियों में दर्शनीय है।
- **हाथी रूपी गोपी चित्र:** फतेहपुर की गोयनका हवेली (1850 ई.) में भगवान कृष्ण की आठ गोपियों को एक हाथी के रूप में सुंदर चित्रित किया गया है।
- **प्रमुख विषय:** इस शैली में मुख्य रूप से तीज-त्योहार, होली-दीपावली उत्सव, शिकार, महफिल, नायक-नायिका भेद और श्रृंगारी भावों का अंकन मिलता है।
- **ओपन आर्ट गैलरी:** अपनी हवेलियों के इन विशाल व भव्य भित्ति चित्रों के कारण ही शेखावाटी क्षेत्र को 'ओपन आर्ट गैलरी' कहा जाता है।
- **प्रधान रंग:** शेखावाटी के प्रसिद्ध भित्ति चित्रों के निर्माण में मुख्य रूप से कत्थई, नीले और गुलाबी रंगों की प्रधानता रही है.
- **विदेशी योगदान:** फ्रांस के कलाकार नदीन ला प्रिंस ने फतेहपुर की ऐतिहासिक हवेलियों के भित्ति चित्रों के संरक्षण में सराहनीय कार्य कर मिसाल पेश की है।

राजस्थानी चित्रशैलियों के प्रमुख तत्व

चित्रशैली	रंग	पशु	पक्षी	वृक्ष	आँखें
मेवाड़	लाल-पीला	हाथी	चकोर	कदम्ब	मीनाकृत
नाथद्वारा	पीला-हरा	गाय	-	केला	-
जोधपुर	पीला	ऊँट / हरिण	खंजन	आम	बादाम सी
बीकानेर	पीला	ऊँट / हरिण	सारस	आम	मृगनयनी
किशनगढ़	सफेद-गुलाबी	-	हंस / बतख	केला	खंजाकृत / पंखुड़ी सी
कोटा	नीला-हरा	हाथी / घोड़ा	-	खजूर	-
बूंदी	सुनहरा	विविधता	विविधता	खजूर	परवल (पटोल) सी
जयपुर-अलवर	हरा	घोड़ा	मोर	पीपल / बरगद	बड़ी आँखें

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएँ:-

संस्था का नाम	स्थान
कलावृत्त, आयाम, पैग, ललित कला अकादमी, क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप, रचनात्मक कलाकार परिषद	जयपुर
आज, तुलिका परिषद, टमखण-28	उदयपुर
चितेरा, धौरा	जोधपुर
अंकन	भीलवाड़ा
मयूर	टोंक

♦♦♦♦

अभ्यास प्रश्न

1. उस/उन चित्रशैली/शैलियों को चिह्नित कीजिए, जहाँ मतिराम की साहित्यिक रचना रसराज का विषयवस्तु के रूप में उपयोग हुआ है:
(i) जोधपुर (ii) जयपुर
(iii) अलवर (iv) बीकानेर
सही कूट का चयन कीजिए :
(a) केवल (iv) (b) (i) एवं (iv)
(c) (ii) एवं (iii) (d) केवल (i) **[d]**

2. चित्रकला की किशनगढ़ शैली के विषय में कौन से कथन सही हैं?
A. राधा और कृष्ण का रूप सौंदर्य ही चित्रांकन का मुख्य विषय है।
B. अधिकांश चित्रों में स्त्रियों का पहनावा लहँगा, चोली और पारदर्शी आँचल हैं।
C. इस शैली के चित्रकार सीताराम, भवानीदास एवं कल्याणदास हैं।
सही विकल्प चुनिए :
(a) A, B और C (b) A और B
(c) B और C (d) A और C **[a]**

3. सूची-I व सूची-II को सुमेलित करते हुए राजस्थान की प्रसिद्ध चित्रकला शैलियों एवं उनके चित्रकारों के संबंध में सही विकल्प चुनिये:

सूची-I	सूची-II
A. किशनगढ़	i. साहिबदीन
B. बीकानेर	ii. निहालचंद
C. मेवाड़	iii. अली रज़ा
D. मारवाड़	iv. शिवदास

कूट :
(a) A-ii, B-iii, C-iv, D-i (b) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(c) A-ii, B-iv, C-i, D-iii (d) A-ii, B-iii, C-i, D-iv **[d]**

4. उणियारा चित्रकला शैली, चित्रकला की किन शैलियों का मिश्रण है?
(a) जयपुर और बूँदी शैली (b) अलवर और कोटा शैली
(c) कोटा और आमेर शैली (d) बीकानेर और आमेर शैली **[a]**

5. चित्रकला के कोटा स्कूल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए एवं नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए-
(अ) कोटा के महाराव भीम सिंह ने अपने संरक्षण में चित्रकला में कृष्ण भक्ति एवं वल्लभ संप्रदाय को महत्त्व दिया।
(ब) राजा उम्मेद सिंह ने कोटा शैली की चित्रकला में शिकार से संबंधित चित्रों को संरक्षण दिया।
(a) केवल (ब) सही है।
(b) केवल (अ) सही है।
(c) (अ) एवं (ब) दोनों सही हैं।
(d) (अ) एवं (ब) दोनों सही नहीं हैं। **[c]**

6. सुमेलित कीजिए-

वृक्ष	सम्बन्धित चित्रशैली
a. पीपल	(i) जयपुर
b. खजूर	(ii) कोटा
c. आम	(iii) जोधपुर
d. केला	(iii) नाथद्वारा

कूट:-
(a) A-II, B-III, C-IV, D-I
(b) A-III, B-I, C-IV, D-II
(c) A-II, B-IV, C-III, D-I
(d) A-I, B-II, C-III, D-IV **[d]**

7. बूँदी शैली, कोटा शैली, झालावाड़ उपशैली राजस्थानी चित्रकला को किस श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है?
(a) मेवाड़ स्कूल (b) मारवाड़ स्कूल
(c) हाड़ौती स्कूल (d) ढूंढाड़ स्कूल **[c]**

8. निम्नलिखित में से कौन-सी राजस्थानी चित्रकला की मुख्य विशेषताओं में शामिल नहीं है?
(a) राजस्थानी चित्रकला का महलों, किलों, मंदिरों और हवेलियों में सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं होता
(b) ऋतुओं और उनके मानव जीवन पर प्रभाव का श्रृंगारिक चित्रण
(c) प्राकृतिक सौंदर्य और नारी सौंदर्य का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला को विशिष्ट पहचान देता है
(d) चित्रों में 'भक्ति' और 'शृंगार' दर्शाने में जीवंत रंगों का प्रयोग **[a]**

9. 'चावण्ड चित्रशैली' के ऐतिहासिक संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: इस चित्रशैली का प्रारंभ महाराणा प्रताप के काल में हुआ था, जबकि इसका 'स्वर्णकाल' अमरसिंह प्रथम के शासनकाल को माना जाता है।
कथन II: चावण्ड शैली के प्रसिद्ध चित्रकार निसारुद्दीन ने 1605 ई. में 'रागमाला' सेट का चित्रण किया था।
कथन III: निसारुद्दीन द्वारा 1592 ई. में चित्रित 'ढोला-मारू' का चित्र वर्तमान में बीकानेर संग्रहालय में संरक्षित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
(a) केवल I और II (b) केवल II और III
(c) केवल I और III (d) I, II और III **[a]**

10. मेवाड़ चित्रशैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: महाराणा जगतसिंह प्रथम के शासनकाल को मेवाड़ चित्रशैली का 'स्वर्णकाल' कहा जाता है।
कथन II: इन्होंने चित्रकारों के प्रशिक्षण हेतु 'चितेरों की ओवरी' नामक कला विद्यालय की स्थापना की, जिसे 'तस्वीरों रो कारखानों' भी कहा जाता है।
कथन III: प्रसिद्ध चित्रकार साहिबद्दीन ने इनके संरक्षण में 'शूकर क्षेत्र महात्मय' और 'भ्रमरगीत' जैसे चित्रों की रचना की थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
(a) केवल I और II (b) केवल II और III
(c) केवल I और III (d) I, II और III **[d]**

11. मेवाड़ चित्रकला शैली का सबसे प्राचीन चित्रित ग्रंथ ..... है।
(a) सपासनाचार्यम
(b) रागिनी
(c) भागवत
(d) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि **[d]**

12. प्रलंबन ग्रीवा, लम्बी आकृति वाली आँखे, नीचे झुकती भौंहें, पतले अधर एवं नुकीली ठौड़ी वाली महिला जो आकर्षक मुद्रा में मलमल की औढ़नी से अपना सिर ढके खड़ी है। यह कृति है?
(a) बूँदी स्कूल पेंटिंग
(b) किशनगढ़ स्कूल पेंटिंग
(c) मारवाड़ स्कूल पेंटिंग
(d) मेवाड़ स्कूल पेंटिंग **[b]**

13. किशनगढ़ चित्रशैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: 'बणी-ठणी' चित्र सावंतसिंह (नागरीदास) की प्रेमिका रसिक बिहारी का व्यक्तिगत चित्र है, जिसे मोरध्वज निहालचंद ने चित्रित किया था।
कथन II: प्रसिद्ध कला समीक्षक एरिक डिक्सन ने इस चित्र की सुंदरता के कारण इसे 'भारत की मोनालिसा' की संज्ञा दी।
कथन III: 'बणी-ठणी' पर भारत सरकार द्वारा वर्ष 1973 में 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया था।
कथन IV: 'चाँदनी रात की गोष्ठी' किशनगढ़ शैली का एक प्रसिद्ध चित्र है, जिसे अमरचन्द द्वारा चित्रित किया गया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सत्य हैं?
(a) केवल I, II और III (b) केवल II, III और IV
(c) केवल I, III और IV (d) I, II, III और IV **[d]**

14. घाणेराव, रियाँ, भिनाय, जूनियाँ आदि ठिकाणा कला सम्बन्धित है-
(a) मेवाड़ स्कूल चित्रशैली (b) मारवाड़ स्कूल चित्रशैली
(c) हाड़ौती स्कूल चित्रशैली (d) ढूँढ़ाड स्कूल चित्रशैली **[b]**

15. जोधपुर (मारवाड़) चित्रशैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: राव मालदेव के शासनकाल में जोधपुर के 'चोखेलाव महल' में प्रसिद्ध भित्ति चित्र (Fresco) बनवाए गए थे।
कथन II: महाराजा मानसिंह के शासनकाल में जोधपुर शैली पर 'नाथ संप्रदाय' का व्यापक प्रभाव देखा जाता है।
कथन III: 'रागमाला' (वीरजी द्वारा) और 'अभयसिंह का नृत्य देखते हुए चित्र' (डालचंद द्वारा) इस शैली के प्रमुख ऐतिहासिक चित्र हैं।
कथन IV: मारवाड़ शैली में मुख्य रूप से नीले और हरे रंग का प्रयोग किया गया है तथा हाशिये में काले रंग का चित्रण मिलता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सत्य हैं?
(a) केवल I, II और III
(b) केवल II, III और IV
(c) केवल I और III
(d) I, II, III और IV **[a]**

16. निम्नलिखित में से कौन राजपूताना चित्रकला के स्कूलों और उनकी शैलियों के अनुसार सही सुमेलित नहीं है?
(a) मेवाड़ स्कूल - नाथद्वारा और देवगढ़ शैलियाँ
(b) मारवाड़ स्कूल - किशनगढ़ और नागौर शैलियाँ
(c) हाड़ौती स्कूल - कोटा और बूँदी शैलियाँ
(d) ढूंढाड़ स्कूल - चावंड और उदयपुर शैलियाँ **[d]**

17. राजस्थानी चित्रकला शैली का स्वर्णिम काल कौन-सी सदी मानी जाती है?
(a) 15वीं सदी (b) 16वीं सदी
(c) 17वीं सदी (d) 18वीं सदी **[c]**

18. किसने पाली के नायक विट्ठलदास चंपावत के लिए रागमाला चित्रावली बनाई?
(a) कलाकार शिव दास (b) कलाकार वीर जी
(c) कलाकार दाना भाटी (d) कलाकार माधो दास **[b]**

19. नाथद्वारा चित्रशैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
कथन I: यह मेवाड़ स्कूल की एक उपशैली है, जिसका प्रारंभ और स्वर्णकाल महाराणा राजसिंह के शासनकाल (1672 ई.) को माना जाता है।
कथन II: इस शैली में वल्लभ संप्रदाय के प्रभाव के कारण भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं और 'पिछवाई' (कपड़े पर चित्रांकन) का प्रमुखता से अंकन हुआ है।
कथन III: कमला और इलायची इस चित्रशैली की प्रमुख महिला कलाकार रही हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
(a) केवल I और II (b) केवल II और III
(c) केवल I और III (d) I, II और III **[d]**

20. कोटा चित्रशैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. इस शैली का स्वर्णकाल राजा उम्मेदसिंह प्रथम के शासनकाल को माना जाता है।
2. डालुराम नामक चित्रकार ने 1768 ई. में 'रागमाला' सेट का चित्रण किया था।
3. इस शैली में केवल पुरुषों को ही शिकार करते हुए दर्शाया गया है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3 **[a]**

21. जयपुर चित्रशैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए-
1. सवाई जयसिंह ने चित्रकला के विकास के लिए 'सूरतखाना' का निर्माण करवाया था।
2. इस शैली का स्वर्णकाल महाराजा सवाई प्रतापसिंह के शासनकाल को माना जाता है।
3. चित्रकार साहिबराम ने महाराजा ईश्वरी सिंह का प्रसिद्ध 'आदमकद चित्र' (Life-size portrait) बनाया था।
4. इस शैली पर यूरोपीय प्रभाव सवाई रामसिंह द्वितीय के समय दिखाई देता है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?
(a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 2, 3 और 4
(c) केवल 1 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4 **[d]**

22. बीकानेर में मथैरण समुदाय के सम्बन्ध में दिए कथनों में कौनसा कथन सही हैं?
1. बीकानेर चित्र शैली के विकास में इनका प्रचुर योगदान है।
2. महाराजा अनूप सिंह के काल में मथैरण समुदाय को संरक्षण मिला।
3. मथैरण विशेषकर शासकों के व्यक्तिगत चित्र उकेरने के लिए जाने जाते हैं।
4. मथैरण, जो अपने आप महात्मा भी कहते हैं, एक जैन समुदाय है।
(a) केवल 1 एवं 3 (b) केवल 1, 2 और 3
(c) केवल 2 और 3 (d) ये सभी **[d]**

♦♦♦♦

- "राजस्थान अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ के लोक गीत भी इसी समृद्ध संस्कृति हिस्सा हैं। राजस्थान के लोक गीत न केवल मनोरंजक हैं, बल्कि इनमें राजस्थानी जीवन और संस्कृति का गहरा समावेश है।"

लोक गीतों की विशेषताएँ:-

- **संस्कृति का दर्पण:** इनमें स्थानीय संस्कृति, मानवीय उमंग, वियोग और हृदय पीड़ा का सजीव वर्णन होता है।
- **सरल व हृदयस्पर्शी:** इनके बोल बनावटी अलंकरण रहित परंतु अत्यधिक सीधे और दिल को छूने वाले होते हैं।
- **विषय विविधता:** इनमें पारिवारिक स्नेह, सामाजिक प्रेम और लोक जीवन के विविध रंग शामिल हैं।
- **पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाह:** ये गीत बिना किसी लिखित दस्तावेज के मौखिक रूप से अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं।
- **सर्वाधिक प्रचलित तालें:** राजस्थान के सामूहिक या सामुदायिक लोकगीत मुख्य रूप से **कहरवा** या **दादरा (दादूर) ताल** में गाए जाते हैं।
- **कठिन व व्यावसायिक तालें:** कलात्मक और व्यावसायिक लोकगीतों में **दीपचंदी, झूमरा** और **रूपक तालों** का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है।
- **कलाबाजी की आवश्यकता:** ये तीनों ही अपेक्षाकृत कठिन तालें हैं, जिनमें गायन के दौरान अधिक कलात्मक निपुणता और कलाबाजी की आवश्यकता होती है।

व्यक्तित्व	कथन / विवरण
रवीन्द्रनाथ टैगोर	लोक गीत संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है।
महात्मा गाँधी	लोक गीत जनता की भाषा है, लोक गीत हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं।
देवेन्द्र सत्यार्थी	लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोले चित्र हैं।

राजस्थानी लोकगीत (राग एवं रस)

- **होली के गीत:** फाल्गुन मास में पुरुषों की टोलियों द्वारा मुख्य रूप से रसिया, होरी और धमाल आदि गीत गाए जाते हैं।
- **व्यावसायिक राग:** व्यावसायिक गायकों के गीतों में मांड, देस, सोरठ, मारू, कालिंगड़ा, परज, जोगिया, आसावरी, बिलावल और पीलू रागों की प्रधानता है।
- **वीर रसात्मक गीत:** प्राचीन काल में युद्ध के समय व्यावसायिक जातियों द्वारा गाए जाने वाले वीर रस के गीत मुख्यतः सिन्धु और मारू रागों पर आधारित होते थे।
- **श्रृंगार रस की प्रधानता:** राजस्थान के लोकगीतों में यदि रस की दृष्टि से देखा जाए, तो सबसे अधिक संख्या श्रृंगार रस के गीतों की मिलती है।
- **ब्रज संस्कृति का प्रभाव:** भरतपुर और कामाँ क्षेत्रों में ब्रज संस्कृति के प्रभाव के कारण भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से संबंधित लोकगीत गाए जाते हैं।
- **दांपत्य प्रेम के गीत:** पति-पत्नी के प्रेम को दर्शाने वाले गीतों में आँखों, इमली, नीमड़ली, ओळू, पनजी, मरवो, सूवटौ, सपनो, कुरजां, कसुंभौ, लहरियो, जल्लौ, उमराव और नींबू प्रमुख हैं।
- लोकगीतों में पति को सुगणी सासू रा जाया, भंवरजी, कंवरजी, पन्नामारू, ढोला मारू, बादिलो, हठिलो और बिलालो कहा गया है।
- गीतों में पत्नी को धण, गोरी, मरवण, नाजौ, मृगनैनी, मिजाजण और सदा सुरंगी सुरंगी नार नामों से पुकारा गया है।
- राजस्थानी गीतों में सवाल-जवाब की कला मिलती है; जैसे बायरो, कलाळी, पणिहारी, कुरजां, सुपनो और ओळू गीत।
- यहाँ शरद, ग्रीष्म, वर्षा व वसंत के गीत गाए जाते हैं; जैसे फाग, बीजण, सियाळा, बारहमासा, होली, चेत्ती और कजली।
- वर्षा ऋतु में मुख्य रूप से चौमासा, पपैयो, बादळी, मोर और इन्द्रदेव की स्तुति के गीत गाए जाते हैं।
- इसी प्रकार पशु-पक्षियों के संबोधन के लोकगीत भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। काग, कबूतर, मोरियो, तीतर, रूणझुण बेल, लीली घोड़ी, कमेड़ी, सुओ, मिरगलो, मीनड़ी आदि का संबोधन भी मधुर है।
- मारवाड़ के अधिकांश गीत, दोहे देस व सोरठ पर आधारित है।

मरुप्रदेशीय गीत

- **क्षेत्र:** इसमें जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर व शेखावाटी क्षेत्र के लोकगीत शामिल हैं।
- **गायन शैली:** इस मरुस्थलीय क्षेत्र के गीत ऊँचे स्वरों, लम्बी धुन व अधिक स्वर विस्तार वाले होते हैं।
- **संगीतज्ञ जातियाँ:** यहाँ कामड़, भोपे, सरगड़े, लंगे, मिरासी और कलावंत जातियों ने लोक संगीत का प्रसार किया।
- **मुख्य गीत:** मूमल, केसरिया बालम, पीपली, झोरावा, कुरजां, पपैयो, घूघरी, गोरबन्द, कांगसियो, घूमर, घुड़ला, इण्डोणी, पणिहारी और बिणजारा।
- **झोरावा गीत:** यह विशेष रूप से जैसलमेर क्षेत्र में पति के परदेश जाने पर उसके वियोग में गाया जाने वाला विरह गीत है।
- **मूमल:** जैसलमेर का प्रसिद्ध लोकगीत, जिसमें लोद्रवा की राजकुमारी मूमल के सौंदर्य का नख-शिख वर्णन है।
- **केसरिया बालम:** मारवाड़ (मरुप्रदेश) का विख्यात रजवाड़ी विरह गीत, जिसे मुख्य रूप से मांड गायन शैली में गाया जाता है।
- **पीपली:** मारवाड़ व शेखावाटी क्षेत्र में वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला विरह गीत, जिसका प्रतीक पीपल का वृक्ष है
- **कुरजां:** जोधपुर में वर्षा ऋतु में मांड गायन शैली में गाया जाने वाला विरह गीत, जिसका प्रतीक कुरजां पक्षी है।
- **इंडोणी:** ग्रामीण महिलाओं द्वारा कुएँ से पानी लेने जाते समय गाया जाने वाला एक पारंपरिक लोकगीत है।
- **पणिहारी:** पानी भरने जाते समय गाया जाने वाला गीत, जो राजस्थान में पानी की कमी और उसके महत्व को दर्शाता है।
- **पपैयो:** वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक विशेष लोकगीत, जो दांपत्य प्रेम के आदर्श का प्रतीक माना जाता है।
- **घूघरी:** जन्मोत्सव के अवसर पर मांड गायन शैली में महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला स्नेहपूर्ण नोकझोंक व हास्य रस का गीत।
- **गोरबंद:** मारवाड़ व शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकगीत; गोरबंद वास्तव में ऊँट के गले का एक श्रृंगारिक आभूषण है।
- **घूमर:** पूरे राजस्थान में गणगौर के अवसर पर गाया जाने वाला लोकगीत; मारवाड़ क्षेत्र में घूमर गीत को 'लूर' कहा जाता है।
- **कागा:** मारवाड़ अंचल का एक विख्यात विरह गीत है, जिसमें घर की छत पर बैठे कौवे (कागा) को उड़ने का प्रतीक माना जाता है।
- **बिणजारा:** मरुप्रदेश में रातीजगा (रात्रि जागरण) के समय ग्रामीण स्त्रियों द्वारा प्रश्नोत्तर (सवाल-जवाब) शैली में गाया जाने वाला गीत।

प्रमुख पर्वतीय गीत

- **भौगोलिक क्षेत्र:** इन गीतों के अंतर्गत डूंगरपुर, उदयपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, सिरोही, आबू तथा राजस्थान का संपूर्ण दक्षिणी पहाड़ी प्रदेश शामिल है।

- **सामुदायिक जुड़ाव:** यह मुख्य रूप से अरावली पर्वतीय क्षेत्र की जनजातियों (जैसे भील, मीणा, गरासिया) द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतों का क्षेत्र है।
- **स्वर बनावट:** यहाँ के अधिकांश पर्वतीय गीत केवल दो या चार स्वरों पर आधारित होते हैं, जिनमें शब्दों का बनावटी सौंदर्य नहीं होता।
- **वाद्य व नृत्य:** इन लोकगीतों के साथ मुख्य रूप से 'मांदल' वाद्य यंत्र बजता है तथा स्त्री-पुरुष सम्मिलित होकर सामूहिक नृत्य करते हैं।
- **लोकप्रिय पर्वतीय गीत:** घूमर, पटेल्या, लालर, माछर, नोखीला थारी ऊँटां री असवारी, हेली रंगरो बधावो, लहरियो, बीछियो, नाव री असवारी और शिकार।
- **हमसीढो:** यह उत्तरी मेवाड़ के भील समुदाय का प्रसिद्ध सामूहिक लोकगीत है, जिसे स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर एक साथ गाते हैं।
- **सुवटिया:** मेवाड़ क्षेत्र की भील महिलाएँ पति के परदेश जाने पर तोते (सूए) को संबोधित करके यह विरह प्रधान गीत गाती हैं।
- **ढोला मारु:** यह सिरोही क्षेत्र का एक अत्यंत लोकप्रिय लोकगीत है, जिसे स्थानीय स्तर पर 'ढाढ़ी' जाति के कलाकारों द्वारा गाया जाता है।
- **मैदानी गीत क्षेत्र:** इस भौगोलिक वर्गीकरण के अंतर्गत मुख्य रूप से कोटा, जयपुर, भरतपुर, करौली और धौलपुर जिलों के लोकगीत शामिल हैं।

विवाह के गीत

- **काजलियों:** बारात निकासी के समय दूल्हे की भाभी द्वारा आँख में काजल लगाने की रस्म पर गाया जाने वाला लोकगीत।
- **कामण:** विवाह के मांगलिक अवसर पर वर (दूल्हे) को टोने-टोटके और बुरी नज़र से बचाने के लिए गाया जाने वाला गीत।
- **सीठणे:** विवाह के समय स्त्रियों द्वारा समधियों (बारातियों) के सत्कार में गाए जाने वाले हास्य-व्यंग्य युक्त गाली गीत।
- **दुपट्टा:** शादी की रस्मों के दौरान दूल्हे की सालियों द्वारा सामूहिक रूप से गाया जाने वाला मनोरंजक गीत।
- **कोयलड़ी:** बेटी की विदाई के भावुक क्षण पर परिवार की महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला विरह प्रधान गीत।
- **जखड़ी:** वधू (दुल्हन) की विदाई के समय उसकी सहेलियों और सखियों द्वारा गाया जाने वाला विदाई गीत।
- **फलसड़ा:** विवाह के समय घर पर अतिथियों और मेहमानों के आगमन पर उनके स्वागत में गाया जाने वाला मंगल गीत।
- **आम्बो मोरियो:** राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में बेटी की विदाई के अवसर पर गाया जाने वाला एक अन्य पारंपरिक गीत।
- **पावणा:** नए दामाद के ससुराल आने पर भोजन कराते समय महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला पारम्परिक स्वागत गीत।
- **बधावा:** किसी भी शुभ या मांगलिक कार्य के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर गाया जाने वाला खुशी का मंगल गीत।
- **परभातिया:** विवाह के दिनों में प्रातः काल (सुबह के समय) स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले मांगलिक लोकगीत।
- **ओल्यूं:** बेटी की विदाई के समय उसकी याद में परिवार की महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला अत्यंत भावुक विरह गीत।
- **घोड़ी:** वर की घुड़चढ़ी और बारात निकासी के विशेष अवसर पर गाया जाने वाला उत्साहपूर्ण गीत।
- **जला:** वधू पक्ष की स्त्रियों द्वारा वर की बारात का डेरा देखने जाते समय गाया जाने वाला सुरीला गीत।
- **अन्य गीत:** शादी के दौरान सगाई, बिंदोला, पीठी, तोरण, हथलेवा, कँवरकलेवा, भात, जीमणवार, कांकणडोरा और जुआ-जुई के समय गाए जाने वाले विविध लोकगीत।

त्योहार संबंधी गीत

- **प्रमुख अवसर:** इस वर्ग में मुख्य रूप से गणगौर, तीज, होली और दीपावली के पवित्र अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत शामिल हैं।
- **मेवाड़ की दीपावली परंपरा:** दीपावली से 15 दिन पूर्व बच्चों की टोलियाँ घर-घर जाकर गाती हैं, जो मेवाड़ अंचल में अत्यधिक प्रचलित है।
- **लोवड़ी (हरणी):** दीपावली के पूर्व घर-घर घूमकर लड़कों की टोलियों द्वारा गाए जाने वाले गीतों को 'लोवड़ी' या 'हरणी' कहते हैं।
- **घड़ल्यों:** दीपावली के पूर्व लड़कियों की टोलियों द्वारा गाए जाने वाले पारंपरिक लोकगीतों को 'घड़ल्यों' कहा जाता है।
- **पीपली:** मारवाड़, बीकानेर और शेखावाटी क्षेत्रों में वर्षा ऋतु के दौरान तीज के उत्सव पर गाया जाने वाला प्रसिद्ध लोकगीत।
- **हिण्डोला:** सावन के पवित्र महीने में महिलाओं द्वारा झूला झूलते समय गाया जाने वाला मधुर लोकगीत।
- **महफिलों के गीत:** सामंतों और राज दरबारों की महफिलों में गाए जाने वाले गीत, जिन्हें **गढ़ गीत** भी कहा जाता है।
- **प्रमुख गढ़ गीत:** इन महफिली गीतों में मुख्य रूप से रतन राणो, पणिहारी, बायरियो, घूंसो, राणे सूमरो, मूमल झालो और पांखियो शामिल हैं।
- **पेशेवर जातियाँ:** इन राजसी और महफिली गढ़ गीतों को गाने का कार्य प्रमुख रूप से **ढोली** और **दमामी** जातियाँ करती हैं।
- **कलाळी:** पारंपरिक रूप से शराब निकालने और बेचने का व्यवसाय करने वाली कलाळी जाति द्वारा गाया जाने वाला प्रसिद्ध गीत।

राजस्थान के अन्य महत्वपूर्ण लोकगीत–

- **जच्चा / होलार:** शिशु के जन्म के शुभ अवसर पर महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला मांगलिक गीत।
- **धेनडिया:** विशेष रूप से पुत्र रत्न की प्राप्ति (पुत्र जन्म) के अवसर पर गाया जाने वाला लोकगीत।
- **झाडलो:** नवजात शिशु के मुंडन (जडूला) संस्कार के समय गाया जाने वाला पारंपरिक गीत।
- **मोरिया:** उस कन्या द्वारा गाया जाने वाला विरह गीत जिसका रिश्ता (सगाई) तो तय हो चुका है, परंतु विवाह में अभी देरी है।
- **कूकड़ी:** धार्मिक उत्सवों या आयोजनों में रात्रि जागरण (रातिजोगा) की समाप्ति पर महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला अंतिम गीत।
- **हरजस:** मांगलिक और शुभ अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला सगुण भक्ति गीत, जिसमें भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण की लीलाओं का सुंदर वर्णन होता है।
- **जीरो:** अत्यंत कठिन और नुकसानदेह मानी जाने वाली जीरे की फसल को न बोने के लिए, एक पत्नी द्वारा अपने पति से की जाने वाली भावपूर्ण विनती का गीत।
- **सेंजा:** कुंवारी कन्याओं को अच्छे वर (पति) की प्राप्ति हो, इस कामना के साथ महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला एक सुंदर विवाह गीत।
- **जकड़िया:** मुस्लिम संतों और पीरों की महिमा, प्रशंसा तथा आदर में गाया जाने वाला श्रद्धामय गीत।
- **पंछीड़ा:** हाड़ौती और ढूंढाड़ अंचलों में विभिन्न त्योहारों, उत्सवों तथा मेलों के उमंग भरे माहौल में गाया जाने वाला लोकगीत।
- **चौक चानणी:** बीकानेर तथा शेखावाटी क्षेत्रों में गणेश चतुर्थी के पावन पर्व पर बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला बाल त्योहार और उससे जुड़ा लोकगीत।
- **नारंगी–** ये गीत गर्भावस्था में जब स्त्रियां खट्टी चीजें खाती हैं, उन्हीं से सम्बन्धित ये गीत है।
- **पुरुषों के गीत-** भजन, होली पर चंग के गीत, धमालें आदि।
- बालकों के गीतों के अवसर चौक च्यानणी (गणेश चतुर्थी महोत्सव), ढप के गीत, धमालें, टम्पो घोड़ी फूल गुलाब रो, म्हारा महैला पाछे कूण है, मछली मछली कितणो पाणी, काकड़ वेल मतीरा पाक्या टींडसिया का टोरा लाग्या।
- स्त्रियों के गीतों के अवसर होली, तीज (चौमासा, विशेषतः श्रावण मास), गणगौर (घूमर), विवाह, पुत्र-जन्मोत्सव, रातिजगे, हरजस, बारा मासिये, शीतला, पावणा के शुभागमन पर, कार्तिक स्नान, जच्चा, जात, जडूले एवं मेले।

- बालिकाओं के गीतों के अवसर चानाचट के त्योहार पर, गणगौर, जीजा के आगमन पर, तीज (झूले के गीत)।
- **हर ये हिंडोलो-** बुजुर्ग व्यक्ति की मृत्यु पर गाया जाने वाला गीत है।
- **छेड़ा-** छोटे बच्चे की मृत्यु पर गाया जाने वाला गीत हैं।

मांड गायन शैली :

- जैसलमेर क्षेत्र में गायी जाने वाली राग मांड गायन कहलायी क्योंकि 10वीं सदी में इस क्षेत्र को मांड कहा जाता था।
- जैसलमेर मांड, बीकानेरी मांड, जोधपुरी मांड आदि इस शैली के प्रकार है।
- यह राजस्थान की श्रृंगार रसात्मक गायन शैली है। इसमें घराना परम्परा का अभाव है।

प्रमुख कलाकार	स्थान
स्व. अल्लाह जिलाई बाई	बीकानेर
गवरी देवी	पाली
स्व. गवरी देवी	बीकानेर
स्व. मांगीबाई	उदयपुर
जमीला बानो	जोधपुर
बन्नो बेगम	जयपुर
बतूल बेगम	जयपुर

- मांड गायिकी का प्रसिद्ध गीत 'केसरिया बालम' है जो अल्लाह जिलाई बाई ने गाया था।
- स्व. हाजन अल्लाह जिलाई बाई को "मरू कोकिला" कहा जाता है।
- गवरी देवी (पाली) को "राजस्थान की कोकिला" कहा जाता है। यह भैरवी युक्त मांड गायकी के लिए जानी जाती है।
- माण्ड गायिका बतूल बेगम को नारी शक्ति पुरस्कार 2021 से सम्मानित किया गया है।
- बन्नो बेगम नृत्यांगना गोहरजान की पुत्री है।

मांगणियार गायन शैली :

- मांगणियार गायन शैली राजस्थान के पश्चिमी मरूस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्र (विशेषकर बाड़मेर व जैसलमेर) में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गाया जाने वाली लोक गायन शैली
- इस गायन शैली में कामायचा व खड़ताल प्रमुख वाद्या कत्र होते है।
- इस गायन शैली में 6 राग और 36 रागनियाँ है।
- मांगणियार मूलतः सिंध प्रांत के है। गायन व वादन इनका प्रमुख पेशा है।
- सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रमुख खड़ताल वादक), खाँ मांगणियार (प्रमुख कमायचा वादक), रमजान खाँ (प्रमुख ढोलक वादक), साफर खाँ, समन्दर खाँ मांगणियार, गफूर खाँ, अकला देवी, गमड़ा खाँ, रूक्मा देवी आदि प्रमुख मांगणियार गायन शैली के प्रमुख कलाकार हैं।

लंगा गायन शैली :

- लंगा गायन शैली बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर जिले के पश्चिम क्षेत्र में मांगलिक अवसरों पर लंगा जाति के गायकों के द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली है।
- लंगा गायन शैली में कामायचा व सारंगी प्रमुख वाद्य यंत्र होते हैं।
- बाड़मेर का बड़वना गाँव इस जाति के लिए प्रसिद्ध है। मूलतः राजपूत इनके जजमान होते हैं।
- फूसे खाँ लंगा, करीम खाँ लंगा, महरदीन लंगा, अल्लाद्दीन लंगा आदि प्रमुख लंगा गायन शैली के कलाकार हैं।

लंगा जाति दो धड़ो में विभक्त है -

1. सारंगिया लंगा सारंगी बजाने वाले -
2. शहनाइया लंगा सुरनाई या शहनाई बजाने वाले।

तालबंदी गायन शैली :

- **क्षेत्र:** प्रमुख रूप से राजस्थान के पूर्वी जिलों **भरतपुर, करौली, धौलपुर और सवाई माधोपुर** में प्रचलित।
- **प्रकृति:** यह लोक गायन की एक अनूठी **शास्त्रीय परंपरा** है।
- **मूल इतिहास:** मुगल बादशाह **औरंगजेब के काल में** संगीत की रक्षा के लिए ब्रज के कुछ साधु-महात्माओं ने सवाई माधोपुर क्षेत्र में आकर इस गायकी की शुरुआत की थी।
- **मुख्य वाद्य यंत्र:** सारंगी, हारमोनियम, ढोलक, तबला, झाँझ और **नगाड़ा (बंब)**।
- **गायन विषय:** राग-रागनियों में बंधी प्राचीन कवियों की **पदावलियाँ सामूहिक रूप से** गाई जाती हैं।
- **गायन के प्रकार:** इस गायकी में द्वितال, दादरा, धमार, एकताल और झपताल आदि तालों का प्रयोग होता है।
- **राजस्थान कबीर यात्रा:** सांप्रदायिक सौहार्द और सामाजिक सद्भावना के लिए पर्यटन विभाग व लोकायन संस्था के सहयोग से आयोजित होने वाला **वार्षिक संगीतमय सफर**।

हवेली संगीत गायन शैली :

- **प्रधान केंद्र:** राजस्थान के **नाथद्वारा (राजसमंद)** में इस शैली का मुख्य केंद्र स्थित है।
- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** मुगल बादशाह **औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता** के समय मंदिरों से विग्रह हटाकर सुरक्षित हवेलियों में बंद कमरों के भीतर इस संगीत को विकसित किया गया।
- **नाथद्वारा आगमन:** मूर्तियों की सुरक्षा हेतु भगवान **श्रीनाथ जी के स्वरूप** को राजस्थान के नाथद्वारा लाया गया, जिससे यह क्षेत्र हवेली संगीत का गढ़ बना।
- **अष्टछाप संबंध:** इन हवेलियों में भगवान के विग्रह की स्थापना और **अष्टयाम सेवा** (आठ पहर की पूजा) होने के कारण **अष्टछाप संगीत** को ही हवेली संगीत कहा जाता है।

शास्त्रीय संगीत

शास्त्रीय संगीत को राजा-महाराजाओं का संरक्षण

जयपुर राज्य-

- **महाराजा मानसिंह:** मुगल सम्राट अकबर के प्रधान सेनापति और उनके नौ रत्नों में से एक थे।
- **माधव सिंह (पुंडरीक विठ्ठल):** इनके आश्रय में प्रसिद्ध ग्रंथकार पुंडरीक विठ्ठल ने 'रस मंजरी' और 'रागमाला' जैसे महान संगीत ग्रंथों की रचना की।
- **मिर्जा राजा जयसिंह:** इनके शासनकाल में प्रसिद्ध ग्रंथ **'हस्तकार रत्नावली'** लिखा गया।
- **सवाई प्रताप सिंह:** यह स्वयं एक संगीताचार्य और उच्च कोटि के कवि थे।
- **माधोसिंह द्वितीय (जयपुर):** इनके प्रमुख दरबारी संगीतज्ञों में आशिक अली, इनायत खाँ, जमालुद्दीन खाँ (बीनकार) और कायम सेन (सितारवादक) शामिल थे।
- **टोंक रियासत:** यहाँ के नवाब इब्राहिम खाँ स्वयं एक कुशल संगीतज्ञ थे। टोंक दरबार के प्रमुख संगीतकारों में फतह अली, अलीबख्श और सफदर हुसैन मुख्य थे।
- **अलवर रियासत:** इस राज्य के प्रसिद्ध संगीतज्ञों में मुर्शरफ खाँ (बीनकार), रहीम सेन (सितारवादक), मुबारक अली खाँ (गायक) और ऊमर फारुख मेवाती (प्रसिद्ध भपंग वादक) उल्लेखनीय हैं। प्रसिद्ध ध्रुपद गायक अल्लाबन्दे खाँ भी अलवर दरबार की शोभा बढ़ाते थे।
- **उत्पत्ति:** ध्रुपद गायकी का आरंभ ग्वालियर के **राजा मानसिंह तोमर** के समय में हुआ था।
- **राजस्थान की वाणियाँ:** इस गायकी की दो प्रमुख शैलियों (वाणियों) का विकास राजस्थान से माना जाता है
- **खण्डारी वाणी:** इसके प्रवर्तक खण्डार निवासी **समोखन सिंह** थे।

- **नोहारी वाणी:** इसके प्रवर्तक नोहार निवासी **श्रीचंद** थे।
- **अकबर कालीन गायक:** मुगल सम्राट अकबर के समय तानसेन, उनके गुरु स्वामी हरिदास, नायक बैजू और गोपाल देश के सबसे प्रसिद्ध ध्रुपद गायक थे।
- **डागर घराना:** ध्रुपद गायकी के प्रसिद्ध 'डागर घराने' का विकास जयपुर के महाराज सवाई रामसिंह के दरबारी गायक **बहराम खाँ** ने किया था
- डागर घराने के प्रमुख संगीतज्ञों में जाकिरूद्दीन खाँ, अल्लाबन्दे खाँ, नसीरूद्दीन खाँ, तानसेन, नसीर मुइनुद्दीन अमीनुद्दीन (डागर बन्धु) आदि प्रमुख हैं।

ख्याल गायन शैली:

- ब्याल गायन शैली वर्तमान समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन शैली मानी जाती है। इस शैली में अनेक घरानों का विकास हुआ जिनमें जयपुर घराना, पटियाला घराना, दिल्ली घराना, ग्वालियर घराना, आगरा घराना, रंगीला घराना प्रमुख हैं।

जयपुर घराना:

- इस घराने का प्रवर्तक राजस्थान निवासी मनरंग को माना जाता है। मनरंग सदारंग के पुत्र थे। सदारंग ने दिल्ली घराने का प्रवर्तन किया।
- मुहम्मद अली खाँ इस घराने के अन्य प्रसिद्ध गायक हुए जो कि महाराजा रामसिंह के दरबारी संगीतज्ञ थे। इनको जयपुर में 'कोठिवाले' तथा भातखण्डे जी की 'क्रमिक पुस्तक मालिका' में हररंग के उपनाम से जाना जाता है।
- अल्लादिया खाँ द्वारा प्रवर्तित गायन शैली को भी जयपुर घराने के नाम से पुकारते हैं। इस घराने के प्रमुख गायकों में भास्कर बुआ, केसरबाई केरकर, भूर्जी खाँ, मोगू बाई आदि प्रमुख हैं।

मेवाती घराना:

- इसका प्रारंभ घग्घे नज़ीर खाँ द्वारा किया गया। यह जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह के दरबारी गायक थे। नाथूलाल चिमनीलाल इनके शिष्य थे।
- इनके बाद मोतीराम-ज्योतिराम इस घराने की गायकी में 'ज्योति-मोती' के नाम से काफ़ी प्रसिद्ध हुए।
- इस घराने के प्रमुख गायकों में पं. जसराज, पं. प्रताप, पं. मणिराम व श्री पूरणचन्द्र आदि प्रमुख हैं।

पटियाला घराना:

- इसके संस्थापक अलीबख्श और फतह अली हैं जिन्हें आलिया-फत्तु के नाम से भी जाना जाता है। इन दोनों ने संगीत की शिक्षा अलीबख्श के पिता मियाँ कालू से प्राप्त की थी जो महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक थे। इसके बाद इन दोनों ने राजस्थान की गोकीबाई और दिल्ली के तानरस खाँ से शिक्षा ग्रहण पाकिस्तानी गजल गायक 'गुलाम अली खाँ घराने से था।

अतरोली घराना:

- इसके प्रवर्तक साहब खाँ हैं।
- जयपुर राज्य के अंतर्गत उणियारा ठिकाने के जागीरदारों के गुणग्राह्यता के वशीभूत होकर उत्तरप्रदेश के अतरोली नामक स्थान से कई प्रसिद्ध संगीतज्ञ आकर यहाँ बस गये थे। जिनमें हैदर खाँ, दुल्लू खाँ, छज्जू खाँ, करीमबख्श, खैराती खाँ, जहाँगीर खाँ आदि उल्लेखनीय हैं।
- प्रसिद्ध अलादिया खाँ भी यहीं रहे थे तथा राधाकृष्ण ने अपने ग्रंथ रागरत्नाकर की रचना भी यहीं की थी।

अन्य घराने-

- सेनिया घराना यह सितार वादन का प्रसिद्ध घराना था। इसके प्रमुख वादकों में सुखसेन, अमृत सेन, नियामत सेन, कायम सेन, लालसेन प्रमुख थे।
- बीनकार घराना: इसके प्रवर्तक राजस्थान में रज्जब अली खाँ बीनकार थे। इसके प्रमुख वादकों में सांवल खाँ, मुशर्रफ खाँ, सादिक अली खाँ प्रमुख थे।
- जयपुर घराना: इसके प्रथम प्रवर्तक भानूजी थे। जयपुर घराना कथक नृत्य शैली का आदिम घराना माना जाता है। इसके वरिष्ठ नृत्याचार्य पंडित गौरीशंकर जी थे।

क्र. सं.	घराने	प्रवर्तक	विशेष
1	अतरोली घराना	साहब खाँ	जयपुर घराने की उपशाखा मानतोल खाँ (रुलाने वाले फकीर) इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे।
2	ग्वालियर घराना	अब्दुल्ला खाँ व कादिबख्श खाँ	इसको प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय हस्सू खाँ को है।
3	किराना घराना	बन्दे अली खाँ	गंगूबाई हंगल, रोशन आरा बेगम, उस्ताद रज्जब अली, पं. भीमसेन जोशी प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे।
4	अल्लादिया घराना	अल्लादिया खाँ	किशोरी अमोनकर इसकी प्रसिद्ध गायिका हैं।
5	रंगीला घराना	रमजान खाँ मियां रंगीले	
6	दिल्ली घराना	सदारंग (नियामत खाँ)	

जयपुर घराने के कत्थक की विशेषताएँ -

1. थाट
2. आमद
3. गणेश वंदना
4. चोक भरना
5. पद संचालन
6. चमत्कार प्रदर्शन
7. पैरों से बोलो की शुद्ध निकासी
8. क्लिष्टता
9. कविता के साथ भावों का सफलतापूर्वक प्रदर्शन
10. पौराणिक कथाओं का प्रस्तुतीकरण
11. वीर, रौद्र व शांत रसों का मुख्य रूप से प्रदर्शन

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित युग्मों को सुमेलित कीजिए–

गीत		क्षेत्र	
A.	**घुड़ला**	**1.**	**मारवाड़**
B.	**मूमल**	**2.**	**मेवात**
C.	**बिछुड़ो**	**3.**	**जैसलमेर**
D.	**हिचकी**	**4.**	**हाड़ौती**

कूट:-

(a) A-1, B-3, C-4, D-2 (b) A-1, B-2, C-3, D-4
(c) A-4, B-3, C-2, D-1 (d) A-2, B-4, C-1, D-3 **[a]**

2. निम्नलिखित लोकगीतों में से कौन से विवाह के अवसर पर गाए जाते हैं?

(i) जला (ii) परणेत
(iii) गोरबन्द (iv) सीठणे

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही विकल्प चुनिए :

(a) (i), (ii), (iii)
(b) (ii), (iv)
(c) (i), (ii), (iv)
(d) (i), (ii), (iii), (iv) **[c]**

3. निम्नलिखित में से असत्य कथन है-
(a) घुड़ला गीत – मारवाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध है।
(b) रसिया गीत- भरतपुर व धौलपुर का प्रसिद्ध है।
(c) कामण गीत - खुशी के अवसर पर गाया जाने वाला गीत।
(d) हमसीढ़ो- उत्तरी मेवाड़ के भीलों का प्रसिद्ध लोकगीत है। **[c]**

4. निम्नलिखित लोकगीतों में से कौन-से विवाह के अवसर पर गाए जाते हैं?
(i) जला (ii) परणेत (iii) गोरबन्द (iv) सीठणे
नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही विकल्प चुनिए –
(a) (i), (ii), (iii) (b) (ii), (iv)
(c) (i), (ii), (iv) (d) (i), (ii), (iii), (iv) **[c]**

5. सुमेलित नहीं है-
(a) घोड़ी गीत - वर निकासी के समय घुड़-चढ़ी रस्म के समय
(b) जच्चा गीत - परिवार में बालक के जन्म के समय
(c) जला गीत - बालक के जन्म के पश्चात् कुआं पूजन के समय
(d) रसिया गीत - होलिकोत्सव पर **[c]**

6. 'पावणा' नामक गीत गाए जाते हैं -
(a) नए दामाद को ससुराल में खाना खिलाते समय गाया जाने वाला गीत।
(b) जैसलमेर में गाया जाने वाला शृंगारिक लोकगीत।
(c) यह किसानों का प्रेरक गीत है जो खेती करते समय गाया जाता है।
(d) विरहिणी द्वारा गाया जाने वाला गीत। **[a]**

7. राजस्थान के लोकगीतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
I. 'मोरिया' गीत ऐसी बालिका द्वारा गाया जाता है जिसका विवाह तय हो चुका है और वह विवाह की प्रतीक्षा में है।
II. 'जला' गीत पुत्र जन्मोत्सव पर गाए जाने वाले सामूहिक मंगल गीत हैं, जिन्हें 'होलर' भी कहा जाता है।
III. 'सीठणे' विवाह के अवसर पर हँसी-ठिठोली के लिए गाए जाने वाले 'गाली' गीत हैं।
कूट:-
(a) केवल I और II सत्य हैं। (b) केवल II और III सत्य हैं।
(c) केवल I और III सत्य हैं। (d) I, II और III तीनों सत्य हैं। **[c]**

8. प्रमुख संगीत घराने एवं उनके प्रमुख कलाकार में से असंगत छाँटिए-
(a) किराना घराना - पं. भीमसेन जोशी
(b) अतरौली घराना - मानतौल खाँ
(c) मेवाती घराना - पं. जसराज
(d) रंगीला घराना - अमृत सेन **[d]**

9. राजस्थान के विरह एवं अन्य लोकगीतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'मलजी' सिरोही क्षेत्र का प्रसिद्ध विरह गीत है।
II. शेखावाटी प्रदेश में वर्षा ऋतु के आगमन पर 'बादली' गीत गाया जाता है।
III. 'कुरजाँ' गीत में विरहिणी पक्षी के माध्यम से अपने प्रियतम को संदेश भेजती है।
कूट (Code):
(a) केवल I और II सत्य हैं। (b) केवल II और III सत्य हैं।
(c) केवल I और III सत्य हैं। (d) I, II और III तीनों सत्य हैं। **[c]**

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन (Assertion (A) के रूप में लिखित है और दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में।
अभिकथन-A: विवाह पश्चात् दूल्हे और दुल्हन की प्रेम की आकांक्षा बन्ना बन्नी गीतों में परिलक्षित होती है।
कारण-R: रविन्द्रनाथ टैगोर ने लोक संगीत को संस्कृति की वह कला कहा है, जो एक मनोहर और आनंददायक संदेश वाहक है।
उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(b) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
(c) A सही नहीं है लेकिन R सही है।
(d) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है। **[a]**

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -
कथन (A): चिरमी गीत में ससुराल में रह रही नववधू द्वारा अपने भाई और पिता की प्रतीक्षा की मनोदशा का वर्णन किया गया है।
कथन (B): काछबा गीत पश्चिमी राजस्थान में गाया जाने वाला प्रेम-गाथा पर आधारित लोकगीत है।
उपर्युक्त में से सत्य कथन का चयन कीजिए:
(a) केवल A सत्य है (b) केवल B सत्य है
(c) A और B दोनों सत्य हैं (d) न तो A और न ही B सत्य है **[c]**

12. राजस्थान के लोकगीतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -
कथन I: रसिया गीत मुख्य रूप से ब्रज, भरतपुर और धौलपुर क्षेत्रों में होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा गाए जाते हैं।
कथन II: शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को 'धमाल' कहा जाता है।
कथन III: 'तोरणियो' गीत दुल्हन के मामा द्वारा भात भरने की रस्म के समय गाया जाने वाला एक भावनात्मक गीत है।
कथन IV: 'बधवा' गीत किसी भी शुभ या मांगलिक कार्य के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर खुशी और मंगलकामना हेतु गाया जाता है।
उपर्युक्त में से सत्य कथनों का चयन कूट के आधार पर कीजिए–
(a) केवल I, II और III सत्य हैं
(b) केवल I, II और IV सत्य हैं
(c) केवल II, III और IV सत्य हैं
(d) I, II, III और IV सभी सत्य हैं **[b]**

13. राजस्थान के लोकगीतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -
कथन I: 'हमसीढ़ो' मेवाड़ क्षेत्र में भील स्त्री-पुरुषों द्वारा सामूहिक रूप से गाया जाने वाला एक युगल गीत है।
कथन II: 'पटेल्या', 'लालर' और 'बिछियों' जैसे गीत पर्वतीय क्षेत्रों (आदिवासी अंचल) में गाए जाने वाले प्रमुख लोकगीत हैं।
कथन III: 'कामण' गीत विवाह के समय वर को जादू-टोने से बचाने के लिए गाया जाता है।
कथन IV: 'ओल्यूं' गीत केवल खुशी के अवसर पर गाया जाने वाला एक शृंगारिक गीत है।
उपर्युक्त में से सत्य कथनों का चयन कूट के आधार पर कीजिए–
(a) केवल I, II और III सत्य हैं
(b) केवल II और III सत्य हैं
(c) केवल I और IV सत्य हैं
(d) I, II, III और IV सभी सत्य हैं **[a]**

♦♦♦♦